

ٱلْحَمُدُ لِلْهِ رَبِّ الْعَلَمِينَ وَ الصَّلُوهُ وَالسَّلَامُ عَلَى مَتِدِ المُوْمَلِينَ امَّا بَعُدُ فَاعُودُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّجِيْمِ * بِسُمِ اللَّهِ الرَّحَمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

کتاب پڑھنے کی دعا

سَيْطٍ يَمْنَا عَلِيَالَتَ بَانَدُ عَنْ مِلِيَالِهِ مَعَنَّى لَا مُعَلِّنَا الْحِيلِالَ الْمُعَلِّنَا الْحِيلال كَيْرَالْهِالْمِعْ مَعْلَالًا فَالْحَكَانَ مَعْنَى مَعْنَى الْمُعَلِّنَا الْحِيلالَ عَلَيْنَا اللَّهِ اللَّهِ

ویٰ کتاب یا اسلامی سبق پڑھنے ہے بل ذیل میں دی ہوئی دعا پڑھ لیجے اِن شَآءَ اللّٰهُ عَرَّمَاً جو کچھ پڑھیں گے یا درہے گا۔ دعا یہ ہے: اَللّٰهُمَّ اَفْتَحَ عَلَيْنَا حِكُمَتَكَ وَانْشُرُ عَلَيْنَا

هم المعلى عليه والمسلسود والمسرودية رُحُمَتُك يَا ذَ الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ («مانْ طَاءَرُهُ)

> نوت: اوّل آخراك ايك باردرودشريف بره ليخ -والسّلاو مع الاكراد

د درام مدینه ع بقیع بقیع و (ملای) مدفرت مدفرت

٣ أكثوال المكرم ١٤٢٨ ٥

ملفوظات اعلى حضرت (حصداؤل)

اعلیٰ حضرت مجدِّدِ دین وملّت الشاہ مولا نااحمد رضا خان علید رمۃ ارحن کے إرشا دات کا مجموعہ

﴿ مع تخر تئ وتسبيل ﴾ D.1881

شهزادة اعليحضرت تاجدار اهلسنت مفتئ اعظمر هنك حضرت علامهمولا نامحم مصطفط رضاخان الدروارس

> ييش كش مجلس المسنة العلمية (دوت الال) (شعبه كُتُب أعلَى حضوت رحا لله على على)

> > ناشر

مكتبة المدينه باب المدينه كراج

بسُم اللهِ الرَّحَمٰنِ الرَّحِيْمِ ط ينام كتاب: شعبرُ كُسُ اعلى حغرت دوالشعد (ٱلْمَد مُنَةُ الْعِلْمِية) پیش کش: ع جمادي الأخرى ١٤٢٩ ٥، وجون 2008، مَكْتَبَةُ الْمَدينِهِ بابالدين (كراجي) مكتبة المدينه كي مختلف شاخ مكتبة المدينة شهيدم حدكهارا درياب المدينة كراحي مكتبة المدينة دريار ماركيث تنج بخش رودُ مركز الاولياءلا مور مكتبة المدينةاصغرمال روذ نز دعيدگاه ، راولينڈي مكتبة المدينة امين يوربازار، مردارآ باد (فيصل آباد) مكتبة المدينة نزديبيل واليام حداندرون بوبثر كيث مدينة الاولياءملتان مكتبة المدينه فيضان مدينة فندى ثاؤن حيررآباد مكتبة المدينه جوك شهيدال مير يوركشمير E.mail:ilmia26@yahoo.com E.mail.maktaba@dawateislami.net www.dawateislami.net Ph:4921389-90-91 Ext:1268 👓 🕉 مطس المدينة العلمية (الجراسات

| | 3 | | ~~~ | ملفوظات ِ اعلیٰ حضرت (حصدادّ ل) | | | |
|-------------|--|---|-----------------|---|--|--|--|
| 3 | فهرست | | | | | | |
| | مؤنبر | عنوان | مغنبر | عنوان | | | |
| 3 | 74 | تاریخ کی ابتداء وانتهاء کے 4 طریقے | 11 | پہلےاے پڑھ لیجئے | | | |
| 3 | 74 | كيا كائے كا كوشت صحت كے لئے نقصان ده ب؟ | 13 | ا تذکرهٔ امام احدرضا | | | |
| 3 | 76 | مصیبت زوہ کود مکھ کر پڑھی جانے والی | 26 | منقبت براعلیٰ حضرت امنقبت براعلیٰ حضرت | | | |
| 3 | ŀ | دُعا کی بر ^{کنت} یں | , | لتعارُف مِؤلف | | | |
| 3 | 81 | طاعون كأسبب | | المفوطات كى انميت المعادمات كى انميت | | | |
| 3 | 82 | بیل کے گوشت میں گندھک کی یُو | ll . | الملفوظ اورالمدينة العلمية (وثوت إسلام) | | | |
| 3 | 83 | ٹُوآ گ میں ہے | | ا نطبه صبهُ اوّل ا | | | |
| 3 | 84 | بچوں کے نام کیے ہونے چاہئیں؟ | | مقدمةُ الكتابِ | | | |
| 3 | 84 | نامِ''محمر''کے نضائل ِ | 1 | اب ہے پہلے کس چیز کو پیدا کیا گیا؟ | | | |
| 3 | 85 | چوتاً پہن کرنماز پڑھنا کیسا؟ بنائی | 60 | باطِنی علم کااد تی درجه | | | |
| 3 | 85 | تعظیم وتو ہین کا دار و مدار ن _{گر} ف پر ہے | 61 | غیرِ عالِم کو وعظ کہنا حرام ہے | | | |
| 3 | 86 | ٹرین میں بیٹھ کرنماز پڑھنا کیسا؟ | н | عالم كون؟ | | | |
| 3 | 86 | ٹرین می ں نماز پڑھنے کا طریقہ | 61 | كاعلم مرف كمايس يزهنے عاصل موتا ب؟ | | | |
| 3 | 88 | نمازون كاإياده | 62 | الحَابَد ب كي لئے لئي مُدّ ت دركار ب؟ | | | |
| 3 | 88 | نماز میں مصلّی ٹیڑھا ہونے کا حکم _ | 63 | و یی خدمت بھی مجاہدہ ہے | | | |
| 3 | 89 | باريك كيرون مين عورت كي نماز كاحكم | 63 | ونیاوی فکروں کا قلب جاری پراٹر | | | |
| 3 | . 90 | كيا بي كريم عليه الصلوة والتسليم كوعكم غيب تفا؟ | 64 | سفر کون سے دن کرنا جائے؟ | | | |
| 3 | 97 | ظهر کاوفت کب تک رہتا ہے؟ | 64 | سيدناصديق اكبره والمنظف كاعرين اسلام تبول كيا؟ | | | |
| 3 | 97 | گرمیوں میں ظہر کامتحب وقت کونیا ہے؟ | 64 | قول اسلام سے بہلے سید اصدیق اکبرہ باکا ذہب | | | |
| | 98 | دومثل ہے پہلے نماز عصر پڑھنے کا حکم | 67 ⁻ | وهونی اورطوا نف کے ہاں کھانا کھانا کیسا؟ | | | |
| | 99 | اختلافی مسائل کا حکم | 68 | الكمي جرف والدوره برصاعت كالحكم | | | |
| 8 | 100 | زوال کے وقت جمعہ ادا کرنا کیسا؟ | 69 | ار کوع و جود می تفہر نے کی مقدار | | | |
| 8 | 100 | ایک اشکال اوراس کاجواب | 69 | کیا ہر مکن چیز پیدا ہو چک ہے؟ | | | |
| 8 | 101 | پانی اللہ تعالی کی نعت ہے | 69 | جن د بری کامسلمان ہونا | | | |
| ğ | 102 | مے کے پانی کی کیابات ہے | 70 | ایر کے دصال کے بعد کسی اور سے بیعت ہونا کیما؟ سر | | | |
| 뜅 | 103 | كهانے پینے كے لئے اعتكاف كرناكيما؟ | 70 | مرید ہونااس ہے تکھو | | | |
| 81 | 103 | ایک شعرگی وضاحت اوراس کا شرعی حکم | 71 | ا محائے کی قربائی | | | |
| 8I | 108 | نری ہے سمجھانے کے فوائد | 73 | المجمع بي كما سے جماع كين مموع ہے؟ | | | |
| 뗈 | | | | | | | |
| \propto | مرس مجس المدينة العلمية (الرجالال) مجس المدينة العلمية العلمية المدينة المدينة العلمية العلمية المدينة العلمية العلمية المدينة العلمية | | | | | | |

| _ | | 4 | l | | ~~~ | نعدادّل) | اعلیٰ حضرت(< | ملفوظات | തി |
|-----|-------------|------------|-----------------------------|--------------------------------------|-------|---------------|--|----------------------------------|------|
| | سان مؤثر | · · | ىىيى <u>ىيى</u> ىغوان | 1 | موتبر | | عنوان | | 188 |
| 8 | 143 | | | وه يُؤرك كون يَّ | 109 | | ، ما تكنے والانتخص | زنا کی اجازت | 8 |
| 8 | 144 | | | سنت تبليه كاتضا: | | | | قرض دبالينا | |
| 8 | 144 | | نا ہے | امام كي تقليد ضرور أ | 110 | 982 | د کی شفاع <i>ت کر</i> . | حافظ كتنےافرا | ଞ |
| ğ | 144 | | | زيارت سركار 🛬 | | | ي كانام اقدى | مرکارِمد بند 🗺 | 18 |
| 8 | 145 | اكيبا؟ | حوالے طلب کر: | سائل کا کتب کے | | | وراس کے صبیب میں | | |
| 8 | 146 | | ن کیاجائے؟ | استغاثة كسون فبأ | 114 | كودينا كيسا؟ | رذع کئے بغیر کسی | صدقے کا جانو | 18 |
| 8 | 146 | تکم | نظ بدل جانے کا ^ت | نماز میں قرا ن کالا | 114 | عا کھتے ہیں؟ | وعقيقه كالكوشت | كبيانا نانى وغير | 18 |
| ğ | 147 | ھنے کا تھم | يبسم الله يڑھ | نماز میں بلندآ واز بہ | 115 | | ناح کرنا کیسا؟ | محرم وصفر ميس زأ | |
| 阁 | | | | ايك متجد كأسامان دوم | | | | ربيبه كانكاح | ലത |
| 8 | | | | متجد كاجِنده كھاجا. | | _ | کاح کرنا کیسا؟ | | ΠЖ |
| 8 | 148 | عم | قبرتيار كردان كأ | ا پی زندگی میں ہی | 115 | | کاح پڑھانے وا | | |
| B | | | | اخطے ہے پہلے ۔۔ | | - | والى عوريت كانال | • - | വത |
| Iğl | | | | عمام يحساته | | | اح کا حکم | | |
| 8 | | 1 . | - | بخارك فكرائے من نوا | | قائم كرنا* | ليتے وقت گواہ | | |
| 闂 | 150 | ور تھے؟ | | خلفائے راشدین کے ز | | | | وولبها كأسهرا | 118 |
| ğ | 152 | ļ | | وبإبياكي علامتين | | | | کیمدستت ہے | |
| Iğ | 153 | ļ | • | حُستَاخِ رسول | | | ولیمه کرنا کیسا؟ · | | |
| 8 | 154 | | إسخاوت | مركادِ مرينہ ننڪ ك | | | ونکاخ حرام ہے | | |
| 18 | 155 | | | نمازی کائل دوا | 120 | | | .ضاعت کاایک | |
| 18 | 156 | | _ | تعظيم رسول 📸 | 121 | يكملى فداكره) | ، کہنا جا ہے؟(ا | کیا سی کو براهبیر | |
| 18 | 157 | ! !! | | قربانی کی کھال مرا | | | ع بي | نہت کی جگہ۔ | |
| 18 | 157 | | _ | ئيلهُ شرعی کا طریقه | II . | 1 | | ستتاسودا | 110 |
| 3 | 158 | 1 | | ورانِ سفر قرانِ بإ | | | كرستني | صدتُ الؤبُو دِ _َ مدت الأبو | -118 |
| Ę | 15 | 1 | | لصر كانكر ده وتت كون | | | اع ا ـ م | رجاه تُو ہی تُو . لا پر ہیں ۔ | |
| Ę | 15! | | | مازيس قراءت كاأ | | | فاليمس طرح بودكا | | |
| 1 | 16 | | | خنانمازیںاداکر۔ نسانمازیں | | | schol ti | ظیم حق ملح ک نامه | |
| 1 | 16 | 1 | | يەت صاف منزل آء ئىلىرىدىن كىلى | Ш | نې ا | حاوضہ لیٹانا جائر فراردینا کفر ہے | س مردائے ہ شہ ہدکہا واجع | |
| | 16 16 | - 1 | يصال واب نره | ئولوںاور ملائکہ کوا! وینے کی ہارش | - 11 | | ئراردینا تقرہے ،واجبہوگا؟ | | |
| Ī | BII | - 1 | ن به روز در م | | Ш | 1 | | م ۵ تقارہ ترب ملطنت بخاراکا | |
| 1 | ᄊ | | | بت دافلاس کی شکایت کر | | | 2/ Joan 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 | ` _ | |

Marfat.com

| l cc | 4 | 5 | | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | 000000 | (حصداة ل) | وظات إعلى حضرت | # F |
|------|-------|---------|----------------------|---|--------|----------------------------|---|----------------|
| | مؤنبر | | ه ا ن | ie. | مؤنير | | عنوان | |
| 8 | 180 | | لى حكايت | نگڑ ہے اور اندیجے | 163 | |) دُور كرنے كا وظيفه | ار يثار |
| ğ | 181 | بن؟ | روحیں ہوتی | برایک کےساتھ کتنی | 163 | | بس بركت كاوظيفه | ارزن: |
| 8 | 181 | ب تو | ے کی ہڑیاں ملیر ا | نبرکھود نے پرمُر د <u>۔</u> | 164 | | مرکس نے بنائے؟ | |
| ğ | 182 | إكبيره؟ | | ازهمى منذوا نااور كتروانا | | • • • • | انی کون؟ | آ دم څا |
| 8 | 182 | | بى؟ | نؤى نولىي كيسے سيكھي | 11 | | بنوح عليهالصلؤة والسلا | |
| ğ | 184 | | | عالی بیالبہ | | _{ا پر} بج فرض تھا | بالجليهم الصلؤة والسلام | كياانبر |
| ğ | 185 | | ہو گئے | فلامت علم سےمحروم | | | ِرغُرُ ور مِس کیا فرق۔ | غرٌ وراه |
| 8 | 186 | | | ٹا گردگی عاجزی | II . | i . | | إزناكا |
| ğ | 187 | | . . | | | ے زنا کا ثبوت ہوا؟ | رسالت میں گوای ہے | |
| 8 | 187 | و | نے والاشا کر | ستاذ کے قدم دُ ھلا ا | | ' | زاہے پاک ہونا | اشرعی |
| ğ | 188 | | | لم کی عزت | | |) میں قبل ہونے والے | |
| 8 | 188 | | 1 | لمائے کرام کا احترا | 11 | 1 ' | ب کی نمازِ جنازہ پڑھ <u>ے</u> | |
| ğ | 189 | | ſ | ىسائىيكا بى <u>ئا</u> سائىيكا بىيا | | | وزكر خطبه بإهناخلافه | - 11 |
| 8 | 190 | | بی | مجدے میں قر ب ^ا | 170 | | کے مامے ہے کزر۔ | l II |
| ğ | 190 | | | مجدہ شکر مسنون ہے مجمد مشکر مسنون ہے | . II | | وٹاوعوٰ ک کرنے والے ہے میج م | - 11 |
| 8 | 190 | | | منتاخ رسول كاانجا | | | بھوڑنے کی شرط پرمبا ^د | |
| 8 | 192 | | | سجد میں کیڑے سینا ۔ | II . | | اہات چیت کے فوائد ر | |
| 8 | 192 | ريقه | نا لھائے کاظ | بقت کےمطابق کھا مقدمہ شد | 11 | , | ں سے واپسی پرمصافحہ ا | |
| 8 | 193 | ٠, , | 57. <i>-</i> | اتحه کا تواب | 11 | | لرنے کا طریقہ | - 11 |
| ğ | 194 | | | رُان پاک کو 30 پارور | | | ئے بعد مصافحہ کرنا کیسا' | - 11 |
| 8 | 194 | ' | | حزاب واعشاركا آ | | l ' | یں روضۂ انور کی طرف م | |
| 8 | 195 | | | گانے والوں پرلعنت سرمد | 175 | | یره اورمغیره میں فرق | |
| 8 | 196 | | • | کا کی کے معنی ما | | | ورتش غیرمحرم کے ہار کام انسان | ا بوی د میا |
| 8 | 196 | N | رے والا مجھو | على بهوني روتى اور كيم | | | موسلمان کرنے کا طر مرسلمان کرنے کا طر | |
| ğ | 197 | | • | نوفز ده با دشاه گرئ | | | ا کاعلاج ایزن بریکا | |
| 8 | 199 | | | م هر | 177 | 1 | ، کئے نماز وروز و کا ظم ۴ . و مردرت | |
| ğ | 201 | | ا کے اداب | زادمُر جِد برحاضرِک | 178 | | شریف کامتعید کاک نوز است | |
| 8 | 201 | | ٠. | سادب مزارگی تا کید رکف | | .، کی | لک کی فغیلت معرکے کی اور وزار | 12 |
| 8 | 201 | | • | یا حن رر کف رسه | 179 | بيارد يمنا ا | ، میں کسی کو بعد و فات اثراب کی کنتر | . 10 |
| | 202 | | رو ب <u>ا</u> | را کد کفن دالیس د ہے دردیہ | 41 1 | ر م | پاتواب کی برکتیں درجہ میں جس | 184 |
| 闣 | 202 | ر.کا | | | 180 | ا کی | روح پر نہوتا ہے یا جس | اعراب |
| 队 | 203 | | | بتنعالی کے لئے مؤنر | | | *********************** | |

| ~ | | 6 | mm | ملفوظات اعلى حضرت (حصداول) |
|-----|--------|--|-------|---|
| 8 | مؤنبر | | مؤنبر | عنوان |
| 8 | 226 | دشمنِ احمدِيدهذت سيحِيَّ دشمنِ احمدِيدهذت سيحِيَّ | | اُز عاكرتے وقت ہاتھ ڈھانپ کرد كھناكيسا؟ |
| 8 | 228 | کیاستر دیکھنے ہے دضوجا نار ہتاہے؟ | 204 | 8 زُما کی قبولیت ﴿ |
| ğ | 228 | وحدة الوجود کے کہتے ہیں؟ | 204 | ا اصب اوّل مین نمازیز صنے کا ثواب |
| 8 | 228 | ا ساعیل دہلوی کوکیسائنجھنا جا ہے؟ | 205 | 8 نفرانی طبیب مسلمان ہوگیا |
| ğ | 230 | کیا ہر کا فرملعون ہے؟ | | 🛭 مؤمن کی فراست |
| ğ | 230 | الله ورسول كى محبت كييے ماصل كى جائے؟ | 206 | ھ امجاہدےکامیطلب |
| ğ | 230 | بوست كارۇ پراسم جلالت" اللّه " لكعنا كيها؟ | 207 | 🛭 سرکار 🛎 محملاتے ہیں |
| 8 | 231 | لفظِ" شہر " کس کے ساتھ بولیں؟ | 207 | 🖁 نفسانی اور شیطانی خواہش میں فرق |
| 8 | 231 | الله ميال كهزا كيرا؟ | 208 | مجھے شرم آتی ہے |
| ă | 231 | يحشن ولا دِت كاجراغال | 208 | 🛭 محتندا یا تی |
| 8 | 232 | ایک ہزار قبمعیں | 209 | 8 أدود هوكا بياليه |
| ğ | 232 | تحية الوضوكي فضيليت | | ا بیاری بھی نعت ہے |
| 8 | 233 | رکوع کے بعد پائحے اوپر چڑھانے کا حکم | | ا وعاقبول ہونے میں تاخیر کا ایک سبب |
| ğ | 233 | ایک خوامب ادراس کی تعبیر | | اسرکار ﷺ ہمارے جاجت روایس |
| Iğl | 233 | ركوع كاطريقه | | المأسب كمرزى كالمستحقِّ كون؟ |
| ğ | 234 | ایک نمازی کی اِصلاحِ | 211 | فلافت راشدہ کیے کہتے ہیں؟ |
| 8 | 234 | عوَّرت كا تنباحج كوجانا كيساً؟ | 211 | الیامت کس آئے گِی؟ ﴿ |
| ğ | 235 | مِرِكَارِ ﷺ كوفداوندِ عرب كبنا كيها؟ | | ا بولی دیوالی کی مشائی کھاتا کیسا؟ اور دیوالی کی مشائی کھاتا کیسا؟ |
| 8 | 235 | جم ادر عرب کے معنی معنی | 11 1 | ا نماز میں بلغم آ جائے تو کیا کرے؟ ا |
| ğ | 235 | ولهاه الله كالكونت من متعدد جكد موجود مونا | | كا فرسائل پر ترس كھانا |
| 8 | 235 | ا یک شبهاوراس کا از اله | | الجبتِ رسول ﷺ باعثِ نجات ہے |
| ğ | 236 | ہندوستان میں اسلام کب پھیلا؟ سنتھ کر سنا | | ا دشمنانِ رسول ہے نفرت سیجئے ** |
| 18 | 236 | ایک شعر کا مطلب برون | | 8 دریا کے باراتر نے والا 8 نے نفر کی زبار کر رسور |
| ĕ | 237 | کیاعوث ہرز مانے میں ہوتا ہے؟ غربریکشنہ | | ا ہے نفس کی خاطر کوئی کا نہیں کیا ا پ کرنی دی |
| 8 | 237 | غوث کا کشف نزی میرو | | او ہا ہید کی نماز؟ گاری کے میں ہ |
| E | 238 | افراد کون میں؟ منابق میں کی شاہ | | او پابیه کی متحد؟ او پانی موّزن کی اذ ان کااعاده |
| Į | 240 | 0.00 10.00 | | |
| Ş | 240 | | | |
| R | 241 | 1 | 223 | د مال داعظ کار دوجاک ہوگیا د مال داعظ کار دوجاک ہوگیا |
| 1 | ∭ _ ′′ | عقدان ميه الرحاديات | 224 | ادبوب در خطره پرونون که دریا اعلی حضرت ادرایک نجدی کی ملاقات |
| | | | 225 | 1 |
| ľ | 300000 | 00000000000000000000000000000000000000 | | 11 1 1/2 0000000000000000000000000000000 |

الْحَمْدُيلُهِ وَتَ الْعُلَمِينَ وَالصَّالُوكُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ أمَّايَعُكُ فَأَعُوْذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطِي الرَّجَيْمِ ۗ بِسُوِ اللَّهِ الرَّحْلِي الرَّحِيْمِ ''اعلیٰ حضرت کے عرس کی تاریخ 25 صفر المظفر'' کی نبت سے اس کتاب کو پڑھنے کی " 25 از: شیخ طریقت امیر المسنّت حضرت علّامه مولانا ابو بلال **محد الیاس عطّار ق**ادری داست بریاحهم العالیه **فر مان مصطفَّىٰ** صلى الله تعالى عليه واله وسلم: **نِيَّةُ الْـمُـوْمِنِ خَيْرٌ مِّنُ عَمَلِهِ** 0 مسلمان كي نتيت اس كمل بيتر ب - (المعجم الكبير للطبزاني، الحديث: ١٤٢٥، ج٦، ص ١٨٥) وومَدَ نَى پھول: ﴿١﴾ إِخِير اچھى نت كے كى بھى عمل خير كا توابنيس ماتا _ ﴿٢﴾ جتنی اچھی پئتیں زیادہ ،اُ تنا نواب بھی زیادہ۔ ﴿ الله بربار خدود ٢ ك صلوة اور ﴿ ٣ كَ تَعَوُّ وَوَ ﴿ ٤ كُ تَسْمِيهِ ﴾ آغاز کرول گا(ای صفحہ پراُو پر دی ہوئی دوغر پی عبارات پڑھ لینے سے چاروں نتیوں پڑمل ہو جائے گا)﴿4﴾ بِضائِ اللِّي عَـزُوَجَلُ كَيلِيُّ اس كَمّابِ كااوّل تا ٱبْرُمطالّعه كروں گا﴿٢﴾ حَى الْوَثِيعُ إِسَ كَا بِاوْخُو اور ﴿٧﴾ قِبله رُومُطالَعُه كُرول كَا ﴿٨﴾ قرآني آيات اور ﴿٩﴾ أحاد يثِ مبارَك كي زيارت كرول كا﴿ ١٠﴾ جبال جبال ' السلّب " كانام پاک آئے گادہاں غے زونجے اور ﴿ اا ﴾ جہاں جہاں 'سرکار'' کا اِثْمِ مبارَک آئے گا و ہاں ملی اللہ تعالیٰ علیہ دالہ دسلم پر معوں گا ﴿١٢﴾ شرعی مسائل سیکھوں گا۔ ﴿ ١٣﴾ اگر کو ئی بات سمجھ نہ آئی تو نماکا ء سے یو چھ لوں گا ﴿ ١٣ ﴾ حضرت ِسفیان بن عُریَینہ رحمۃ اللہ تعالی علیہ کے اِس قول "عِنْدَذِ نحرِ الصَّالِبَعِينَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ" لِعِنى نيك لوگوں كے ذِكر كے وقت ر حمت نازل ہوتی ہے۔''(جلیۂ الادلیاء،رقم ۱۰۷۵،ج۷،مor) بیرعمل کرتے ہوئے ذ^ک

صالحین کی بَرَ مُتیں لُوٹوں گا﴿18﴾ (ایے ذاتی کننج پر)عِندَ الفَّر ورت خاص خاص مقامات برانڈرلائن کرو**ں گا﴿١٦﴾** (اپنے ذاتی کشنے پر)'' یاد داشت'' والےصفحہ بر ضر وری نکات لکھوں گا۔ کا کہ کتاب مکٹل بڑھنے کیلئے یہ نیت حصول علم و تن روزانہ چند صفحات بڑھ کر علم دین حاصل کرنے کے تواب کا حقدار اول كَا ﴿ ١٨ ﴾ دومرول كومه كمّاب يزيضة كي ترغيب دلاؤل گا ﴿ ١٩ ﴾ اس حديث باكْ تَهَا **دُوُا لَـحَابُوُا لِعِن ا**لكردر ركوتخدوة إلى مِن مجت: هر كُرُ: ` (مؤخام الكر ج م مرے مرہ ،رقم: ۱۷۳۱) مرتمل کی نیت ہے (ایک ماحب تو نیل تعداد میں) یہ کتا ہیں خرید کر د دسر ول کوتخفة دول گا ﴿ ٢٠ ﴾ جن کورُ ول گاختی الامکان انبیس بیدهد ف بھی دول گا کہ آپ اتنے دن (شلا 25)دن کے اندر اندر کمل پڑھ لیجئے ﴿۲۱﴾اس کماب کے مطائغه کا ثواب ساری اُسّت کوایصال کروں گا۔ ﴿ ۲۲ ﴾ کتابت وغیرہ میں شُرع عَلْطی ا لمي تو نا شر بن كوتح بري طور پُرمُطَلع كرول گا(ناشِر بن دمصنف وغيره كوكتا بول كي أخلاط مِز ف زبانی بناناهام مفیرنبین ہوتا) ﴿ ٣٣ ﴾ ہرسال ایک بارید کتاب پوری پڑھا كرول كا ﴿ ٢٣ ﴾ جزمين جائة أنبيل سِكها وَل كا ﴿ ٢٥ ﴾ مشارح كرام رجعه ألله الشادع كتقش قدم يرجلني كوشش كرون كارإن شآء الله عزوجل ا جهی انجی تقول سے متعلق رہنمائی کیلئے ، ایم المسنت داست را کہ العالم کا

ا کھی ایسی تقول سے محلق رہنمانی کیلے ، ایم والسنت دات یکا ہم العالیکا سنوں جرابیان مخیت کا مچل 'اور نیوں سے معلق آپ ئے مُرخب کردہ کارڈ اور پم فلٹ مکتبة المدينه کی کمی جم شاخ سے حدیثہ طلب فرائے۔

ملفوظات ِاعلیٰ حضرت (حصدادّل)

S

ٱڵ۫ٛٛٛٛڡؙٙۘۿۮۑڵۨۼۯؾؚٵڷۼڵڡؚؽڹٙۊاڵڞۧڵٷۘٷۘٳڵۺۜڵۘٲۿؙۼڮڛٙؾۣۑٵڷۿۯٚڛٙڸؽڹ ٱمّابَعۡۮؙۏؘٲۼۅؙۮؙؠۣٵٮڵ۠ۼؚڡؚڹٵڵۺۧؽڟؚڹٵڵڒۧڿؠ۫ڃڔ۫ ڣ۪ۺۘڃؚٳٮڵۼٳڶڒۧڂؠ۠ڹٳٳڒڿؠؙڿ

المدينة العلمية

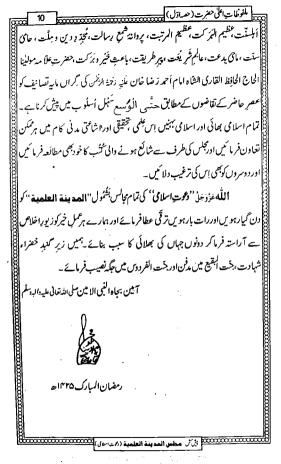
از شخِ طریقت، امیر المسنّت، عاشق اعلی حضرت، بانی دعوت اسلامی حضرت علاً مدمولانا ابو بلال محمد الیاس عظار قادری رضوی ضیائی دات برکاتهم العالیه

الحمد لله على إحسانه و بِفَصُلِ رَسُولِهِ صلى الله نعالى عله وسلم على وسلم على وسلم على والله على والله على والله على والله على الله والله على الله والله على والله على الله والله والله

(۵)شعبهٔ تراجم کُتُب (۱) شعبهٔ تخ تخ

" السمدينة العلمية" كالولين رجي مركار الملحضر تإمام

🎞 📆 📆 مطس المدينة العلمية (٨جاسان)



ملفوظات اعلی حضرت (حصداته) بہلےاسے پڑھ کیجئے البحبيد للله غياز جَا تبليغ قران دسنت كي عالمكيرغيرساي تح يك **دعوت اسلامی** كادارك اكم دينه العلمية "كادم تحرير 117 سزا كركت (بشمول مختصر رسائل) **مكتبة المحدينة سے**شائع ہو كرعلاء دعوام سے دارتحسين يا چكى ہيں۔ ان ميں اعلیٰ حضرت امام اہلِسنّت مجد دِدين وملت حضرت علاّ مهموليٰنا الحاج الحافظ القاري الشّاه أمام أحمد رَضا خان مليه رحمة الرحن كي 8 عر بي كتب اور 12 أردُ و كُتُب (مع حاشیه تسهیل اورتخ یج) بھی شامل ہیں۔ اب اعلی حضرت عليدورة رب اوزت ك إرشادات ير مشتمل تاليف والمملفوظ ہ ہمعروف یہ'' **ملفوظات ِاعلیٰ حضرت** علیہ حمۃ ربّ احرّ ت' تشہیل ویخر ت^ج اور حواثی *کے س*اتھ پیش کی جارہی ہے۔اس کتاب برکام شروع کرنے کا سبب سے طریقت امیر اہلست انی وعوت اسلامی حضرت علامه مولانا ابوبلال محمد الباس عطّار قادری داست براتم العالیه کا (بزریدای میل (E.mail) بیجاگیا) آیک مکتوب بناجس مین آب دامت برکاتم العالیان عقیدت إكلى حصرت رحة الدتعالى عليد مين دولي جوكى خوابش كا اظهار اس طرح فرمايا "ول مين أيك خواہش میم چنگیاں لے رہی ہے کہ کاش ملفوظات (اعلی حضرت علید حمة رب اوز ت کاس خزانه کا جواب کی تخ ت و تسهیل کی بھی ترکیب ہوجائے۔" اے رضا ہر کام کااک وقت ہے ول کو بھی آرام ہونی جائے گا 🚥 مِنْ صُ مطس المدينة العلمية (رئرت الال)

إ**س** كتاب **بي البير المِسنّت** دامت بركاتهم العاليه كي قلبي وابسّتكي كا انداز واس مايت الكايا جاسكات كرآب نے بيرون ملك سے خصوصى طور ير مفوطات اعلى حصرت "كا نسخەالمدىنة العلمية (دوت اسلام) كى لائبرىرى كے لئے استحرىر كے ساتھ وقف فريايا: سهونته برحش ۱ د حرسده ب کتاب الدوسنط العلب والعصريباء إس كتاب كافواب ب کاره سشایا بوستان عطا کرک پیوس بای ابد ماندان وابستكان أمد برستى سنا كو بهيغا والبودي والبن الايين ملعد تنالأعد وأبيكل نزیل دومیں ے اندریسیہ **اعلیٰ حضرت ،امام اہلسنّت ،مجد دِد ین وملت الشّاہ مولا نااحمد رضا خان علیہ حمۃ ا**رمنن کے عطا کردہ اِن مَدَ نی **پھولوں** کواہنے دل کے مَدَ نی **گلہ سن**ے میں بجایے اور دیگر اسلامی بھائیوں کومطالعہ کی ترغیب دے کراینے اَطراف کوبھی مبکایئے ۔ **اَلْلَٰہ تَعَالٰی** ے دعا ہے کہ ہمیں'' اپنی اور ساری دنیا کے لوگوں کی اِصلاح کی کوشش'' کرنے کے كَ مُدَى انعامات رِعمل اورتدني قابِقُون كاسافرينة ريني كاوني عطافرات اورد عوت اسلامي كي تمام بالس بشمول مبجه السعب **المهدينة العلمية** كودن بحیسوس رات چھبیسویں ترقی عطافر مائے۔

ا بين بجاه النبي الايين ملى الشقال عليه الدولم شعبه كتب اعلى حصرت رحمة الله تعالى عليه (**مجلس المعدينية العلميية** المحمد عدى الأعرى ١٤٢٩ مع مطالق 9 جن 2008 م

🚥 تراكر محلس المدينة العلمية (٨ تراءاول)

ملفوظات ِاعلیٰ حضرت (حصداوّل)

13

ٱڵڂۘمؙۮۑٮٚ۠ۼۯؾؚٵڵۼڵؠؽڹؘۏٳڶڞٙڵۊ؆ؙۘۅٵڵۺۜٙڵٲؙؙٛؗڡؙڬؽڛٙؾۑٵڵۘڡؙۯڛٙڸؽؘ ٲڡۜٚٲڹۼؙۮؙۏؘٲۼٛۅؙۮؙۑؚٲٮڵ۫ۼؚڡؚڹٵڶۺۧؽڟڹٵڵڗۧڿؠؙؿڔؚ۠ڽۺۅٳٮڵۼٳڶڒۧڿؠ۠ڹؚٳ

تذكرهٔ اهام احمد رضا عليه رحمة ربِ الورى

(از: شخ طریقت امیر ابلسنّت حضرت علامه مولانا ابوبلال محمد الیاس عطار قادری رضوی داست برگاتم العالیه

هٔ فاعت کی پشارت

رَحْمَتِ عالم،نورِ مِحْمَّم، ثناهِ بني آ دم شفيعِ امُم ،رَسُولِ اکرم صَلَى الله تعالی عليه وَاله وَسَلَم كا فرمانِ شَفاعت نشان ہے:''جومجھ پر دُرُودِ پاک پڑھے گامیں اُس کی شَفاعت فرماوَں گا۔''

(القولُ البديع، ص ١١٧، دارالكتب العلمية بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللَّهُ تَعالَى عَلَى محمَّد

ولادت باسعادت

میسرے آقا اعلیٰ حضوت ، آمام آهلسنّت ، ولئ نعمت ، عظیمُ البَرَکت، عَظیمُ البَرَکت، عَظیمُ البَرَکت، عَظیمُ المسَت ، مُحَدِّدِ دِین ومِلَّت، عَظیمُ المَرَّتبت، بسروانهِ شمع رِسالت ، مُحَدِّدِ دِین ومِلَّت، باعثِ حامئی سُنت، ماجئ بدعت، عَالِم شَرِیْعَت، پیر طریقت، باعثِ خَیُروبَرَکت، حضرتِ علامه مولیٰنا الحاج الحافظ القاری الشّاه امام احمد رَضا خان عایرت الرضی ولادت باسعادت بر یلی شریف کُوکَدِّ جُول میں احمد رَضا خان عایرت الرضی ولادت باسعادت بر یلی شریف کُوکَدِّ جُول میں استوال الله مُحَدِّم ۲۷۲ هروز بفته بوقتِ ظهرمطائِق ۱۶ جون ۱۸۸۱ء و بول ۱۲۷۲ هروئی امریخی نام الله ختسار (۱۲۷۲ه می موئی سِیرائش کے اعتبارے آپ کا تاریخی نام الله ختسار (۱۲۷۲ه می موئی سِیرائش کے اعتبارے آپ کا تاریخی نام الله ختسار (۱۲۷۲ه می موئی سِیرائش کے اعتبارے آپ کا تاریخی نام الله خترای کا ماریک محمد کے دورائی نام سے کے دورائی نام می کریکارااورای نام سے کا نام مبارک محمد کے دورائی نام سے

و مثناق بك كارزم كزالا ولها ولا بور)

صلَّى اللَّهُ تَعالَى عَلَى محمَّد صَلُّوا عَلَى الْحَبيب!

بچین کی ایك حکایت **حضرت جناب سُیّد ابو سُعلی شاہ صاحب رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ ملہ فر ماتے ہیں کہ بجیئن** میں آ ب رمۃ اللہ تعالیٰ ملیہ کو گھر پر ایک مولوی صاحب قران مجید پڑھانے آیا کرتے تھے۔ایک روز کا ذِگر ہے کہ مولوی صاحب کسی آیت کریمہ میں بار بارایک لفظ آپ کو بتاتے تھے ۔ مگرآ پ کی زبان مبارک ہے نہیں نکلتا تھا۔وہ'' ذَرُ'' بتاتے تھے آ پ ' ذَیر'' میز ھتے تتھے یہ کیفیت آ پ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے داوا جان حضرت مولا نا رضاعلی خان صاحب رمۃ امدّتها بی ملیہ نے دیکھی حضور کواینے پاس بلایااور کلام پاک منگوا کردیکھا تو اس میں کا تب نے خلطی ہے ذَیر کی جگہ زَبر لکھ دیا تھا، یعنی جواعلیٰ حضرت رہمة اللہ تعالی ملیے کی زبان سے نکتا تھا وہ صحیح تھا۔ آ پ کے دادا نے بوجھا کہ بیٹے جس طرح مولوک صاحب پڑھاتے تھے تم اُی طرح کیوں نہیں پڑھتے تھے۔ عرض کی میں ارادہ کرتا تھا مرزبان پر قابونہ یا تا تھا۔ اِس تم کے واقعات مولوی صاحب کو بار ہا چیش آئے تھا ا یک مرتبہ تنہائی میں مولوی صاحب نے یو چھا،صا جز ادے! یچ پچ بتا دو میں کی ہے کہوں گائیں ہم انسان ہویا جن؟ آپ نے فرمایا کہ اللّه کاشکرے ہیں انسان ہی ہوں، ہاں **اللّه** کا فضل و کرم شامل حال ہے۔(حیات اعلیٰ حفرت مج امم ۱۸ ، مکتبۃ الديد، إب الديد راي) بجين مي سينهايت نيك طبيعت واقع موئ تھے-ضلُواعَلَى الْخبيب! صلَّى اللَّهُ تَعالَى عَلَى محمَّد

پہلافتو کی

میرے آ قااعلی حضرت رحة الله تعالی علیہ نے صرف تیرہ سال دس ماہ چار دن کی عمر میں آ قااعلی حضرت رحة الله تعالی علی کی عمر میں تمام مُر وَجه عُلُوم کی تحییل اپنے والدِ ماجد رئیسسُ المُمَّتَ کَلِمِین مولا نانقی علی خان علی رحة المئان سے کرکے سَئدِ فراغت حاصل کرلی۔ اُسی ون آپ نے ایک سُوال کے جواب میں پہلافتوی تحریفر مایا تھا۔ فتوی صحیح پاکر آپ کے والدِ ماجد نے مُسندِ إِنّاء اُس کے جواب میں پہلافتوی تحریفر مایا تھا۔ فتوی تحریفر ماتے رہے۔ آپ کے جہر دکر دی اور آخروفت تک فتاوی تحریفر ماتے رہے۔

(حیات اعلٰی حضرت، ج ام ۲۷۵ ، مکتبة المدینه باب المدینه کراچی)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللَّهُ تَعالَى عَلَى محمَّد

اعلی حضرت کی ریاضی دانی

الله تعالی نے آپ رحمة الله تعالی علی کو باندازه علو مِ جَلیله سے نوازاتھا۔
آپ رحمة الله تعالی علی فی میش پیچاس عکوم میں قلم اُٹھایااور قابلِ فقد رکئب تصنیف فرما کیں۔
آپ رحمة الله تعالی علی کو برفن میں کافی دسترس حاصل تھی۔ علم توقیت، (عِلم تو تی سے) میں
اِس قدر کمال حاصل تھا کہ دن کو صورج اور رات کو ستارے د مکھ کر گھڑی مِلا لیتے۔
وَقُت بِالکل صحیح ہوتا اور بھی ایک مِئ کا بھی فرق نہ ہوا۔ علم ریاضی میں آپ یگائ رُوزگار تھے۔ پُتانچ علی گڑھ یو نیورٹی کے واکس چانسلر ڈاکٹر خیا ءالدین جو کہ ریاضی میں غیر مکی ڈگر یاں اور تمغہ جات حاصل کیے ہوئے بھے آپ رحمۃ الله تعالی علی خدمت میں غیر مکی ڈگر یاں اور تمغہ جات حاصل کیے ہوئے بھے آپ رحمۃ الله تعالی علی کی خدمت میں ریاضی کا ایک مسئلہ یو چھنے آئے۔ ارشاد ہوا، فرما ہے ! اُنہوں نے کہا، وہ ایسا مسئلہ میں ریاضی کا ایک مسئلہ یو چھنے آئے۔ ارشاد ہوا، فرما ہے ! اُنہوں نے کہا، وہ ایسا مسئلہ میں بیات کا تھی حضرت رحمۃ اللہ تعالی علیہ نے فرما یا، پچھوتو فرما ہے۔ واکس چانسلر صاحب نے سوال پیش کیا تو اعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ تعالی علیہ نے اُس فرما ہے۔ واکس چانسلر صاحب نے سوال پیش کیا تو اعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ تعالی علیہ نے اُس فرما ہے۔ واکس چانسلر صاحب نے سوال پیش کیا تو اعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ تعالی علیہ نے اُس فی فرما ہے۔ واکس چانسلر صاحب نے سوال پیش کیا تو اعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ تعالی علیہ نے اُس

لمنوطًا تباعلي حضرت (حمداذل)

وقت اس کاشتی بخش جواب دے دیا۔ اُنہوں نے انتہائی جرت ہے کہا کہ میں اس مسلد کے لیے جرمن جانا چاہتا تھا اِتھا قا جارے دینیات کے پروفیسر موانا نہتیہ منگیمان اشرف صاجب نے میری راہنمائی فرمائی اور میں یہاں حاضر ہوگیا۔ یول معلوم ہوتا ہے کہ آپ ہی مسلکو کتاب میں و کیور ہے تھے۔ ذاکٹر صاجب بصدفر حت ومُسرَّت والی تشریف لے گئے اور آپ رہتہ انہ قابل مایے گشفسیت سے اِئی قدر

مُتَأَثَّهِ ہوئے کہ داڑھی رکھ لی اورصوم وصلوٰ ۃ کے مابند ہوگئے۔

(حیات اعلی حضرت، ج ایس ۴۲۸،۲۲۳ به مکتبة البدینه باب البدینهٔ کراچی)

عِلا وه ازين اعلى حصرت رحمة الله تعالى عليه علم تكسير علم بيئت علم بُطَّر وغيره مين

بھی کافی مُہارت رکھتے تھے۔

صَلُّوا عَلَى الْبَحْبِيبِ! صِلَّى اللَّهُ نَعالَى عَلَى محمَّد إ

حيرت انگيز قُوت حافظه

حصرت ابو صامد سيّد محر محدِّث بكوچهوى رمّة الله تعالى عافر مات بي كه تكميل جواب كے ليے مجرئيّات وفقه كى تلاقى ميں جولوگ تھك جات وه اللي حضرت رمة الله تعالى على كى خدمت ميں عَرض كرت اور حوالہ جات طلب كرتے تو اُسى وقت آپ فرماد سيّت كه "زُدُ السَّمُ حُسَّار "على فال سكفًى برفلا ل سَطَر ميں إلى الفاظ كے ساتھ مجرئيّة موجود ہے۔" دُورِّ مُسخت ار" كے فلا ل صفّح برفلا ل سَطر ميں عادت ہيہ ہے۔ "عالميكرى" ميں بقيد جلد وصفحہ وَسَطر بيد الفاظ موجود بيں مِع مِن مَع مِن مَعْ مِن مَعْ مِن مَعْ مِن مَعْ مِن م "مَمْمُوط" ميں ايك ايك كتاب فقد كى اصل عبارت مع صفحه وسُطر بنا ديے اور جب "مَمْمُوط" ميں ايك ايك كتاب فقد كى اصل عبارت مع صفحه وسُطر بنا ديے اور جب كتا بول ميں ديكھا جا تا تو ہى تھكھ وسَطر وعبارت ياتے جو ذَبانِ اعلى حضرت رمة الله

Marfat.com

🚥 مولس المدينة العلمية (٨ عاميان)

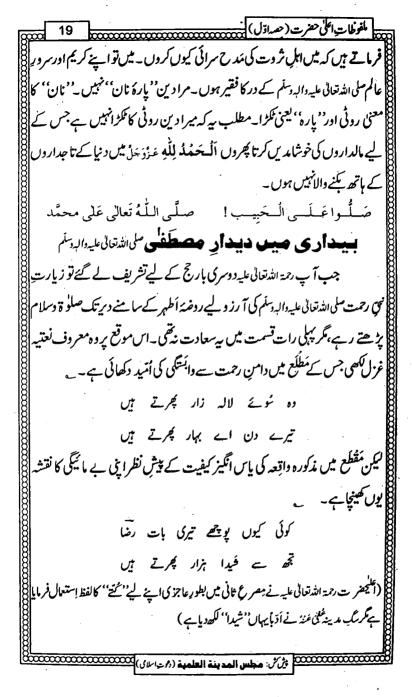
🧘 خ.: مجلس المدينة العلمية (الرجاس)

کی نوک قلم بلکہ گہر انی قلب سے نِکل ہوا ہر مِصرَ عَد آ پ کی سروَ رِعالم ملی اللہ تعالیٰ علیہ والدوسم ے بے پایاں عقیدت و مَسحَبَّت کی شہادت دیتا ہے۔ آپ رحمۃ اللہ تعالی علیہ نے بھی کس ڈنیوی تا جدار کی خوشا**ر کے لیے قصیرہ نہیں لکھا، اس لیے کہ آپ ر**حہ اللہ تعالی علیہ نے حضورتا جدا پررسالت ملی الله تعالی علیه داله وستم کی إطاعت وغلا می کودل و حان سے قبول کرلیر تھا۔اس کاا ظہار آب رمۃ اللہ تعالیٰ طیہنے اپنے ایک شعر میں اس طرح فر مایا۔ انہیں جاناانہیں مانا نہ رکھا غیرے کام لله الْحَمُد مِن دنايے مسلمان كيا حُکّام کی خوشامد سے اجتناب ا یک مرتبه ریاست نانیاره (صِلع بهرانج یویی) کے نواب کی مَدح میں شعرا نے قصا کد کھھے۔ کچھلوگوں نے آپ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ہے بھی گز ایش کی کہ حضرت آپ بھی نواب صاحب کی مَد ح میں کوئی قصیدہ لکھ دیں۔ آپ رحمۃ اللہ تعالی علیہ نے اس کے جواب میں ایک نعت شریف ککھی جس کامطلّع (غزل یا تصیدہ *کے ش*روع کا شعر جس ک دونوں مصرعوں میں قافیے ہوں وہ منطلّع کہلاتا ہے۔) مہے۔ _ وہ کمال من حضور ہے کہ گمان نقص ، جہاں نہیں یمی بھول خارہے دورہے یمی شع ہے کہ دھوال نہیں اورمَقَطَع (غزل ما قصیده کا آخری شعرجس میں شاعر کا تخلُّص ہودہ مصفَّطَ بے کہلاتا ہے۔) میں 'نانیارہ'' کی بندش کتے لطیف اشارہ میں ادا کرتے ہیں۔ كروں مدح اہل ؤ وّل رضایز ہاں بلا میں مری بلا

Marfat.com

میں گدا ہوں اینے کریم کاہر اوین'' یارۂ ٹال''نہیں

🚥 🐧 🖒 مطس المدينة العلمية (الرجابال)



ملفوظات اعلیٰ حضرت (حصداوّل) مِغَزَ لَ عُرضَ كركِ ديداركِ إنظار مِين هُواً ذَب بيٹھے ہوئے تھے كة ممت جاگ آتھی اور چشمان سرسے بیداری میں زیارت ِحَضُو رِاَقدس ملی اللہ تعالی ہا۔ الد ہلم ے مشر ف ہوئے۔ (حیات اعلی حفرت من ام ۹۲، مکتبة الدید، باب الدید کراجی) سبطنَ اللَّه مزومُل! قربان جائے ان آئکھوں پر کہ جنہوں نے عالم بیداری میںمحبوب خداصلیالله تعالی ملیه داله پهنم کا دیدار کیا۔ کیوں نه ہوآ پ رحمة الله تعالی ملیه کے اندرعشق رسول ملی انڈیقالی علیہ والہ بستم کوٹ کو میرا ہوا تھا اور آپ رمیۃ انڈیقاتی ملیہ '' فَسَنا فِي الرُّسول'' كَاعَلَىٰ منصب يرفا نُزيتھے۔آپ رمة اللَّه تابی العتبي كلام [اس أمركا شابد ہے۔ صَلُّواعَلَى الْحَبِيبِ! صلَّى اللَّهُ تَعالَى عَلَى محمَّد رستر ت کی جھلکیاں آ پ رممۃ اللہ تعالیٰ علیے فر ما یا کرتے ،اگر کو ئی میرے دل کے دونکڑے کردے تو ا یک پر کا اِللهَ إِلَّا اللَّهُ اوردوسرے بر مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰهِ سلى الله قالى عليه واليه مُعَلَمُها جوا یائے گا۔ (سوانح اہام احمد رضائص ۹۱، مکتبہ تورید رضوبہ کھر) تاحداداالسنت بشنراوه كالمجفر ت كضور مفتى اعظم صندمولينا مصطفى رضاخان ملەرمة الحنان سامان بخشش میں فرماتے ہیں۔ فدا ایک ہر ہو تو اِک ہر محمد اگر قلب اینا دو باره کروں میں

مشارم ناری نظرول میں آپ واقعی فدافی الر مسول تھے۔ اکثر فراقی مصطفع مل اللہ تعالی علیہ دالہ دملم میں ممکنین رہتے اور سرد آ میں مجرتے رہتے ۔جب چیشہ ور

T C

ملفوظات اعلى حضرت (حصاذل) گسّاخوں کی مُسّاخانہ عبارات کو دیکھتے تو آ تکھوں ہے آ نبوؤں کی جُھوءی لگ جاتی اور پہارےمصطَفْے ملی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم کی حمایت میں گتا خوں کا بخی ہے رَدِّ کرتے تا كه وه جھنجھلا كراعلىٰ حضرت رحمة الله تعالیٰ عليہ كو بُر ا كہنا اور لكھنا شروع كر ديں _ آ پ ا كثر اس پر فخر کیا کرتے کہ باری تعالیٰ نے اس دور میں مجھے ناموب رسالت مآ ب سلی اللہ تعالی علیہ دالہ وسلم کے لیے ڈھال بنایا ہے۔طریقِ استعمال پیہے کہ بدگویوں کا تختی اور تیز کلامی سے ردّ کرتا ہوں۔ کہ اس طرح وہ مجھے برا بھلا کہنے میںمصروف ہوجا کیں۔ اس وقت تک کے لیے آتا ہے دو جہاں صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم کی شان میں گتا خی سے بچر ہیں گے۔ حدائق بخشش شریف میں فرماتے ہیں۔ کردل تیرے نام یہ جال فِدا نہ بس ایک جال دو جہاں فدا دوجہاں ہے بھی نہیں جی مجرا کروں کیا کروڑوں جہاں نہیں غُرُ **باء**کوبھی خالی ہاتھ نہیں لوٹاتے تھے، ہمیشہ غریبوں کی إمداد کرتے رہتے _ بلکہ آجر ی وَقَت بَهِي عزيز وا قارِب كو وصيّت كى كه غُرْ باء كا خاص خيال ركهنا _ان كو خاطِر داري سے اچھے اچھے اور لذیذ کھانے اینے گھر سے بھلا یا کرنا اور کی غریب کومطلق نہ **ٔ جِعْرُ کنا۔ آپ رمنہ اللہ تعالی علیہ اکثر تصنیف و تالیف میں لگے رہے۔ نماز ساری عمر** با جماعت ادا کی ،آپ رحمة الله تعالی عليه کی خوراک بهت کم تقی ، اور روزانه ڈیڑھ دو گھنٹہ سے زیادہ ندسوتے۔ (حیات اعلی حضرت، جام ۲۸ مکتبہ المدید کراچی) سونے کا مُنْفَرد انداز سوتے وَ قت ہاتھ کے اُگوٹھے کوشہادت کی اُنگلی پررکھ لیتے تا کہ اُنگلیوا سے لفظ' **اللّه** ''بن جائے ۔ آپ رحمة الله تعالی علیہ پیر پھیلا کر مجھی نہ سوتے ، بلکہ دا منی 🏎 🕬 مراس المدينة العلمية (الرجوالال)

لمغوظات اعلى حفرت (حصداة ل)

22

کروٹ لیٹ کر دونوں ہاتھوں کو طا کر سر کے بیچے رکھ لیتے اور پاؤں مبازک سمیٹ لیتے۔اس طرح جم سے لفظ''محد کھنٹ'' بن جاتا۔

(حيات اعلى حفرت، ج ابص ٩٩ ، مكتبة المدينه باب المدينة كرا چي)

یہ بیں الله کے جاہبے والوں اور رسول پاک سلی الله تعالى عليه والدرستم كے

سیچ عاشِقوں کی ادا کمیں۔ ہے

نامِ فدا ب إتحد ش نامِ نبى ب ذات ش مُم فلاى ب بنى، لكم يوئ بين نام دو مَسَلُّوا عَسَلَسِ الْسَحْدِيبِ! صَلَّمِ اللَّهُ تَعَالَي عَلَى محمَّد

تُرين رُكي رهي!

اعلی حضرت روہ اللہ تعالی عابا کیا بار قبلی بھیت سے بر کی شریف بذو بھیہ آبل جارہ ہے تھے۔ رائے میں نواب بر کی کہ اس کے اس کے اس کی کی اس کے اس کی کا خواب کے اس کی اس کی اس کی کا تھا۔ آپ روہ اللہ تعالی علیا ہے ساتھوں کے ساتھ مُماز کے لیے علیہ فائر برائز ہے۔ ساتھی پر بیٹان شے کرزیل چلی جائے گی تو کیا ہوگا کیکن آپ روہ اللہ تعالی علیہ نے الحمینان سے اذان ولوا کر جماعت سے نَماز شُر وح کردی۔ اُدھر وُر اُنیورا نُجن چلا تا ہے کیکن رَبل نہیں چلتی ، اِنجن اُجمینا اور پھر پیزی پرگرتا ہے۔ فی فی اُنیون کی ساتھوں کو کی حرائی ہیں کہ کہ کہ اُنیوں کے بتایا کہ انجن میں کوئی خرابی نہیں اُنیوں کے بالیا کہ انجن میں کوئی خرابی نہیں اُنیوں کے بتایا کہ انجن میں کوئی خرابی نہیں اُنیوں کے بالیا کہ اُنیوں کیا گھر کیا ہے۔ اُنیوں کیا گھر کیا کہ ورد سے اُنیوں کیا گھر کیا گھر کر چسے بی رُفقا کے ساتھوریل میں آپ روء اللہ تین کا بارہ اور کیا تھر ایل میں آپ روء اللہ تین کا بائیوں کیا میں کہ ساتھوریل میں آپ روء اللہ تین کا بائیوں کیا کہ کہ کہ کہ کیا گھر کیا تھر ایل میں آپ روء اللہ تین کا بائیوں کیا تھر ایل میں اُنیوں کیا تھر کیا گھر کیا گھر کیا تھر کیا گھر کیا تھر کیا تھر کیا گھر کیا تھر کیا تھر کیا گھر کیا تھر کیا گھر کیا گھر کیا تھر کیا گھر کیا تھر کیا تھر کیا تھر کیا تھر کیا تھر کیا گھر کیا تھر کیا گھر کیا تھر کیا گھر کیا تھر کی تھر کیا تھر کی تھر کی تھر کیا تھر کیا ت

Marfat.com

٢٠٠٠ مجلس الحديثة العلمية (العامل)

ملفوظات اعلى حضرت (حصدالال)

نے حاشہ کھا ہے۔

ترجمه قران شريف

آ پ رمة الله قال عليه نے قران مجيد كا ترجُمه كيا جوارد و كےموجود ہ تراجم ميں ب يرفائق ب- آب رحمة الله تعالى عليه كرتم مكانام "كنزُ الايمان" ب- جسيراً ب رمة الله تعالى عليه كے خليفه صدر الا فاضل مولا ناسّير نعيم الدين مُر اد آبادي رمة الله تعالى عليه

وفات حسرت آيات

۔ اعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے اپنی وفات سے حیار ماہ بائیس دن پہلے خود [

ا ہے وصال کی خبر د ہے کرا یک آ ہتِ قرآ نی ہے سالِ وفات کا اِتنخراج فرمایا تھا۔وہ آيت مباركه پيرے: ـ

ترجمه كنزالايمان: اوران يرجائدى وَيُسطَافُ عَلَيُهِم بِالِْيَةِ مِّنُ فِضَةٍ کے برتنوں اور ٹو زوں کا ذور ہوگا۔

وَّاكُواب (ب ٢٦، الدمر:١٥)

(سواخ امام احمد رضا ،ص۳۸، مکتبه نوریه رضومیه کھر)

٢٥ صفَر الْمُ ظَفَّر ١٣٤ ه مطابق ١٩٢١ ء حُدُعَة المبارَك حكول

ہندوستان کےوقت کےمطابق2نج کر38منٹ پر عین اذان کےوقت ادھر مُسؤَفِّن ن حَيَّ عَلَى الفَلاح كهااورأوهم إمام أهلستت ولئ بعمت ، عظيمُ البركت، عظيمُ المَمرُتَبَت، بروانه شمع رسالت، مُجَدِّدِ دين ومِلَّت، حامي سُنَّت، ماحيُّ بىدعت، عالِم شَرِيُعَت، پيرطريقت، باعثِ خَيْروبَوكت، حضرتَ عَلامَه موليَّنا الحاج الحافظ القارى الشاه امام أحمد رَضا حان عليه رَحُمَةُ الرَّحُسْ فِي وَاعْمُ أَجِلُ وَلِيكَ كِها لِنَا لِلَّهِ وَإِنَّا الِلَهِ وَإِنَّا الِيَهَ وَاجعُون _

🚥 ثُنُّ مُجِلُسُ المِدِينَةِ العَلِّمِيةُ (الْحَاطِانِ)

یا الی جب رضاخواب گرال سے سراٹھائے دولت بهدار عثق مصطفٰے کا ساتھ ہو

(ماخوذ ازرساله " تذكرهٔ امام احدرضا "مطبوعه مكتبة المدينه)

ى كُن كُن مطس المدينة العلمية (١/ ټاسان)

منقبت بر اعلی حضرت عدد در استان المستخدد من المعنی منت المعنی ال

علم کا دریا ہوا ہے موجزن تحریر میں

جب قلم تُو نے اُٹھایا اے امام احمد رضا

طَلْق کو وہ فیض بخشاعلم ہے بس کیا کہوں علم کا دریا بہایا اے امام احمد رضا

اے امام البسنت! نائب شاہ بُدیٰ!

سیج ہم پر بھی سامیہ اے امام احمد رضا

فیض جاری ہی رہے گا حشر تک تیرا شہا کام ہے وہ کر دکھایا اسے امام احمد رضا

قبر پر ہو بارشِ انوارِ حق تیری سدا

ہو نبی کا تھے یہ سامیہ اے امام احمد رضا

ہے بدرگاہ ضدا عطّار عاجز کی دُعا ت

تجھ پہ ہو رحمت کا سامیہ اے امام احمد رضا

🕏 🕉 : مجلس المدينة العلمية (الرجاحال

تَعَارُف مُؤَلِّف

شنرادهٔ اعلی حضرت، مخصور مفتی اعظم مهند، علّامه مولا نامجمه مصطفی رضا خان علیه رمیة المئان که و شنرادهٔ اعلی حضرت مفتی اعظم صندعلّا مه مولا نامجم مصطفی رضا خان نوری علیه رمیة الله الباری البیخ والدِ محترم اعلی حضرت امام احمد رضا خان علیه رحمة الرحن کی دعاؤں کا مظهر بن کر۲۲ ذوالحجه

١٣١٠ه 7 جولا كي 1893 ء بروز همة السارك اس دُنيا مِن تشريف لا عـ

مرشد كى مبارك باد: جبآپرمة الله تال عليك ولادت بوكى تواعلى حضرت، عظيم

المرتبت، پرواندً تمع رسالت، مجد دِد مِن وملت الثاه امام احمد رضاخان عليه رحمة الرحن أس وقت اپنے مُر حِد خانے مِیں تقے۔ حصرت اُبوالحسین تُو رمی علیہ رحمة الله الباری نے آپ کو بیدائشِ فرزند کی مبارک باد

دی اور فرمایا '' آپ بر ملی تشریف لے جائیں۔'' کچھ دن بعد حضرت نو ری علیہ رحمۃ اللہ الباری بر ملی تشریف لائے تو شنراد و اعلیٰ حضرت کو آغوشِ نُوری میں ڈال دیا گیا۔حضرت نوری علیہ رحمۃ اللہ الباری

نے فر مایا '' یہ بچہ بڑا ہوکر دین وملت کی بڑی خدمت کرے گا اورمخلوقی خدا کواس کی ذات سے بڑا

فیض پہنچے گا۔ یہ بچہولی ہے، یہ فیض کا دریا ہے،اس کی نگاہوں سے لاکھوں گمرِاہ انسان دین حق پر [

قائم ہوں گے۔'' پھرآپ رمۃ اللہ تعالی علیہ نے اپنی انگشت مبارک (یعنی اُنگلی) مصطفی رضا خان علیہ

8 رحمة المئان كے مند ميں ركھ كرقادِ رى و بركاتى بركات سے ايسامالا مال كرديا كه يېي شنم اد سے بڑ ہے ہو 8 كرمفتى اعظم ہند ہے۔

نهام وعقیقه اور تعلیم وتربیت : حفرت محدوم سیدشاه ابوالحسین احدنوری دمه الله تعالی علیه نے "ابوالبرکات محی الدین جیلانی" نام تجویز فرمایا_" محر" نام پرعقیقه موا اور" مصطفیٰ

رضا''عرف عام قرار پایا ۔ مفتی اعظم رعمۃ اللہ تعالی علیہ کا بحیبین کا زماندا سپنے والد ماجد اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ حمۃ الرمن کے زیر سابیٹکمی ماحول میں گذر ااور انہی کی سریرسی میں تمام مر وجہ علوم و

فنون میں مہارت حاصل کی۔

يهلا فتولى حضور مفتى اعظم عليدمة الله الأكرم في بعن اين والدما جداعلى حضرت رمة الله تعالى عليه كي

المراث عبلس المدينة العلمية (الاحاسال)

ملفوطات اعلى حضرت (حصداة ل) لمرح بهلافة کیٰ رضاعت کےمسئلہ پر *لکھا۔* إصلاح کیلیے جب پ**د**ٹنو می اعلیٰ حضرت رحبة اللہ تعالیٰ ط کے سامنے پیش کیا گیا توضیح جواب لکھنے پر آپ کے والد یا جد بہت فوش ہوئے اور ''صَحَّ الْحَوَابُ بِعَوْنَ اللَّه الْعَزِيْرَ الْوَهَّابِ '' لَكُهِ كُرِد يَخْطَ ثبت فرما دِيبَ اور''ابوالبركات كم الدین جیلانی محم^{مصطف}ل رضا خان' ککھ *کرمہر بنوا کرعطا فر* مائی اور یا قاعدہ فتو ہے کی اِحازت دے دی۔ دنیائے اِسلام میں آپ رممۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے فتو وں کو قدر واحتر ام کی نگاہ ہے دیکھا جاتا ہے۔ ﴾ حق گوئی میں کوئی آپ کا ٹانی نہ تھا۔ آپ رحہ اللہ تعالی علیہ کے چند فقال کا مجموعہ ' فقال می مصطفومہ' { کے نام ہے یاک وہند میں شائع ہو چکا ہے۔ خدمت دين : حضور مفتى اعظم عليه حمة الله الأكرم في اين والدياجد كِنْقش قدم يرجل كرتم يري و تقریری طور برعظیم علمی و دین حد مات سرانجام دیں۔این زندگی کا ایک بزا حصہ درس و تدریس ، رُشد و ہدایت اور را و خداء ئے وَ جَـــالْ مِیں سفر مِیں گز ارا ۔ آپ رحمۃ انذ تعالی علیہ ہندوستان کے محوثے گوشے میں دین متین کی تبلیغ کیلئے تشریف لے گئے۔ ن من به ديوان آب رحمة الله تعالى عليك والدما جداعلى حصرت رحمة الله تعالى عليك شيرة أفاق نعتيه كلام'' حدالً بخشش'' كي طرح آپ كا نعتيه ديوان' سامان بخشش'' بهي يزھنے، سنے اور يجھنے ائے تعلق رکھتا ہے۔ و صال شريف . آپ رائد الله تعالى عليف نهايت مقدس يا كيزه اور مجر يوروم موف زندگي مبارک گزار کر 14 محرم الحرام <u>1402 ه</u>ر برطابق. 12 نومبر <u>198</u>1 ه دا کی اجل کو لبیک کہا۔ آپ کی نمازِ جنازہ اسلامیہ انٹر کالج ہر یلی شریف میں ہوئی جس میں لاکھوں مسلمانوں نے شرکت کی ۔ آپ رمنہ اللہ تعالی ملیہ کا مزار پرُ اُنوار خانقا و رضوبہ محلّہ سودا گران ہر مِلی شریف عمی اینے اُلو والد ما جدامام المسنّت اعلی حضرت رحمة الله تعالى عليه کي پيلومين زيارت کا و خاص و عام ہے۔ الير المستنت معرت علامه مولا المحرالياس عطارة ادرى واست براجم العالي فكحت بين ؟

Marfat.com

مفتی اعظم ہے بم کو بیار ہے ۔ ان شساء السلّم انہا پیڑا پار ہے (تنصیل حالات وخد مات جائے کے لئے جہان ملتی اعظم مطبوعہ رضا اکیڈی ممکن کا طلاح کیئے۔)

یمی وہ نفوس قدسیہ ہیں جن کے ذکر سے دِلوں کوفر حنت ، رُ وحوں کومُمر سا اور فکر ونظر کو بو قت (مین تیزی) ملتی ہے اور ذکر کرنے والے بر رحمت نازِل ہوتی نب حضرت مُفيان بن مُحَيِّنُهُ رحة الله قال عافر مات مين " أعِنُدَ ذِكُر الصَّالِحِيرَ تَذُولُ الرُّ حُمَدُةُ لِعِنى زيك لوكوں كے ذكر كے وقت رحت نازِل ہوتى ہے۔'' (حلية الاولياء ،وقم . ١٠٧٥، ج٧،ص ٣٣٥،دارالكتب العلم الله عند ذو بن كان وليول ك نقش قدم يرجل كربم بهي دُنياوآخرت كي ڈھیروں پھلائیاں یاسکتے ہیں۔اس بات میں کوئی شک نہیں کہ ہم جیسے کنہگاروں کے لئے کاٹل طور پر اِن کے نقش قدم پر چلنا ناممکن نہیں تو بے حد وُ**شوار** ضرور ہے لیکن اِس ؤشواری کو آ ٹر بنا کر اپنی اِصلاح کی کوشش **ترک** کردینا بہت بڑی **نا دانی** ہے۔ یقصے میٹھے اسلامی بھائیو!اگر چہ ہم اِن یا کیزہ ہستیوں جیسانہیں بن کیے مگران کے حالات وملفوظات كى روثني ميں اپني نيتو ل اور معاملات كى دنيا تو سنوار سكتے ہيں ، اپنفس كى خوشنودی کےسودوں سے تو بازرہ سکتے ہیں ،حلال دحرام کی تمیز ، آخرت کے **لغ**ح ونقصان اورايزرت تدير عزو على كغضب ورضاكا خيال وركه عكة إلى-عالبًا ای مقدس جذبے کے تحت جہاں مو آفین ومؤرخین نے ان بُرُرگوں کے حالات زندگی قلمبند کئے وہیں ہردور میں کمی ند کمی برگزیدہ ہتی کے إرشادات وملفوظات کوان کے مُعَتَقِد بن نے آئندہ نسلوں کے لئے محفوظ رکھنے کی کوشش کی۔ شیمے منص مَدَ في آقامل الله تعالى عليه والديهم كفراهين كوجم إس سلسل كى بنيا وكهد يحت بيل ليكن دونوں میں بنیادی فرق بیہ ہے کہ فرامین مصطفیٰ صلی اللہ تعالی علیده الدیم شریعت کی ولیل اور بُور كان دين مليم رحمة الله المين كم لفوطات عمو ما إن فرامين كى (محمو) تشرك موت يس-

ربوں میں ہوئے دل ہے اور اصلاح انصافا میں میں ہیں ،اس صفوالے ہے دل میں ہیں ہیں ہیں ہیں ہیں ہیں ایک میں پوست ہوجاتے ہیں اور اِصلاحِ اُحوال کا سبب بنتے ہیں ،اس صفحن میں ایک اِیمان اُفروز حکایت ملاحظہ کیجئے۔

زبان ولی کی تاثیر

حضرت سیِّدُ ناابراہیم بن ادھم علیہ حمۃ الله الارم کی خدمت میں ایک نو جوان حاضر ہوا اور کہنے لگا :''میں نے اپنی جان پر بہت ظلم کیا ہے ، مجھے کچھ نسیحت ارشاد فرمائیں جو مجھے گنا ہوں کوچھوڑنے میں مُعَاوِن ہو۔'' آپ نے ارشادِ فرمایا کہ ''اگرتم **یا نج خصلتوں** کوا پنالوتو گناهمهیں کوئی نقصان نیدیں گےاوران کی لذّت ختم ہوجائے گی ۔''اس نے آمادگی کا اِظہار کیا تو آپ رحمة الله تعالیٰ علیہ نے فرمایا:' مپہلی بات بيے كه جبتم كناه كاإراده كروتوالله تعالى كارِزْق مت كھاؤ، 'وه نوجوان بولا، ' پھر میں کھاؤں گا کہاں ہے؟ کیونکہ دنیا میں تو ہرشے اللّٰہ عَدْدَ عَلَى عطا کردہ ا ہے۔'' آپ نے فرمایا،'' کیا ہ**ا چھا** لگے گا کہتم رت تعالیٰ کارِزْق بھی کھا دَاوراس کی نا فرمانی بھی کرو؟''اس نو جوان نے کہا،' نہیں!''اور کہا:'' دوسری بات بیان فرما ہے' آپ رحمة الله تعالى عليه نے فرمايا: " ووسرى بات بيرے كه جبتم كوئى گناه كرنے لكو تو **الله** عَزْدَ حَلْ کے **ملک سے باہرنکل جاؤ۔' وہ کہنے لگا:'' بی**تو پہلی بات ہے بھی مشکل ہے کہ شرق سے مغرب تک اللہ خدود خل ہی کی مملکت ہے۔ "آپ نے إرشاد فرمایا:''تو کیا بیمناسب ہے کہ جس کا رزق کھاؤیا جس کے ملک میں رہو، اس کی **نا فرمانی** ہمی کرو؟'' نو جوان نے نفی میں سر ہلا یا اور کہا،'' تیسری بات بیان فرما کیں۔''

ಯ 👊 🚓 📆 مجلس المدينة العلمية (الرجاء الال

آب رحمة الله تعالى عليے نے ارشاد فرمايا " تعبسرى بات بدے كه جب تم كوئى كنا اكروتو ایسی جگه کرو جہاں تہمیں کوئی نہ **و مکھ**ر ہاہو ۔'' اس نے کہا،''حضور! یہ کیسے ہوسکتا ہے الله عزز خل توہر بات کا جانے والا ہے کوئی اس سے کیے حصب سکتا ہے؟''تو آب نے فر مایا:'' تو کمای**دا جھا لگے گا** کہتم ا**س کارز ق بھی کھاؤ،اس کیمملکت میں بھی** رہواور پھرای کے سامنے اس کی **نافر مانی بھی** کرو؟'' نوجوان نے کہا:''نہیں، چوتھی با**ت** ا این فرما کیں۔'' آپ رہاء اللہ تعالیٰ علیہ نے فرمایا:'' **چوتھی بات** یہ ہے کہ جب ملک الموت علیهالملام تمہاری ُروح قبض کرنے تشریف لا کمیں تو ان ہے کہنا:'' کچھ دیر کے لئے نھبر جا ئیں تا کہ میں **تو** بہ کر کے چند**ا چھےا عمال** کرلوں۔' اس نے کہا:'' ب**ی**تو ممکن ہی ہیں ہے کہ وہ اس مطالبے کو مان لیں۔'' تو آپ نے ارشاد فرمایا:''جب تم جانتے ہو کہ موت یقینی ہےاوراس سے بینا ممکن نہیں تو **جھٹکارے** کی تو قع کیے کر سکتے ہو؟''اس نے عرض کی:''یانچویں بات ارشاد فرما کیں۔'' آپ نے فرمایا:'' **یانچویں بات** یہ ہے کہ جب زَ بَانِیُدَآئے (یعیٰ عذاب کے زیجے آئیں) اور تھے جہتم کی طرف لے جایا جائے **ت** مت جانا۔''اں نے عرض کی:'' وہمیں مانیں گےاور نہ مجھے چ**ھوڑ میں** گے۔''تو آپ ن ارشاد فرمایا "تو پرتم نجات كى أميد كسي ركه كت بو؟" حفرت سیّدُ نا ابراتیم بن ادهم علی رمهٔ الله الائرم کے حکمت مجرے **ملفوطات** س كروه نو جوان يكارا لها" بمجيع يد فيبحت كانى ب،اب بيس الله عزو حل سے معالىٰ ما نگتا ہوں اور **تو** بہ کرتا ہوں ۔''اس کے بعد وہ نو جوان مرتے دم تک **عبادت می**ر صلَّى اللَّهُ تعالى على

کے اِن ممکتے مچولوں کوآپ کے شنرادے حضور مفتی اعظم ہند مولا نامجر ن عليد رحمة النان نے ايك مَدّ في گلدستے كي صورت ميں آنے والى نسلوں ك لے و المملفوظ " کے نام سے بطور تخفہ بیش کیا ہے ۔اعلیٰ حضرت رحمة الله تعالیٰ مل 55 سے زائد ملکوم پر عُبُورر کھنے والے ایسے عب**قری عالم** تھے کہ در جنول نقلی اور عقل علوم وفنون برآپ کی **سینکروں تصانیف** موجود ہیں۔آپ کے فعالا ک کا مجموعہ م فخال می رضوبیہ او بحرِ فقد میں غوط لگانے والوں کے لئے آسیجن کا کام دیتا ہے۔ آپ کی تصانیف مبارکه میں آپ کی علمی طبیعت، فقهی مهارت اور تحقیقی بصیرت کے چلوے دکھائی دیتے ہیں ۔ا**علیٰ حضرت** رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ چودھویں صدی کے مجدّد ہیں لہٰداالفاظ آب کے قلم سے صفحہ قرط اس پیشقل ہوئے ہوں یا**ز بان** ، دونوں صورتوں میں ہارے لئے رہنمائی کا سرچشمہ ہیں۔'' المملفوظ'' میں قران وحدیث کی روشی میں شریعت کے اُحکام بھی ہیں اور طریقت کے آواب بھی، نی أكرم ملى الله تعالى عليه واله وملم اور أن كے صحاب كرام رض الله تعالى عنم كے فضائل ومنا قِب ہیں ہیں اور سلاطینِ اسلام کے تذکرے بھی ، اُصولی وفروعی مسائل کے ولا کل بھی ہیں اور علوم وفنون سے اِخْتِفال رکھنے والوں کے ذہن میں پیدا ہو۔ الے اِشکالات کے جوابات بھی جرام وحلال کے سائل بھی ہیں اور خوابوں کی مبیرین بھی، پُزرگوں کی ایمان افروز حکایات بھی ہیں اور**ڈ اتی تجربات** بھی <mark>جلمی</mark> ندا کرے بھی ہیں اور اُشعار کی تشریح بھی ، ریاضیاتی اور سائنٹی نظریات بھی ہیں اور تاریخ کے حقائق بھی ،الغرض (الملفوظ عوام وخواص کے لئے معلومات کا اعمول خزانہ ہے۔

ملفوظات اعلى حضرت (حمدازل) ِین چکدارتیق موتی) یونهی **بگھرے رہے ت**و اِس قدر مُرفیدنہیں جتنا انہیں سلک تحریر میں کم کر لینے (یعنی تحریر کی لڑی میں یرونے) کے بعد ہم فائدہ اٹھا سکتے ہیں _ پھر یہ کہ خود ہی مُتَــــمَتِـــع ہونا(یعی نفع اُٹھانا) یازیادہ سے زیادہ اِن کا نفع حاضِر باشان دریارعالی (یعنی موجودین) ہی کو پینچنا ، باقی اورمسلمانو ں کومحروم رکھناٹھیک نہیں ۔ اِن (ملفوظات) كانفع جس قدرعام ہواُ تنا ہى بھلا۔للہذا جس طرح ہويەتفريق جمع ہو۔گريدكام بھھ ہے بے بیشاغت (یعنی ہے مایہ)اور عکد ٹیمُ الْقُرُ صُت (یعنی مصروف رّین) کی بساط ہے کہیں ہوا(یعنی بڑھ کر)تھااورگو یا **جا در** ہے زیادہ یاؤں پھیلا نا تھا،اس لئے بار بار ہمت کرتا اور بیٹھے جاتا۔میری حالت اس وقت اس مختص کی تی تھی جو کہیں حانے کے اِرادے سے کھڑا ہو گرمُذَبُذ ب (مین شش دین کاشکار) ہوایک قدم آگے ڈالٹا ، اور دوسرا بیچیے ہٹالیتا ہوگردل جو **بے چین ت**ھا *کسی طرح قرار نہ* لیتا تھا آخر "اکسٹے میٹے و وَ الْإِنْدَ مَامُ مِنَ اللَّهِ" (يعني كوشش ميرى طرف سے اور يحيل **اللّٰه** تعالىٰ كى طرف ہے۔) كہتا ، كمِ بمت چُمت كرتااور" حَسُبُنَا اللَّهُ وَنِعُمَ الُوَكِيُلِ" (يَّيِنَ اللَّهُ تَعَالُ بَمِينَ كَا في ج اوروہ کیا ہی اچھا کارسازہے۔) پڑھتا اٹھا اور ان جو اہرِ نفیسہ (لینی عمدہ موتوں) کا ایک خوشنما ہارتیار کرنا شروع کیا اور میں اینے رب غزؤ خل کے کرم سے اُمیدر کھتا ہوں کہ وہ اس مارہی کومیری جیت کا باعث بنائے ع اس دعا اَز مَن و اَز جُمله جهاں آمین باد (لعنی بیده عامیری طرف سے اور آمین تمام جہان کی طرف ہے۔ت) وَالـلَّهُ تَعَالَى وَلِيُّ التَّوْفِيُقِ وَهُوَ حَسُنبيُ وَهُوَ خَيْرُ رَفِيْقِ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلى خَيْرِخَلُقِهِ سَيِّدِنَا وَ مَوْلِنَامُحَمَّدِ وَّالَهِ وَصَحْبِهِ اَجُمَعِيْنَ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ

بیٹھے میٹھےاسلامی بھائیو! بیوظیم الشان مجموعه اعلیٰ حضرت رممۃ اللہ تعالی علیہ کی حیات مبارکہ کے آخری چندسال کے مُلْفُوظات پر شمل ہا گرطو بل مُدَّ ت کے **ملفوظات جمع کئے جاتے تو آج ہمارے پاس معلومات کا بہت برافخزانہ ہوتا۔ پھر** اعلیٰ حضرت رممۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے ان ارشا دات کو **جمع** کرنے کا سلسلہ مسلسل نہیں تھا۔خود مفتی اعظم علیہ رحمۃ اللہ الاكرم اس كی صراحت فرماتے ہيں:''میں نے جا ہا تو بیہ تھا كہ **روزانہ** کے مَلفو ظات (یعنی اِرشادات) جمع کروں مگر میری بے فرصتی آ ڑے آئی اور میں اینے اس عالی (یعنی بلند) مقصد میں کامیاب نہ ہوا غرض جتنا اور جو کچھ مجھ سے موسكاميں نے كيا، آ گے قبول واُجْر كااپنے مولى تعالى سے سائل ہوں" وَ هُوَ حَسُبِيْ وَ رَبِّي" (لعِني وبي ميرارب ہےاور مجھے کافی ہے۔ت)" اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان علیه رحمة ارحن کے بیر' ملفوظات'' بنام ''اُلْــمَــلُــفُــوظ'' آج ہےتقریبا89 سال پہلے ۱<u>۳۳۸ ا</u>ھر<u>191</u>9ء میں تالیف موئے۔اعلیٰ حضرت علیدحمۃ دب امرّ ت نے خوداس کا نام' **'المملفو ظ''**رکھا جواس کی تاریخ تالف (۱۳۲۸ه) برشمل باور بیشعرعنایت فرمایا مير علفوظ كجم كي محفوظ مصطفى كا بوملحوظ نام تاریخی اس کار کھتا ہوں زُبرو بین شی الملفوظ الله تعالى بميس اعلى حضرت رحمة الله تعالى عليه كي إن ملفوظات كوير عثم ما در کھنے اور حتی المقدور إن يرمل كرنے كى تو نيتى عطا فرمائے۔ أمين بحاه النبي الامين صلى الله تعالى عليه والدوسلم مجلس المدينة العلمية (دعوت إسلامي)

آلُمَلُفُهُ ظاهِ، ٱلْمَدِيْنَةُ الْعِلْمِيةِ (رَوْتِ اللَّايِ) **میٹھے میٹھے اسلامی بھا ئیو!** روایت کے مُعَتَّبر ہونے کا دار دیدار َ اوی(^{ای}ن روایت کرنے والے) کی **بُقامِت (**لینی قابلِ امتبار ہونے) **پر ہوتا ہے۔ا**گر راوی **ثُقَہ** (لینی قابل ابتیار) ہوتو اس کی روایت بھی مُشتَّعُتُم مجھی جاتی ہےاورا گرراوی کی ثقابت میں شک ہوتو اس کی روایت بھی **مشکوک** ہوجاتی ہے ۔ **ملفوطات ِ ا**علیٰ حضرت رحمۃ اللہ تعالیٰ ملیہ کے راوی حضور مفتی اعظم ہندرہۃ اللہ تعالی علیتو الیسے لُقتہ ہیں جن کے زُہد وتقاٰ ی ، د بانت داری علمی وَ جاہت ،وُسعت مطالعہ بقوّ ت ِ جا فظہ کی وجہ سے ثِقاہت بھی اِن پر نا ز کرتی ہے ۔لہذا حضور مفتی اعظم ہندرجہ الشعلہ کی تالیف کردہ'' المملقوظ'' میں کی شک وشیہ کی **نمخائش نہیں رہتی ۔ لیکن یہ بھی ایک حقیقت ہے کہ فی ز**یانہ ملفوظات کے نسخوں میں باہم فرق ،عبارتوں میں کی بیشی ،بعض مقامات کا بعض سے متضاد ہونا اور کتابت کی غلطیاں وغیرہ موجود ہیں۔اس کی وجہ صاف ظاہرے کہ "ملفوظات اعلی حضرت رمه الله نعالی علیه'' کو مرتب ہوئے تادم تحریر (بینی ۱۳۲۹ھ میں) تقریباً 89 برس کا عرصہ گزر چکا ہے۔ اِس طویل عرصے میں لف**ق در نقل** کی وجہ سے کتابت کی غلطهاں بڑھتی چلی گئیں۔ اِس یرکام کرنے والے حضرات نے بطور فائدہ یا حاشیہ جن الفاظ کا إضافه کیابعد میں ناپٹرین کی ہےا حتیاطیوں کی مجہ سے وہی **الفاظ ا**صل کتار کا حصہ بن گئے ۔اس کی ایک مثال ملا حظہ کیجئے ؛ حصہ اوّل میں اہرام مصر کی تغییر کے بارے میں ہے۔

مفتی اعظم ہند رمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے بھی بعد والے نسخوں میں نقل و کتابت غلطیوں برناراضی کا اظہار کرتے ہوئے فرمایا '' **نہ جانے کیسے چیپوا دیا ہے۔'**' آج مسلمانوں کی اکثریت بُؤرگان دین علیدرت الله المبین کے علمی فرخارکر ے خاطرخواہ فاکدہ نہیں اُٹھایاتی جن میں 'الملفوظ'' بھی شامل ہے۔اس کی ایک وجہ بیجھی ہوکتی ہے کہ جس مبارک زمانے میں ان **ملفوظات** کی تالیف ہوئی ،اورآج کے مالات میں بہت فرق ہے۔ اُس وقت عِلْم وین سیجنے سھانے کا جذبہ آج کی ىبەت كېي**ى زيادە ت**ھا **صحبت علماء م**ين رہنا بھردىنى كتب كا مُطَالَعه كرنامبلمانول ے معمولات کا حصہ تھا۔ آہ! آج مسلمانوں کی اکثریت مثو**ت** عِلْم وی**ن** ہے **محروم** ے حتی کے فرض عکوم سکھنے کی طرف بھی او تی نیس، اگر اس بات کا لیقین نیا کے تو مجھ بھرے جُمع میں **عوا**م ہے یوچھ لیجئے کہ **نماز** کی گئی شرائط میں؟ کن چیزوں ہے نماز ٹوٹ حاتی ہے؟ وُضووَ مَشل کے کتنے فرائض ہیں؟ وغیرها، چلئے یہی **پوچھ لی**جئے کے عَمْیکُر الْفِفْرِ كُونْے اسلام مينيے كى كس تارىخ كوہوتى ہے تو ايے بھى مليں گے جولاع**لمى كا** ا ظہار کریں گے ۔ پھرع**لمی اِشِتْقُداد (ی**نی ملاجت) کا کیا کہنے کہ اُن دِنوں جو با ت**م**ل عوام بھی جانے تھے، آج دربِ نظامی (یعنی مالم کورس) کا طالبِ علم بھی ٹھیک سے نیبر ۔ اِن سب باتوں کے ساتھ س**اتھ ملوظات** کے اس علمی ذخیرے سے **ا**ستغا یوں بھی مشکل ہوگیا کہ زیانے کے ساتھ ساتھ زبان بھی ب**ارتی** چ<mark>لی گئی ، اُلفاظ کا مصحح</mark> تلفُظ اور اِن کے معنی برنظرر کھناعوام کے لئے وُشوار ترین ہوتا چلا کیا اور یول می مجک و اص كى بى عادت قرار يائى _ پرصاحبان علم ونن جائے بيں كدفصًا حت و بُلاغَت إداین كلام ك عوكى) این اعلى معیار كوقائم ركھنے كے لئے دوسرى بہت ك باتوں كے

(یعن جس سے کلام کیاجائے) اور وقت تُخَاطُب (یعن کلام کرنے کے وقت کافتاج ہوتی ہے ان تمام ہاتوں کو پیش نظر رکھا جائے تو صاف ظاہر ہے آج عوام کا اپنے محسِن ،اعلیٰ حضرت ،مجرِّدِ دین وملت رحمة الله تعالیٰ علیہ کے **اِن إرشاوات** ہے مُستَفِی ہونا بے حد دُشوارے ۔ وہ **عقیدت میں الملفو ظ یا کوئی اور کتاب بڑھنے** کے لئے کھولتے ہیں مگر تھوڑی در بعد مکمل مجھ نہ آنے کی وجہ سے تھک کر بند کر دیتے ہیں اور ا یک طرف **رکھ** چھوڑتے ہیں پھر**نفس وشیطان** انہیں دوبارہ کتاب **کھولنے** ہی نہیں دیتے کہ بڑھ کرکیا کرو گے مجھتو آتی نہیں۔ پھر**غلّاء** کی دلچیں بروایات وجکایات کے **حوالہ جات میں بھی ہوتی ہے جس سے سابقہ تمام ننخے خالی تھے یختلف مقامات پر** کئے جانے والے اعتراضات کے **جوابات** بھی شامل کتاب نہیں تھے . لہذا^{د د}املفو ظ'' کے ایسے ننخ کی **ضرورت** شدت سے محسوں کی جار ہی تھی جس میں مشکل الفاظ کے معنیٰ درج ہوں ،مشکل جملوں کی سہیل کی گئ ہو،حوالہ جات ہوں ، **کمابت** کی غلطیاں نہ ہونے کے برابر ہوں ، پیحیدہ مقامات پر حواثی ہوں مطلمات ترقیم کا اہتمام ہو، الغرض ہروہ چیز ہوجو کتاب کے حسن اور إفادے میں اضافہ کرے - ای ضرورت کے پیش نظر تبلیغ قران وسنت کی عالمگیر غیر سیای تحريك وعوت اسلامي كے ادارے المديرة العلمية كے شعبہ كتب اعلى حضرت على دمة رب العزت نے عاشق اعلی حضرت، امير المسنّت حضرت علّامه مولا نامحم الياس عطاً رقادری داست بر کانهم لعالبه کی خواجش کے احتر ام میں اس کتاب پر کام کا آغاز کیا۔ ا میرکام جتناعظیم تھا اُتناہی م**شکل ترین بھی تھا کیونکہ معاملہ صاحب ملفوظات ا**ور لس المدينة العلمية (الرجاء اللي)

مؤلف ملفوظات کی **تر جمانی کا تھا ۔**گر' ^{مش}کلیں مجھ پر پڑیں اتنی کہ آ ساں ہو *گئی*ں ' كے مصداق الملفوظ كا ببلاحصه اللّه عَرَّوَ حَلَّ كى رحمت ہے بحسن وُء كى ممل ہوا اس عظيم تالف يرجم في جس الداز على الماس كالفصيل مُؤا حَظَه يجعَ: **کام کرنے والوں کا انتخاب:** اس ننخ کی تاری کے لئے جامعة المدينه (دوت اسلام) كے فارغ التحصيل 5 ذبين مَدَ في علماء داست يؤهم كونتن کیا گیا جوحوالہ جات کی تخریج ،مقابلہ، بیروف ریڈنگ اور کمپوزنگ میں قابل قدر مهارت وتج بدر کھتے ہیں ۔ پھران کا ذ مدداراً س مُدَ فی عالم د من رام ظالمین کو بنایا گیا جوتقریاً7سال *کے عرصے می*ں نئ ویرانی **100 سے** زائد **کمآبوں** یرکام کر چکے ہیں۔ پھر اِس کام کے تمام مراجل کے لئے متعدد مَدَ نی مشورے کئے گئے ،مفتیان **کرام** دامت نیزسم سے بھی **رہنمائی** لگئی ،اس کے بعداعلی حضرت و مفتی اعظم رحة الله ثعالی ملیہ کی بارگاہوں سے اِستند او (مین مدطلب) کرتے ہوئے کام کا آغاز کردیا گیا۔ اس نسنج کی کتابت (کمپوزنگ) حامد اینڈ کمپنی (مرکز الاولیاء لاہور) کےمطبوعہ ننخے سے کی گئی ہے۔ مقاملے کے لئے نشخے حاصل کرنے کے لئے پاکستان اور مقابله: ہندوستان کےمتعدد مُلکاءاوراداروں ہے بار بار رابطہ کمیا گیا جس کے بنتیج میں 4 نسخے ﴿ حامہ اینڈ سمپنی (مرکز الاولیاء لاہور)، قادری کتاب گھر بر ملی شریف (ہند) مظہرالعلوم یو بی (ہند) مثناق بک کارنر (مرکز الاولیاه لا بور) ﴾ حاصل ہو گئے مگر افسوں کہ وہ نسخہ جے خُو دمفتی اعظ رمة الله تعالى عليه في مُؤتّب فرمايا تها ، حاصِل فه موسكا جس يرسوائ حسرت مجرى آه

ملفوظات اعلى حضرت (حصداق ل) برنے کے بچھ نہ کرسکے۔ حال ہی میں الملفوظ کا **آگریزی ترجمہ** (مع تخ ت^ج) بھی ا ڈربن ، ساؤتھ افریقہ سے شائع ہواہے ، ایک کرم فرماہے عاریتاً لے کراس کا انداز بھی و يكھا گيا۔ پھر 3 نسخول (حامد ايند كمپنى (مركز الاولياء لا مور)، قادري كتاب كمر بريلي شريف (ہند) مظہر العلوم یوبی (ہند)) کا انتخاب کر کے بیک وفت تین مَدَ نی علماء سے مقابلہ کروایا گیا۔ پھر جہاں جہاں **فرق** نظر آیا اس کی نوعیت کے مطابق **تر کی**ب بنائی گئی ے۔مثلاً اگر کمابت کی غلطی ہے تو درست کردیا گیا، اگر محض الفاظ میں فرق ہے گر معنی میں کوئی فرق نہیں بڑتا تو کتاب کے اُسُلوب کی رہنمائی میں الفاظ یا تو **ہاتی** رکھے گئے یا کہیں کہیں تنبدیل کردیئے گئے ہیں، وغیرھا۔اورا گرالفاظ کی تبدیلی ہے معنی میں فرق آرہاہے تو اس کی وضاحت حاشیہ میں کر دی گئی ہے۔ جن عربی وفاری عبارتوں کا ترجمہ موجود نہیں تھا ،وہاں بریکٹ() میں ترجمہ لکھنے کے بعدآخر میں نشاندہی کے لئے ''ت' ککھ دیا گیا ہے۔ جن آیات کا ترجمہ پہلے سے درج نہیں تھا وہاں اعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے شہرہ ا آفاق ترجمهٔ قران " كنزالا يمان" سے ترجمه کھا گیاہے۔ عنوانات وموضوعات: موالات كعوانات اور حكايات ك **وضوعات** دیۓ گئے ہیں تا کہ مُطالَعہ کرنے والوں کی دلچیں بوھے۔ مشکل الفاظ کے معانی واعراب: یرضے والوں کی آمانی کے کئے جہاں عربی الفاظ پر **اعراب لگائے گئ**ے وہیں اُردُوزبان کے مشکل الفاظ پر اعراب لگانے کے بعد بریکٹ() میں مُر او**ی معانی** بھی ککھ_ودیئے گئے ہیں _مشکل ا جملوں کی سہیل کی کوشش **حاشیہ م**یں گ^ائی ہے۔ پھر بھی اگر کوئی بات بمجھ نہ آئے تو

علماءكرام داس فيه صيبه **سے دالطه يجتے ب** کامہ،فل اشاپ ، اِسْتِحَابیہ وغیرہ کی علامات جہاں علامات ترقيم ر بڑھنے والوں کو آسانی فراہم کرتی ہیں وہیں معنی کوتبدیل ہونے سے بھی بھاتی ہیں ، مثلًا'' روکومت جانے دو'' کوبغیرعلامات کے ککھاجائے تومعنیٰ مُر ادی سجھنامشکل ہے لیکن اگر'' روکو! مت جانے رو'' یا'' روکومت! جانے رو'' ککھا جائے تو ککھنے والے کا مقصد داضح ہوجائے گا۔ **ملفوظات ِ**اعلیٰ حضرت میں اس کا بھی اِلْیَزَ ام کیا گیا ہے، ایک مثَّالِ مَمْلا حظه مِو؛ الملفو ظحصه اوَّل مِين ہے؛ ار شاد: میں نے اِس میں کا فراکھا ہے۔ میہ جملہ کا فر لکھنے کے دعوٰ ی ہر دلالت کر تا ہے لیکن دراصل بیہ جملہ ُ استفہام ب،لہذا! اگر آخر میں موالیہ نثان ''؟' لگادیا جائے تو مطلب بالکل واضح ہوجاتا آیات قرانی ، احادیث مبارکه ، روایات و حکایات اور نقهما تفريج: مبائل کے حوالہ جات خی المقد در لکھ دیئے گئے ہیں۔ آخر میں مأخذ ومراجع کی فیرست بھی دی گئی ہے۔دوران تخ یج بعض مقابات ایے آئے جہال احادیثِ کریر کی عربی عبارتیں درج تھیں محراصل کتب میں وہ عبارتیں کی می تبدیلی کے ماتھ ملیں مثلاً مل**فوظات کے دوسرے ھے می**ں خضاب سیاہ کی حرمت ہو **چے صدیثیں** چیش کی گئی ہیں جن میں پہلی حدیث بحواله سلم شریف یوں درج ہے 'غیسہ وا هَلْهُ ا الشَّيُب وَ لَا تَقُدَّ بُوُ ا السُّوَ اذَ '' جَبِكِمُ سَلَّمَ ثُرِيفِ (كتاب اللباس الزينة الله

٢١٠٠ص١١١) *عِل بيحديث يول هـ ِ 'غَيِّرُ* وُا هَذَا بِشَيُ ؛ وَاحْتَسنِبُسوُا السَّسوَادَ '' دومری حدیث سنن نسائی کے حوالے سے یوں پیش کی گئی بُ يُ اتِي نَاس يَخْضِبُون بالسَّوَادِكَحَوَاصِلِ الْحَمَامِ لَا يَرِيحُونَ رَائِحَةَ الُحَدِيَّة ' جَبَكِهِ مَن سَاكَى (كتساب السزيسنة، بسباب السُنهي عن المخيض بالسواد،ج٨،ص١٣٨) مي الكامتن بيب ُ فَوُمْ يَخْضِبُونَ بِهَذَا السَّوَادِ آخِرَ الزَّمَان كَحَوَاصِل الْجَمَامِ لَا يَرِيحُونَ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ "_ اس فرق کے دوسبب ہو سکتے ہیں ؛ ﴿ 1 ﴾ دراصل ملفوظات کی تدوین اَمالی کی شکل میں نہیں ہوئی تھی کہ **اعلی حضرت** علیہ رحمۃ رب العرّ ت ارشاد فر ماتے ہوں اور ساتھ ہی ساتھ **املا** کیا جاتا ہو، بلکہ رپختلف نشستوں کے افادات ، یا اِسْتِفْعار کے جوالی ارشادات ہوتے تھے۔عین ممکن ہے کہ جن حضرات کوحضور مفتی اعظم ملید جمۃ اللہ الاكرم نے نقل کرنے پر مامور کیا تھاانہوں نے اپنی یا د داشت کے مطابق نقل کیا ہوجس ہے الفاظ میں فرق آگیا۔ اِس صورت میں صاحب ملفوظات ومؤکف ملفوظات برکوئی اِلزام سرے **سے عائیر** ہی نہیں ہوتا۔ ﴿2 ﴾ **صحتِ لقل** (لینی جیسااعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے فر مایا د ہی الفاظ فقل کئے گئے) کی تقدیر پر اس تشم کے **فرق** کو زیادہ سے زیادہ **روایت ب**المعنی (جس میں راوی کے الفاظ تو محفوظ نہ رہ مکیں لیکن مفہوم پورا پورا اوا کر دیاجائے۔) کا فکوق کہا جا سکتا ہے۔ **روأیت باللفظ** (جس میں راوی کے الفاظ کی بیٹی کئے بغیر ہو بہوادا کردیئے جائیں) کی اہمیت وانضیلت اپی جگه مگر شریعت ایک متبحر عالم جونصُوص کے معنی اچھی طرح سمجھ سکتا ہو، سے روایت بالمعنی کی **اجازت** دیتی ہے۔چنانچہ اُصول ِ حدیث کی کتاب نُهُ حُبَةُ الْفِكر" كَيْ شُرِح" نُزُهَةُ النَّظر" مِن علامه ابنِ جَرعسقلانی علیه رحمة الله الخی فر ماتے

ہں:''حدیث کے مُثّن کو جان ہو جھ کر بدلنا اور کلمات حدیث میں کی کر کے اس إنچقسَاركرنا ادركمي كِليے كوكسى مُرَادِف كليے ہے بدلنا جائز نہيں گران فخف كے لئے جو الفاظ کےمعانی،اوران تُغَیُّرات کوجانتا ہوجن سےمعانی بدل جاتے ہیں۔' (۔۔۔۔ز ليُنظن ص٨٨)مزيوفرماتے ميں:'' روايت بالمعنى كےسلسلے ميں اختلاف مشہور ہے۔اكثر علمااس کے جوازیر میں ،ان کے مضبوط دلائل میں بیہے کہ،شریعت کی توضیح تشریح الل مجم کے لئے ان کی زبان میں جا نکار آ دمی کے لئے جواز پراجماع ہے۔تو جب دوسری زبان سے بدلنا جائز ہے تو عرلی زبان سے بدلنا ہدرجہاو کی جائز ہوگا۔ مبھی کہا گیا ہے کہ بہاں کے لئے جائز ہے جےلفظ اس طرح مشخصر ہوکہاں میں تضرف کر سکے۔اور یہجی کہا گیا ہے کہ ایبااں شخص کے لئے جائز ہے جسے حدیث یادتھی ، پھرالفاظ بھول گیا ،اور اس کامعنی اس کے ذہن میں باقی ہے تو وہ روایت بالمعنی کرسکتا ہے تا کہ اس سے تھم لے سکے، برخلاف اس کے جے الفاظ حدیث متحضر ہوں۔ (زُمْهُ النَّظر اص ۸۳) إن اقتباسات سے معلوم ہوا كه بيانِ حديث ميں اگر مفہوم نه بدلا ہوتو **روابیت بالمعنی** جا ئز ہے ۔للہذا!ان عبارتوں کو بنیاد بنا کراعلیٰ حضرت رممۃ اشتعالٰ علیہ کی حدیث دانی پر اعتراض کرنا این کم علمی ک**ا اعتراف کرنے کے**متراوف ہے۔ حدیث میں اعلیٰ حضرت رمیۃ اللہ تعالیٰ علیہ کی وسعت مطالعہ کا انداز ہ اس سے لگایا جا ے کہان کی 1000 سے زائد تصانیف وفتادی میں سے فقط 300 تصانیف میں درم کی گئی 3663 احادیث کا مجموعه تیار کیا گیاہے جو جائٹ اُلاً حادیث کے نام سے چھھٹنم جلدوں میں شائع ہو پکی ہے۔اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ ارمن سے ج دریافت کیا گیا: آپ نے صدیث کی کون کوئی کتابیں درس کی ہیں؟ تو آپ نے جوام مندرجہ ذیل کتب حدیث کا ذکر کرتے ہوئے فرمایا:مندامام اعظم موَ طا امام محم

ملغوظات اعلیٰ حضرت (حصه اقل) مستخصص ، كتاب الآثارامام محمد وكتاب الخراج امام ابو يوسف وكتاب الحج امام محمد وشرح معاني الآثارامام طحاوی بمؤطاامام ما لک ومسندامام شافعی ومسندامام احمد وسنن داری و بخاری ومسلم وابو داؤر وترندي ونسائي وابن ماجه وخصائص نسائي متتقى ابن الجارود وعلل متنابهيه ومشكوة وجامع كبيرو جامع صغيروذيل جامع صغير متنقى ابن تيميه وبلوغ المرام وثمل اليوم والليلة ابن السني وكتاب الترغيب، خصائص كبرى وكتاب الفرح بعد الشد ة وكتاب الاساء والصفات وغیرہ بچاس سے زائد کتب حدیث میرے درس ویڈ رکیس ومطالعہ میں رہیں۔ (اظہارالحق الحلی ہص ۴۰) **'' فمآلا کی رضوریہ'' می**ں اعلیٰ حضرت رحمة الله تعالیٰ علیہ نے احادیث وا خار كوروايت بالمعنى كرنے مين "ملخصاً" اور "ملتقطاً" كى إصطلاحات استعال فرمائي میں۔ چنانچہ ہم نے بھی تخ ت^ج میں اس کی صراحت کردی ہے۔ مُلَخَّصاً کا مطلب یہ ہے کہ کوئی حدیث یا روایت کواینے الفاظ میں اس طرح بیان کرنا کہ اس کا مطلب تبديل نه مواورمُ لْمُنْهِ قِطماً كامطلب بيرے كركوني حديث ياروايت كالفاظاتو بالكل ﴿ و ہی رہیں اور اس میں ہے کچھالفاظ کو ذکر کر دینا اور کچھالفاظ کو حذف کر دینا اس طرح کهان کامطلب تبدیل نه هو _ فهرست سے اکثر ننجے خالی تھے، چنانچیہ کتاب کے شروع میں فہرست بھی بنادی گئی ہے۔ ضمنى فهرست: جامع ملفوظات مفتى أعظم مندرمة الله تعالى عليه كا انداز تالیف سیہ ہے کہ وہ سائل کے سوال کوعرض اور اعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے عطا کر دہ ملفوظ کو اِرشاد کے نام سے تعبیر فرماتے ہیں۔ چونکہ اس کتاب کی ترتیب ساکلوں کے سوالات کی ترتیب کے مطابق رکھی گئی لہذا کوئی فنی ترتیب قائم نہ ہوسکی مثلًا ﴿

عقائد ،عبادات ،معاملات وغیر و - ای لئے اعلیٰ حضرت رمیہ اللہ تعالیٰ بلیہ کے ملفوظات ر نگارنگ پھولوں کی پنگھڑیوں کی طرح سینئلز وںصفحات پر بکھرے ہوئے ہیں۔ پڑھنے والوں کی آسانی کے لئے ہم نے کتاب کے آخر میں موضوعات کے مطابق ضمنی فہرست بھی شامل کر دی ہے تا کہ مسلہ تلاش کرنے میں آسانی رہے۔ ملفوطات کے حصہ اوّل میں 219 سوالات اور ان کے شمار باتے حائز ہ : جوابات ہیں، جن میں 63 آیات قرانی، 73 احادیث مبار کہ اور 29 حکایات شامل ہیں۔ علاوہ ازیں اس کتاب میں تقریباً 61 حواثی ہیں جس میں سے 54 المدیمة العلمیہ کر طرف ہے ہیں جن کے آخریر 'عِلْمِیه''لکھ دیا گیا ہے۔ عرض حال ان تمام تر کوششوں کے باجو دہمیں **دعوی کمال**نہیں لہذا اِس ننج میں جو خو لی نظر آئے وہ بھارےاعلی حضرت علیدرتیة رب امیز تے کے کلام کا جلوہ ہے مفتی اعظم علامه مولا نامحمه مصطفط رضا خان رحة الله تعالى عليه اور عاشق اعلى حضرت امير المسننت حفرت علامه مولانا محمد البياس عطار قاورى داست بركانهم دماليه كافيض ساورجهال خامی ہود ہاں ہماری غیرارادی کوتاہی کو دخل ہے۔اسلامی بھائیوں بالخصوص علائے کرام داست نیم سے مؤدبانہ درخواست ہے کہ جہاں جہاں ضرورت محسول کریں بذر بعد مکتوب یا ای میل هماری رہنمائی فر ما کمیں۔ **الیلّبہ نعالی دعوت اسلامی کے خقی**قی واشاعتی ادارے 'المدینة العلمیة' 'کیاس کاوش کوتبول فرمائے-م مين بحاه النبي الإمين ملى التدنعا بي عليه والهوسلم مُحُلِس ٱلْمُدِيْنَةُ الْعِلْمِيةِ (رَّوْتِ اللَّالِ) E.mail:ilmia26@yahoo.com,...gmail.com 🚥 ﴿ الله بنة العلمية (٨ عاماي) عمد 🚓 🔾 م

بسُم اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

(خطبداز: شنرادهٔ اعلیٰ حضرت حضور مفتی اعظم هندمولا ناالشاه محمر مصطفهٔ رضا خان علیدحمة الرحن) ئُهُ وَنُـصَـلِّيُ وَنُسَلِّمُ عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيُمِ ° أَحُسَـنُ الْـمَكُتُوبَاتِ وَعُمُدَةُ الْمَلْفُوظَاتِ حَمُدُ مُبُدِعِ ٱنْطَقَ الْمَوْجُوُدَاتِ بِٱنُ لَّا إِلٰهُ إِلَّا اللَّهُ وَلَا مَوْجُودَ إِلَّا اللَّهُ وَأَخُرَجَ الْمَعُدُومَاتِ مِنَ الْعَدَمِ إِلَى الوَجُودِ فَشَهِدُنَ اَنُ لَامَشُهُودَ اِلَّا اللَّهُ فَالْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ الْإِنْسَانَ وَعَلَّمَهُ الْبَيَانَ وَٱنْطَقَهُ بِفَصِيْحِ اللِّسَانِ وَالصَّلْوةُ وَالسَّلَامُ الْاَتَمَّانَ الْاَكُمَلَانِ عَلَى سَيّدِ الْإِنُسِ وَالْجَانَ عَمِيْمِ الْجُوُدِ وَالْإِحْسَانِ شَفِيْعِنَايَوُمَ الْجَزُعِ وَالْفَزُعِ عِنْدَ الُـمَـلِكِ الْـمَنَّانِ الَّذِي عَلَى الْمُؤْمِنِينَ بِمَحْضِ كَرَمِهِ حَنَّانٌوَقَهَارٌ عَلَى جُيَال الْبَغْي وَالْعِنَادِ وَالْفَسَادِ وَالْكُفْرَانِ جَبَّارٌعَلَى الْمُرْتَدِّيْنَ وَعَلَى مَنُ كَفَرَ بِهِ وَبِرَسُولِهِ دَيَّانٌ ،نَبِيَ الرَّحُمَةِ ذِيُ الْكَرَمِ وَالْغُفُرَانِ حَامِي الْإِيْمَان مَـاحِي الطُّغُيَانِ غَافِرِ الذُّنُبِ وَالْفُسُوقِ وَالْعِصْيَانِ سَيِّدِنَا وَمَوْلَنَا نَاصِرِنَا وَمَـأُونَـا حَـامِيُـنَـا وَمَـلُـجَـأَنَـا اَلسُّـلُـطَان اَبى الْقَاسِم مُحَمَّدٍ رَّسُوُلِ رَبِّنَا الرَّحْسَمْنِ وَعَلَى الِهِ وَصَحْبِهِ الَّذِينَ صَدَّقُوهُ بِالْإِذْعَانِ وَامْنُوا بِمَوْلَاهُمُ بِ التَّصُدِيْقِ وَ الْإِيْقَانِ وَسَعَدُوا فِي مَنَاهِجِ الصِّدُقِ وَصَعِدُوا مَعَارِجَ الْحَقِّ بِ الثَّبَاتِ وَالْإِنْقَانِ هُمُ لِلدِّينِ اَسَاسٌ وَبُنْيَانٌ وَاَرْكَانٌ اَللَّهُمَّ احُشُرُنَا مَعَهُمُ كَرَمِكَ وَادُخِلْنَا بِهِمُ دَارَ الْجِنَانِ بِرَحُمَتِكَ وَ مَغُفِرَتِكَ يَاكُرِيْمُ يَا نيُمُ يَاغَفَّارُ يَاسُبُحَانُ امِيُن امِيُن يَااَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ

Marfat.com

رّ جمهاز شعبه کتب اعلیٰ معنرت ،المدیمة العلمیة (دعو



ترجمة كنزالايمان: زين يرضّ كُلُّ مَنُ عَلَيْهَا فَانِ ٥ وَّيَبُقَى وَجُهِ وَبُكَ ذُو الْهَالِلَ مِي سِهِ وَنَا بِ اور باتى بِ تَهارب وَ الْإِكُوَ اهِ (ب٧٧٠ الرحين: ٢٧٠٦) رب كي ذات عظمت اور بزرگ والا _ و وام (یعن بیش کی کے لئے نہیں ، ہمیشہ نہ کوئی رہاہے ندرہے ۔ ہیشگی رب عرو حل کو ے، باتی جوموجود ہے متعد وم (یعنی مث جانے والا ، ندر ہے والا ہے) اور ایک دن سب کوفنا ہے۔ای لئے اُسلاف کرام رحمۃ اللہ علیم نے ایسے پاک اُنفاس قُدسیہ کے حالات مبار كه ومَكا تبيب طبّيه (يعني خطوط مبارك) ومُلفوظات طاهر ه (يعني يا كيزه ارشادات) جمع فر مائے یا اس کا إذْ ن دیا (یعن اجازت دی) کم**ان کا نُقّع قِیامت تک عام ہو** صائے اور بميں (يعنى بم بى) مُسْتَفِيد (يعنى فائده الهانے والے) وَمُحَفُّوظ (يعنى لطف أندوز) شہول بلکہ ہماری آئندہ نسلیں بھی فائدہ اٹھا ئیں اور پھروہ بھی بیرں ہی اینے اُخلاف (یعنی بعد میں آنے والوں کے لئے) کیلئے پُند ونصائح وقرصایا ، تنبیبات وإخلاص کے ذخیرے، أذكار عشق ومحبت، مسائلِ شريعت وطريقت كے مجموعه بمعرفت وحقيقت كے مجمينه (یعن خزانہ)کوایے چھلوں کے لئے چھوڑ جائیں اور بیسلملہ یونمی قیامت تک جاری . - 3 - . . بَسَاكِيس دولت أَز كُفتار خيزد نے تنہا عشق اُز دیدار خیزد دین نبیر عش محاج زیارت، کدید دات حاصل گفتارے بھی ہے ﴾ (کلیات جامی) فقیر جب تک سِن صُعور (یعنی ہوژں سنجا لنے کی عمر) کو نہ پہنچا تھا اور اچھے برے کی تمیز نہ تھی ، بھلائی برائی کا ہوش نہیں تھا ، اس ونت میں ایسے خیال ہونا کیا معنیٰ ؟ پھر جب سِنِ صُعور کو پہنچا تو اور زیادہ بے صُعور ہوا، جوانی دیوانی مشہور ہے مگم

ـُحـنَهُ مُهِ " آَــهَ" محبت بغيررنگ لايخېيں رہتی اور پھرا چھوں کی صحبت!اور وہ مجمح كون؟ (يعني اعلى حضرت رحمة الله تعالى عليه) جنهميں سّيرُ الْعَكُمَاء (يعني علاء كا سروار) كهيں تو حق میہ ہے کہ حق ادا نہ ہوا، جنہیں تامج النُرُ فا ء (یعنی عار فین کا پیشوا) کہیں ،کھا (یعنی درست)، جنهیں مُجَدّ دِوفت اور اِمـامُ الاّولياء (لعنی ولیوں کا اِمام) سے تعبیر کریں توضیح ، جنہیں حُرَمُیُن طِیِّیُن کے عکمائے رکزام نے مَدائح جلیلہ (یعنی خوب تعریفوں) ہے مَر الما،"إنَّهُ السَّيَّدُ الْفَرُدُ الْإِمَامُ " (يعني يه يكناويكاندمرواروامام بين-ت) كمها، إن ك ہاتھ پر بیعت ہوئے انہیں اپناشج طریقت بنایا، اِن سے سَنَدیں لیں ، اِجازتیں لِیں ، انہیں اپنا اُستاذ مانا۔ پھرا لیےا جھے کی صحبت کیسی بابر کت صحبت ہوگی ۔ سچ تو ہیہے کہ اِس صحبت کی برکت نے انسان کر دیا۔ اُس زمانے میں کہ آزادی کی تُند و تیز ہوا چل ر ہی تھی کیا نجب تھا کہ میں غریب بھی اس بادِ صَرْ صَر (لیٹنی آندھی) کے تیز جھونکوں سے جہال صد م بنسس المصير (بهت يُر عظان من) ينجو بين جار بنا مراين مولا ك قربان جس كى ظرعنايت نے يكامسلمان بناديا وَ الْحَمُدُ لِلَّهِ على ذَالِكَ _ابِنه وہ خُو دی ہے جو بے خُو د (یعنی اینے آپ سے بے خبر) بنائے تھی ۔ نہ وہ مَد ہوثی جو بیہوش كَيْمَى - ندوه جواني كي أمنك ندكسي فتم كي كوئي اورئز نگ (يعني جوش وجذبه)_مولاتا فوى دعة الدتوال عليان كياخوب فرمايا بـ ع صُحبتِ صالح تُرا صالح كُنَد (لعنی نیک آدمی کی محبت تھے نیک بنادے کی ۔ ت) ولا ناکے اِس فرمان کی مجھے آنکھوں دیکھی تقدیق ہوئی۔اس معنی میں حضرت سعدی شیرازی رمهٔ الله تعالی ملیه نے فرمایا ، اور کتنااح چها فرمایا به میں بار باران کے اُشعار پڑھتا ہوں يُنْ كُن: مجلس المدينة العلمية (الرياساي)

ں۔ اور کظ (بینی لطف)اٹھا تا ہول، جب پڑھتا ہول ایک نیالطف یا تا ہوں۔ وہ فرماتے ہیں: نشائہ کے م

گِلے خوشبوئے دَرُ حَمام روزے است محبوبے بَدَسُتُم بُدو گُفتہ کے مشکی یا عبیری کے اَز بُوئے دلاّویزِ تو مستم بَدُو گُفتہا مَن گِلے ناچیز بُودم ولیکن مُدّتے باگُل نشستم جمال هم نشیں دَرُمَن اثر کَرد وگرنه مَن هُمان خاکم که هستم

ر لیعن: ایک دن حام میں خوشود ارم کی میرے محبوب کے ہاتھ سے میرے ہاتھ میں آئی ، میں نے میں دیا ہے دیں میں موشود ارم کی میرے محبوب کے ہاتھ سے میرے ہاتھ میں آئی ، میں نے

اس سے پوچھا کہ تُو منگ ہے یا عُبْر کہ میں تیرے دل کو چھو لینے والی خوشیو سے دیواند ہوا جار ہا ہوں، اس نے جواب دیا کہ میں ایک اچیز و بے قدر مرکم تھی لیکن ایک مذت تک جھے چھول کے

رائی ساتھ رہے کا شُرف عاصل ہوا، چانچ میرے ہم شین کے شن وجمال کی تاثیر بھے میں اُر گئی ورنہ میں آور دی ایک بے قیت کی تل ۔

۔ غرض میری جان ان پاک قدمول (یعنی اعلی حضرت رحمة الله تعالی علیہ کے

قدموں) پر قربان! جب سے بیدقدم پکڑے آئیسی تھلیس، اچھے برے کی تمیز ہوئی، اپنا نفع وزیاں (لیمن فائدہ اور نفصان) سوجھا۔ مُنہیات (لیمن منوبہ کاموں) سے تا بَمُقدُ ور (لیمن امکان بمر) اِشِر از کیا (لیمن بچا) اور اُوار (لیمن شرع احکام) کی بجا آوری ش

مشغول ہوا، اور اب اعلیٰ حضرت مُذَظِدُ الاقدى كى بافيض صحبت ميں زيادہ ور ہنا اختيار كيا۔ يہاں جو بيدد يكھا كمشر يعت وطريقت كے دہ بازيك مسائل جن ميں مُدُّ تو ن غور وخوضِ

کامل کے بعد بھی ہماری کیا ہماط (یعن طاقت)! بڑے بڑے سرٹیک کررہ جائیں ، فکر اس کرتے کرتے تھکیں اور ہرگز نہ جھیں اور صاف' آمّا الا اَدُریُ " (یعنی میں نہیں جانا۔ت)

🚥 🕬 في المدينة العامية (العاملية)

ملفوطات اعلیٰ حضرت (حصاة ل) کا دَم بھریں، وہ یہاں ایک فقرے میں ایسے صاف فرمادیئے جا کیں کہ ہر مخص سمجے لے گویا اِشْکال (لیعنی دشوار) ہی نہ تھا اور وہ وَ قائِن وزِ کات ِ مٰہ ہب ومِلَّت (یعنی بار یک بہلو) جوا یک چیستان (یعن بیل) اورا یک مُعَمّا ہوں جن کاحل دُشوار _ زیادہ وُشوار ہو، یہاںمنٹوں میں حل فرمادیئے جائیں ۔ تو خیال ہوا کہ بیہ جواہرِ عالیہ وزَ واہِرِ غالیہ (یعنی چکدار قیمتی موتی) یونہی بکھرے رہے تو اس قدر مُفید نہیں جتنا انہیں بلکِ تحریر میں نظم کر لینے (یعن تحریر کالزی میں پرونے) کے بعد ہم فائدہ اٹھا سکتے ہیں . پھر ہید کہ خود ہی مُتَسمَتِّسع ہونا (یعن نفع اُٹھانا) یا زیادہ سے زیادہ اِن کا نفع حاضِر باشان ور بار عالی (یعنی دربار اعلی حضرت ملیدحمة رب اور تهیں حاضر ہونے والوں) ہی کو پہنچنا 'یا تی اور لممانوں کومحروم رکھنا ٹھیک نہیں ۔ان کا تفع جس قدر عام ہواُ تنا ہی بھلا۔لہذا جس رح ہو بہتفریق (یعن بھرے ہوئے موتی) جمع ہو، مگر بیکام مجھ سے بے بضاعت (یعنی بے مایہ)اور عَدِیْم ُ الْفُرُ صَت (یعیٰم مروف زین) کی بساط (یعیٰ طاقت) ہے کہیں ہوا (یعنی بڑھکر) تھااور گویا جا در سے زیادہ یاؤں پھیلا نا تھا،اس لئے بار بار ہمت کرتااور بیٹھ جاتا ۔میری حالت اُس ونت اس شخص کی سی تھی جو کہیں جانے کے ارادے۔ کھڑا ہومگر مُذَبُذَ بِ (لیخی شش دیخ کا شکار)ہوایک قدم آ گے ڈالآ ،اور دوسرا چیچے **بِثالِيمًا بِوكُرُول جوبِ چِين تَعَاكَى طرح قرارنه لِيمَّا هَا ٱخْرِ "اَلسَّعُنَىُ مِنِي**ُ وَالْإِنْمَامُ مِنَ اللَّهِ" (یعنی کوشش میری طرف ہے اور تھیل اللّٰہ تعالیٰ کی طرف ہے۔ ت) کہتا، کم هُمت چُست كرتا اور "حَسُبُنَا اللهُ وَنِعُمَ الُوَ كِيُلِ" (يعِن الله تعالى جميس كافي باوروه كيا بی اچھا کارساز ہے۔ت) پڑھتا اٹھا اور ان جواہرِ نَفییہ (یعنیء ہوتی) کا ایک خوشنما

ملفوظ ت اعلى حضرت (حصداذل) ہار تیار کرنا شروع کیااور میں اینے ربء ئے وَخل کے کرم سے امیدر کھتا ہوں کہ وہ اس ا ارہی کومیری جیت کا باعث بنائے ع اس دعا اَز مَن و اَز جُمله جهاں آمین باد (لینی به دعامیری طرف سے اورآ مین تمام جبان کی طرف ہے۔ت) وَاللَّهُ تَعَالَى وَلِيُّ التَّوْفِيُقِ وَهُوَ حَسُبِي وَهُوَ خَيْرُ رَفِيْقِ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى خَيْرِ خَلْقِهِ سَيِّدِنَا وَ مَوُلْنَامُحَمَّدِ وَاللهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِيْنَ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ (ترجمہ: اور اللّٰه تعالىٰ تو نین دینے والا ہے۔ وہ مجھے کافی ہے اور بہترین رفین ہے۔ اللّٰه تعالیٰ ورودوسلام اور برکتیں نازل فرمائے اپنے مخلوق میں ہے بہترین تعنی ہمارے آ قاومولی محمداوران کی الإنسام آل واصحاب يرـت) میں نے جاباتو رقعا کرروز اندے ملفو طات (مین ارشادات) جمع کرول گرمیری بے فرصتی آڑے آئی اور میں اینے اس عالی (یعن بلند) مقصد میں کامیاب نہ ہوا غرض جتنا اور جو کچھ جھے ہو سکامیں نے کیا ،آ گے قبول واجر کا اپنے مولی تعالیٰ سے سائل ہول "وَ هُو حَسُبي وَ رَبّي" (ليني وي ميرارب إدر جمع كافى ب-ت)وه اگر قبول فرمائے تو بھی میری مجڑی بنانے کوبس ہے۔ میں اپنے منتی بھائیوں سے امید واركده مجهب بعضاعت ومسافر يقوشنآ خرت كيليح دعافرها كيس كدرث البعرات تَبارَكَ وَتَقَدَّسَ إسهميرى فلاح ونجات كاذر بعد بنائے-آميسن آميسن بِسُحُرُمَةِ سَيِّبِ الْمُؤْسَلِيْنَ النَّبِيِّ ٱلْآمِيْنِ الْمَكِيْنِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ عَلَيْهِ وَعَلَى كُلِّ مَنْ هُوَ مَحْبُوبٌ مَّرُضِيٌّ لَذَيْهِ

Marfat.com

(مینی (اے الله) تمام رسواوں کے سرواعظیم وامین نبی کی عظمت کے صدیے قبل فرما۔ الله تعالی وزود مسلم مادر برستین وال فرما سے صفور براور جراس آ دمی بر جوصور کا پیندید وادر پیارا ہے۔ ت

ملفوظات اعلى حضرت (حصاؤل) سب سے پہلے س چزکو پیدا کیا گیا؟ مولا ناعبدُ الْعَلِيمِ صاحِبِصِمَدُ بقِي مِيرِهُي (عليه رمة الله القوى) حاضر خدمت تحصے انہوں نے عوض کی خُفُورسب سے پہلے کیاچیز پیدافر مائی گئی؟ اد شاد: حدیث میں ارشادفر مایا: يَاجَابِرُ إِنَّ اللَّهَ قَدُخَلَقَ قَبُلَ الْاَشْيَاءِ اے جابرے شک الله سُبُحَانَهُ تَعالَى نُوُرَ نَبيَّكَ مِنُ نُوُرِهِ نے تمام اشیاء ہے پہلے تیرے نبی کا نُور (كشف الحفاء، ج ١٠ نعت العديث ١٨٦، ص ٢٣٧) اين نورس بيدافر مايا _ عوض : حضورميرى مُر اددُنياكى مرچز سے يہلے سے ہے۔ ار شاد : ربُّ الْعِرَّت تَبارَكَ و تَعالى في جِارروز مين آسان اوردوون مين زمين (بنائی)۔ یک شنبہ تا جہار شنبہ(یعنی اتوار تابدھ) آسان ،و پنجشنبہ(یعنی جعرات) تا جمعہ زمین نیزاک جمعه میں بنین العصر والمغرِ ب (یعنی عصر ومغرب کے درمیان) آ وم علی نیبنا ا و عَلَيْهِ مُ الصَّلوةُ وَالسَّلام كو پيدِ افر مايا_ إ لے : اس جواب میں اعلی حضرت ملید رحمة رب اموت نے دویا تیس إرشاد فرما کیں (ایک) آسان کا زمین ے ملے پیدا ہونا اور (دوسرا) 4 دن میں آسان اور 2 دن میں زمین کا پیدا ہونا۔ أسنهان كا ذهبين من بعليه بييدا هونا: قران ياك كي جاراً بات مِن زين وآسان كَ كُلْيَ كَازَكر قُلُ اَلِيُكُمُ لَتَكُفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْاَرْضَ وَحِمهُ كَتِزالابِمان: تَمْ فِهَا وَكِيامٌ لوك الكااكار لِي يَوْمَيْن وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَلْدَادًا ﴿ وَلِكَ مَركَت بوص فِي ودون يَس زين بنائي اوراس ك رَبُ الْعَلَّمِينَ (ب،٢١حم السحده:٩) بمسرهمراتي مو وه بسارے جہان كارب ಯಯಯಯಯಾದ ನ್ನೆಗೆ: مجلس المدينة العلمية (۸ جابرای)

ملفوظات اعلى حضرت (حصداؤل) ترجعه كنزالايمان: والى يجس في تمهار ي هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُومًا فِي الْآرُض لئے بناما جو کچھ زمین میں ہے۔ بھر آسان کی جَمِيعًا و لُمُّ اسْتُواى إلَى السُّمَاءِ طرف استوا (قصد) فرما ما تو محمک سات آسان فسوهن سبغ سموت دوهو بكل بنائے دوسب یجھ جانتا ہے۔ شَيء عَلِيد (ب١٠١البقرة: ٢٩) ءَ أَنْتُمُ أَشَالُ حَلُقًا أَمِ السَّمَاءُ وَبَنها رَفَعَ ترجمه كنزالايمان: كياتماري محمد كمطابل مَمْ كُفِ فَمَوْهَا 0 وَأَغُطَشَ لَيْلُهَا مَهارابنانا مثكل إنّا الله فالشف اعبالااس وَأَخُورَ بَعْ صُلِحَهَا 0 وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكُ كَيْ صِيتَ اوْفِي لَي يُحراتُ صَلَى كال الله كارات اندھری کی اوراس کی روثنی حمکائی اوراس کے دَحْهَا 0 أَخُرَجَ مِنْهَا مَآءَ هَا وَمَرُعْهَا0 بعدز مین پیملائی اس میں ہے اس کا مانی اور جارہ وَ الْجِبَالَ أَرُمنْهَا 0 تكالداور يمارُ ون كوجمايا _ (ب. ۱،۳۰النازعات:۲۷ تا۳۳) إِنَّ زَبُّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمُواتِ ترجمهُ كنزالايمان: بينك تمهاراربالله وَالْأَوْضَ فِي سِنَّةِ أَيَّام (ب١١،يونس:٣) جم في آمان اورزين جيدن يم ناك ان آیات قرانی میس کسی آیت ہے آسان کا پہلے پیدا مونا معلوم ہوتا ہے اور کس سے زمین کا ۔ چنانچہ حصرت ابن عباس ودهیم مفسرین دخی انفرقعانی منبم کا کهنا ہے زمین پہلے بی (تفسیر ابس عبداس بونسس، تحت

الاندى مر ٢١٨) اور حفرت سيد ما قداده ، حفرت مدى اورامام بيضاوى رسى الله منال مم اس بات ك قائل إلى کہ آسان زین سے ملے پیدا ہوا۔ (نفسیر بیضاوی،ج ۱ مص ۲۷۶) اعلی حضرت علید مرد سام تائے وومر مے قول کے مطابق سوال کا جواب ارشاد فرمایا۔

دن میں آسمان اور 2دن میں زمین کا پیدا هونا: سورة لاس مل ب

إِنَّ زَمُّكُمُ اللَّهُ اللَّذِي خَلَقَ السَّمُواتِ ترحمهُ كنزالابمان: بيتك تمهادادب الله وَالْاَرْضَ فِي سِعَّةِ أَيَّام (ب١١، يونس: ٢) جس في الناورزين جِودل على بنائه-

عُرُصُ مطس المدينة العلمية (واحراساي

اس آیت مبارکہ میں ارشاد فرمایا گیا کہ آسان وز مین مجموعی طور پر 6 دن میں بے۔ کتنے دن

من آسان اور کتنے دن میں زمین؟ اِس کی تفصیل اس آیت مبارکہ میں نہیں ہے۔ چنانچ مفسرین اس بارے میں دوگر دہول میں بے ہوئے ہیں۔اعلی حضرت علید رحمۃ رب المؤت نے 4 دن میں آسان اور

ر جہ ہے۔ دورودوں میں ہے۔ در ہے ای کہ ان سے در ہے۔ ان ہے۔ ان ہے۔ ان کی ان میں ہے۔ ان کی ان میں ہے۔ ان کی ان میل 2ون میں زمین کا قول نقل کیا جوتغیر خازن جلد 2 صفحہ 99 پر فدکور ہے چنانچہ امام علاؤالدین علی بن مجمہ

بن ابراهيم خازن رمه الدنعال مله لكهة بين:

ترجمہ:۔مب سے پہلے اللہ تعالیٰ نے لوح وقلم کو پیدا کیا چراس نے ماکان و ما یکون کھا،اورجس

بید بیدا کیا وہی قیامت تک کا خالق ہے، پھر روشی اور تاریکی بیدا فرمائی پھر عرش بنایا ، پھر

روی اور تاریل بیدا فرمانی چرعرس بنایا ، چر آسان بنایا سپیدموتی ہے ، پھر زمین پیدا کی ، پھر

یں، پھراس نے زمین کو تھینچا اور اس برمٹی کو بچھایا جس سے بہلی تخلیق کی، پھر اس میں جو پکھ ہے

پہاڑ ، درخت ، جانور وغیرہ بنائے ، پھر آ دم علیہ

السلام کو جمعه کی آخری ساعت میں بنایا اور اس

دن زین کی طرف اتارا، تو پوری مخلوق کی تخلیق چددن میں مکمل ہوگئ _) قِيُلَ: أَوَّلُ مَا حَلَقَ اللَّهُ الْقَلَمَ ثُمَّ اللَّوُحَ فَكْتَسَ فِيُهِ مَا كَانَ وَمَا سَيَكُونُ وَمَا حَلَق وَمَا هُوَ حَالِقَ إِلَى يَوْمِ الْقَيَامَةِ ثُمُّ

حلق وما هو حالِق إلى يوم العيامةِ م حَلَقَ الظُّلُمَةَ وَالنُّورَ ثُمَّ خَلَقَ الْعَرُشَ ثُمَّ حَلَقَ السَّمَاءَ مِنُ دُرَّةٍ بَيُضَاءَ ثُمَّ حَلَقَ

التُّرْبَةَ ثُمَّ خَلَقَ السَّمْوَاتِ وَمَا فِيهَا مِنُ تُسُحُومٍ وَّشَمُسٍ وَقَمَرٍ ثُمَّ مَدَّ الأَرْضَ وَبَسَطَهَا مِنُ التُّرْبَةِ الَّتِى خَلَقَهَا أَوَّلاً ثُمَّ

وبسته بن الرج بي سب ورسم مُحلَق جَمِيعُ مَا فِيُهَا مِنُ جِئَالٍ وَشَحَرٍ وَدَوَابٍ وَغَيُرَ ذَلِكَ ثُمَّ مُحلَقَ ادَمَ آخَرُ

الْحَلْقِ فِي آخِرِ سَاعَةٍ مِّنُ سَاعَاتٍ يَوُمِ الْسُحُسِمُعَةِ وَفِيْسٍ أَهْبَطُ إِلَى الْأَرْضِ

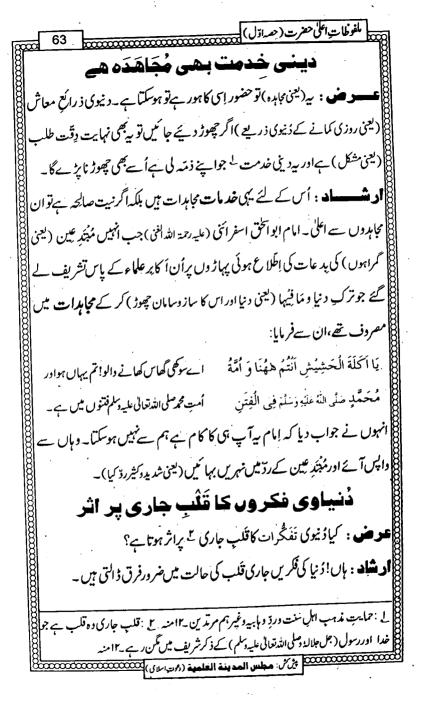
المستسمر ويب المحلق بي سنة أيّام. فَتَكَامَلَ حَمِيعُ الْحَلْقِ فِي سِنَّةَ أَيَّامٍ.

ا مام خازن روی الفتانی ملیے کے قتل کردہ اِس تول میں آسان اوراس کے متعلقات کے لئے چار ا جگہ خُسلَسق کالفظ آیا کہ یہ بعیدا کیا ، وہ پیدا کیا ۔ جے آسانی سے چاردن پرتشیم کیا جاسکتا ہے اور زمین وستعلقات کے لئے دوجگہ خَلق کالفظ آیا جس کا صرت مطلب یہ ہے کہ زمین کی پیدائش دودن میں ہوئی۔ (نوث: یہ حاشید حضرت مفتی عبدالمتان اعظمی راست برئاتم العالیہ کے مقالے'' زمین وآسان کی تخلیق'' ہے المخوذ ہے۔ علمیدہ)

في*ل ح:* **مجلس المدينة العلمية** (دارت الراي)

ملفوظات اعلى حضرت (حصدادّل) أُغُدُ عَالِمًا أَوُ مُتَعَلِّمًا أَوُمُسُتَمِعًا صح کر اِس حالت میں کہ تُو خود عالِم ہے یا أَوُ مُحِبًّا وَلَا تَكُنِ الْحَامِسَ مِعْلُم سِکھتا ہے یا عالِم کی باتیں سنتا ہے یا فَتُهُلِكُ (كشف الحفاء، الحديث ادفی ورجدید که عالم سے محبت رکھتا ہے اور یا نچوال نه ہونا که ہلاک ہوجائے گا۔ ٤٣٧، ج١، ص ١٣٤) غیرعالم کوق غظ کہنا حرام ہے عوض : كيا واعظ (يعنى ندبى بيان كرنے والے) كاعالم ہونا ضرورى ہے؟ ادشاد: غیرِ عالم کووعظ کہنا (مین ندہی باتوں کا بیان کرنا) حرام ہے۔ ا عالم كون؟ عوض : عالم كى كياتعريف ب? ا**د شاد** : عالم کی تعریف سی*ب که عقا ندسے پورے طور بر*آگاہ ہوا ور مستقبل ہوا ور یٰ خَرُ وریات کو کتاب سے نکال سکے بغیر کسی کی مدد کے۔ کیا عِلْم صرف کتابیں پڑھنے سے حاصل ھوتا ھے؟ عدف المثب بني (يعن كتابيل برهن) بي المعلم موتام؟ ا**ر شساد**: يېن نبيل بلكه لم " أفواه رجال" (يعي علم دالوں سے گفتگو) سے بھی حاصل ہوتا لي: آقائے بعمت اعلیٰ حضرت مجتِر و دین وملّت مولانا شاہ احمد رضاخان علیه رحمة الرحمٰ فقال کی رضوبیہ جلد 23 صغیہ 409 پر فرماتے ہیں'' جاہل اُر دُوخواں اگر اپن طرف ہے کچھ نہ کیے بلکہ عالم کی تصنیف پڑھ ک سنائے تو اِس میں تَرْ ج نہیں کہ اِس وَ قت وہ جاہل سفیر خض (بعن محض پنچانے والا) ہے اور هیقة وَ عظ أوس الم كاب حس كى كتاب يوهى جائے ـ "(نادى رضوية ٢٠١٥) ... عِلْمِيه 🚥 عُمُ كُن : مجلس المدينة العلمية (دارج الراي)

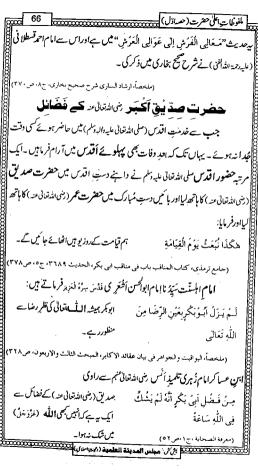
مُحَاهَدِ کے لئے کتنے، مُدَت در کار ہے؟ عرض: حضور امجابدے میں عمر کی قیدے؟ اد شاد: مجابدے کے لئے کم از کم اُستی برس درکارہوتے ہیں۔ باتی طَلَب ضرور کی عوف : ایک خص اسی برس کی عمرے مجاہدات کرے یا اسی برس مجاہدہ کرے؟ و شساد: مقصودیہ ہے کہ جس طرح اِس عالَم میں مُسَبَّبُ اِت (مُدَبُ دِبات) کو سباب سے مَر یُو طِفر مایا (یعنی جوزا) گیا ہے اُسی طریقیہ پراگر چھوڑیں اور تجذب و عنایتِ رہّانی 'بعید (بعنی دورنظر آنے والی منزل) کو قریب نیہ کرد ہے تو اِس راہ کی قُطّع (بعنی یے کرنے) کوانتی برس درکار ہیں اور رحمت توجّہ فرمائے تو ایک آن میں نصرانی (یتی میسانی) سے اَبدال علی کرویا جاتا ہے اور صدق نیت (مینی تجی نیت) کے ساتھ یہ مشغول مجابده موتو إيداواللي (عُزُوعَلْ) ضرور كارفر ماموتى إلله تعالى فرما تا ب وه جو جاري راه ميس محامده كري جم ضرور وَالَّذِيُنَ جَاهَدُوا فِيُنَا لَنَهُدِيَنَّهُمُ الہیں اپے رائے دکھادیں گے۔ سُبُلُناط (ب٢١، العنكبوت: ٦٩) لے :اعلیٰ حضرت عَلَيْهِ وَحَمَّهُ وَبُ الْجَوْتِ فَآلَا كَارِضُو بِيطِلد23صَّفِي 683 بِرِفَراتِ مِين مِسْدَكُو فَي جِيرُمِين ئیرے سُند یا فیہ محض بے بہر ہ (مین علم دین ہے خالی) ہوتے ہیں اور جنہوں نے سند نہ لیان کی شاگر دی كى لياقت بهى أن سَدَد يا نول من نبيس بوتى ، عِلْم بونا جائية _ (فأذى رضوية ٢٣٣ ص١٨٣) ... عِلْمِيه ع ::اہل تصوف کی اصطلاح میں اولیا واللہ کے ایسے گروہ کو ابدال کہاجا تا ہے جس کے پیروڈ نیا کا انظام



للفوظات اعلى حفزت (حصه اقل) سفر کونسے دن کرنا جاھئے؟ عد ف : سفر کے لئے کون کون سے دن مخصوص ہیں؟ ار شاد بننجشنششند دوشندر (یعنی جعرات ، ہفته ادر پیر) ،حدیث شریف میں ہے بروز شنبہ (یعنی ہفتہ)قبل طلوع آ قباب (یعنی مورج نکنے سے پہلے) جوکسی حاجت کی طلب میر فکلےاس کا ضامین میں ہوں۔ (كنز العمال، الفصل الثالث.....الخ، الحديث ١٦٨٠٨، ج٦، ص ٢٢١) ارای سلسائة تقریر میں فرمایا) بحد مُدِ الله دوسر باری حاضری حرمین طبینین میں یہال ہے جانے اور وہاں ہے واپس آنے میں اِنہیں تین دن میں ہے ایک دن میں روا گی مولَى تقى اور بفَضَلِهِ تعالى فقيركايوم ولادت بهي تَثْنَيْر (يعنى مفته) - -سیّدُنا صدّیق آکُبَر نے کس غُمُر میں اسلام قبول کیا؟ عوض : عرشريف حصرت ابو بكرصد ين رض الله تعالىء كى قبول اسلام كودت كياتهي؟ **ار شساد** : ۳۸ (اوسی) سال اورسوائے عثانِ غنی رضی الله عندے که حضور کی عمر شریف ا 🖍 🚄 🚾 🕹 ہرسہ (یعنی تینوں) خلفائے راشدین رضوان اللہ تعالیٰ علیم الجعین (میں سے ہم اید) کی عمر مبارک نیز عمر شریف حضرت امیر معاویبرض الله تعالی منتح**ضو یا قدس** سلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی عمر مبارک کے ہرا ہر ہو کمیں بعنی ۱۳ سال ۔ اگر چہ اِسمیس کچھروز وماه كم دبيش ضرورتهمي كيكن سال وفات يجي تفا_ (ملحصاً، تاريخ الخلفاء، ص١٤٦١٣١)

قبولِ اسلام سے پھلے سَیّدُنا صِدِّیق اکبر کا مذھب عوض: حضورصدیق اکبرض اشتال عدّبل قبول إسلام کیاند بسر کھتے ہے؟

ملفوظات اعلى حضرت (حصدادّل) **ار شساد**: صدیق اکبررض الله تعالی عنه نے بھی بُت کو**سجدہ** نہ کیا۔ ۴ برس کی عمر میں آ (رضی الله تعالی عنه) کے باب بُت خانے میں لے گئے اور کہا: هـ ولَكَ إِلهَا اللهَ السَّامُ المُعُلِي الله على الله الله على الله على الله على الله على الله على الماء الهيس تجده فَاسُنجُدُ لَهُمُ جب آپ بُت کے سامنے تشریف لے گئے ، فرمایا ''میں بھوکا ہوں جھے کھانا دے ، میں نْگاہوں مجھے کپڑادے، میں پھر مارتا ہوں اگرتُو خداہے تواینے آپ کو بیا۔''وہ بُت بھلا کیا جواب دیتا۔ آپ نے ایک پھراس کے ماراجس کے لگتے ہی وہ گریڑ ااور قوتِ خدا داد کی تاب نہلاسکا۔باپ نے بیرحالت دیکھی انہیں عصرآیا، انہوں نے ایک تھیٹر رخیار مبارک پر مارا،اور وہاں ہے آپ کی مال کے پاس لائے۔ساراوا قعہ بیان کیا۔ماں نے کہا:''اےاس کے حال پرچپوڑ دو، جب بیرپیدا ہوا تھا تو غیب ہے آواز آ کی تھی کہ يَا آمَةَ اللَّهِ بِالتَّحْقِينِ آبَشِرى الالله (عَزُوحَلُ) كَي كِي لوندُي تَجْ يالُولَدِ الْعَتِيُقِ إِسُمُهُ فِي السَّمَاءِ مرده بواس آزاد يحكا، آمانول مين اس الصِّدِّيْتُ لِمُحَمَّدٍ صَاحِبٌ وَّ كَانَامِ صَدِيقٍ مِهُمُ صَلَى الله تعالى عليه وملم كاياد رَفِيْقٌ (صلى اللهُ تَعالى عليه وسلم) ور فق ہے۔ میں نہیں جانتی کہ وہ محمد ملی اللہ علیہ وسلم کون ہیں اور مید کیا معاملہ ہے؟ '' اُس وقت سے صدیق اکبر(رضی اللہ تعالی عنہ) کوکسی نے شرک کی طرف نہ بلایا۔ بیدروایت صدیقِ اکبر (رض الله تعالى عنه) نے خوم مجلس اقدس (ملی الله تعالی علیه واله وسلم) میں بیان کی جب بیہ بیان كر يك، جبريل المين حاضر بارگاه موئ (مليه السلاة والسلام) اورعرض كي صَدَقَ أَبُوبَكُرٍ وَهُوَ الصِّدِّينُ الدِهِرَ فِي كَهَا اوروه صديق بير 🕰 🖏 ثن المدينة العلمية (رارت الال) 🚃 🗴



ملفوظات اعلى حضرت (حصداۆل) جا ئزنہیں۔ وہ تنخواہ ^ک اگر اُس **نا یا ک آمد نی** ہے دیے تو وہ بھی حرام **قطعی** اوراگر اُس کے ہاتھ کوئی چیز نیچی ہواور وہ اپنے ای مال ہے دے اس کالینا قطعی حرام، البتہ اگر قرض لے كر قيت دے توج**ائز ہے**۔ واللهُ تَعَالٰي أَعُلَمُ ناك میں چڑھنے والے دودہ سے رَضاعت كا حكم عوض: اگریج کی ناک میں کی طرح دودھ پڑھ کر صَلَق میں بھنج گیا ہوتو کیا تھم ہے؟ اد **شبان** : منه پاناک سے عورت کا دورہ جو بچے کے جوف (یعنی پیٹ) میں <u>ہنچے</u> گا حرمت رضاعت لا يگا۔ ر دہی فتو کی ہے جو چورہ شعبان <u>۱۲۸۱ ھ</u>کوسب سے پہلے اس فقیر نے لکھا اورای ۱۳ شعبان ۲۸۲ هر کومنصب افراعطا ہوا، اورای تاریخ ہے ہے مُدِ اللّٰہ . أعدالي نماز فرض بوكي اورولا دت•اشوال اكمكرّ م<u> ٢٣٢ ه</u>رو زشنبه (يعن بفته) وقت ظهر مطابق ۱۳جون ۱۹۸۱ء، ۱۱ جیڑھ سدی ۱۹۱۳ سمبت کوہوئی تومُنصُب اِ فرا ملنے کے وقت فقیر کی عرس ابرس دس مهیند جاردن کی تفی جب سے اب تک برابر یہی خدمتِ وین لی إجارى ب وَالْحَمُدُ لِلَّهُ ا: قران عظیم کی تلاوت پر اُجرت لینا وینا دونوں حرام ہیں۔ نبی ملی اللہ تعالی علیہ وسلم فرما۔ میں"افیراؤ القرآن و لا ناکلوا به"(ترجمہ:قران پڑھواوراسےخوردنی (لیعنی کھانے) **کا**ذر بعیرتا بناؤ ہے)(داری ہیں کفشا کل القرآن مسنداحہ بن ضبل ،ج ۳ ہیں ۳۵۷) ہاں جبکہ خاص تلاوت پر معلبد نه ہوا ہومثلاً ایک حافظ کو ملازم رکھا اوراس کے متعلق چھر بیکا م بھی کر دیا تواب اسے تنحوا ولیسا جائز ہے کہ وہ اجرت تلاوت قران کی نہیں بلکہ اس کے وقت کی اجرت ہے یہی مقصو دِاعلیٰ حضرت ہے اوہ تعلیم قران بخوف ذہاب قران پرجواز اُ جرت کا فتوی متاخرین نے دے دیا ہے۔ اگر میصورت ہوتھ جی جائز ہےاور تحض تلاوت پراجرت کاوہی تھم ہے۔ IT

رُکوع وسجود میں ٹھہرنے کی مقدار

عوض : رُكوع و جود ميں بقدر سُبحان الله كهد لينے كهرناكافى ہے؟

ادشاد: بال رُكوع وجودين إناهم نافرض م كدايك بار سُبحاد الله كهد سكر

ورد المحتار على الدر المحتار ، كتاب العمالاة مطلب كل صلاة ادبت مع كراهة التحريمالح، ح٢، ص ١٨٤)

جوز کوع و بجود میں تعدیل (یعن اہیں ضرخم کرادا)نہ کرے ساٹھ برس تک اِی

طرح نماز پڑھائ کی نمازی قبول نہوں گی۔ صدیث میں ہے:

إِنَّا لَهُ مُنَّ عَلَى ذَلِكَ مَا لَا يَشَرِّتُ مِي كَا أَرُو إِي عال بِ اللهُ عَلَى غَيْر الْفَتُرَةِ أَى غَيْر مرا تو وين محمل الله تعالى عليه وكلم يرنه

دِيُن مُحَمَّدٍ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مركار

(ملتقطاً، صحيح البخاري كتاب الاذال باب اذالم يتم الركوع، الحديث ٧٩١، ج١، ص ٢٧٨)

کیا هر مُمُکن چیز پیدا هو چکی هے؟

عيوض: كياجس قدرممكنات بين وه تحتِ قدرت باين معنی (يعنی اس طور پر السله

جارك وتعالى كى قدرت من) داخل ہيں كد إن كو بيدا فرما چكا ہے؟

ار شاد ، نہیں بلکہ بہت ی چیزیں وہ ہیں جومکن ہیں اور پیدانہ فر مائیں مثلاً کو کی شخص ایساً پیدا کرسکتا ہے کہ مرآسان سے لگ جائے مگر پیدانہ فر مایا۔

جِنَ و پری کا مسلمان هونا

عوض : حضور کیاجن و پری بھی مسلمان ہوتے ہیں؟

ا و الله ١١١ ج ١٨ ص ٢٥٤) المعظيم، ب٢٦، المعن تحت الابة ١١١ ج ١٨، ص ٢٥٤)

*يُثُرِّنُ: م***جلس المدينة العلمية** (رُوتِ الأول)

مسلمان پَری کی حکایت

(اورای تذکره مین فرایا) ایک بری مشرف باسلام جوئی اورا کش خدمتِ اقدس

میں حاضر ہواکرتی تھی ایک بارعرصہ تک حاضر نہ ہوئی۔ جب حاضر ہوئی سب دریافت

ہ فر مایا عرض کی حضور امیر ےاکیے عزیز کا ہندوستان میں انتقال ہوگیا تھا وہاں گئی تھی۔راو

میں مَیں نے دیکھا کہ ایک پہاڑ پر اہلیس نماز پڑھ رہاہے میں نے اس کی بینی بات دکھے کر کہا کہ تیرا کا مرتو نماز سے مافل کر دینا ہے تو خود کیسے قماز پڑھتا ہے؟ اس نے کہا کہ

شابدرے العزت تعالی میری نماز قبول فرمائے اور بچھے بخش دے۔

پیر کے وصال کے بعد کسی اور سے بَیْعَت هونا کیسا؟ عوض: زیر بحرشرمال صاحب بِل بھی ل (طیرد: اشالمادی) سے بعت ہوا۔ تھوڈ

عرب عن : رید برسر سرای صاحب بین می از عید رود اساماه دی سے اور در در عرصه بوا که اُنکاو صال ہو گیا اب کی اور کا **مرید** ہوسکتا ہے؟

اد شاد: تبديل بيت بلا وجه شرى ممنوع باورتجديد جائز بلكمنتخب ب-

سلسائر عالیہ قادر یہ میں (مرید) نہ ہوا ہوا در اپنے شخ سے بغیر اِنحراف کے (لیمیٰ بیت قرز بے بغیر) اِس سلسلہ عالیہ میں **بیعت** کرے، بیتبدیلِ بیعت نہیں بلکہ **تجہ بیدے کہ**

ور ہے ہے) جمیع سَل سِل اس سلسلۂ اعلٰ (یعن سلسلۂ تاریب) کی طرف رَاجِع (یعن متوجہ) ہیں۔

مُرِیدھونا اِس سے سیکھو

(اى سليط من ارشاد بوا) تين قلندر نظام الحق والدين محبوب اللي ففدر بدرة

المغرب کی خدمت میں حاضر ہوئے اور کھانا ہا گا۔ خَدَ ام کولانے کا حَمَم فرمایا۔ خاوم نے جو کچھائں وقت موجود تھا ، اُن کے سامنے رکھا۔ اُن میں سے ایک نے وہ کھانا اٹھا کر

Marfat.com

مرزي مواس المدينة العلمية (٨جاس)) 🚥 📆 🔾 مواس المدينة العلمية

کھینک دیااورکہا **''احجما کھانالاؤ۔''**حضرت نے اس نا ثنا ئستہ حرکت کا کچھ خیال ن فر مایا ۔ خذ ام کو اِس سے اچھالانے کا حکم فر مایا ۔ خادم پہلے سے اچھا کھانالایا ، انہوں نے پھر **پھینک** دیا اور اس سے بھی **اچھا م**ا نگا۔حضرت نے اور اچھے کا حکم دیا _غرض اُنہوں نے اِس باربھی **بھینک** دیا ،اور اِس ہے بھی **اچھا** ما نگا۔ اِس پراُس قلندر کواییے یاس بلایا اور کان میں ارشاد فرمایا: که ریکھانا اس مُر وار بیل سے تو اچھا تھا جوتم نے راستہ میں کھایا۔ یہ سنتے ہی قلندر کا حال متغیر (یعن تبدیل) ہوا۔ راہ میں تین فا قوں کے بعدایک مراہوا بیل جس میں کیڑے پڑگئے تھے ملاتھا،اُسکا گوشت کھا کرآئے تھے۔ قلندر حضور کے قدموں پر گرا۔حضور نے اس کا سراٹھا کراینے <u>سینے سے</u> لگالیااور جو پچھ عطافر مانا تفاعطا فرماديا _اس وقت وه وَجُديين رَنْص كرتا اوربيهُ تهتا تفا كهمير مع مُرشِد نے مجھے نعمت عطا فرمائی ہے۔ حاضرین نے کہا: بیوقوف جو کچھے کھے ملاوہ حضرت کا ع**طا کیا ہوا ہے۔** یہاں تک تو تُو بالکل **خالی آی**ا تھا کہا: بے وقوف تم ہواگر میرے **ر جند** نے مجھ پرنظر نہ کی ہوتی تو حضور کیوں نظر فر ماتے ، بیاُ سی نظر کا ذریعہ ہے۔اس يرحفرت نے كها بيائ كہتا ہا در فرمايا" بھائيو! مُريد ہونااس سے سيھو۔" گائے کی قربانی ا كيك روز (اعلى حفرت رمة الله تعالى عليه) بعد نما زِعصر منجد سے تشريف لائے س وقت حاضرین میں مولا نا امجدعلی صاحب عظمی (علیه رممة الله النی) بھی تھے، رسالہ سُ الْفِ كَر فِي قُرُبَان الْبَقرِ" ان دنول طبع بور با تقاراس ميں مولوي عبد الحي 🚥 قُلُّى مطس المدينة العلمية (راحِ الال)

ملفونطات اعلى حضرت (حصاؤل) 🛭 صاحب کے دوفتوے کہ قربانی گاؤے متعلق تھے،اس رسالہ میں نقل کئے گئے تھےای رساله کی نسبت تذکره مور با تفاران فتو و ساکتھی ذکر آیا۔ اس برمولا ناسے فر مایا: **ار شاد** : مولوی صاحب ُ بُنُود (یعنی ہندویں) کے دھوکے میں آ گئے ،مسلمانوں کے خلاف فتویٰ لکھے دیا۔ تنبیہ (بعن مجھانے) برمتنبہ (بعیٰ خردار) ہوئے ۔ یہی سوال میرے يا*س بيمي* آياتھا بـفَضُلِهِ تعالى بنگاواۆ**لي**س(يعنى *بېلىنظر مي*س)مكرِ مكارال(يعنى مكاروں ک علاک) پیچان گیااور "گُرز بَسه کُشُتَن روز اول باید" (نیخ برانی کو پہلے بی دن روك ويناح بيئ -ت) يمل كيا- ولله الحمد اپنے فھم پر اعتماد کے نقصانات عبر فن : حضور إن كے قماوے ديكھنے ہے معلوم ہوا كہ إن كے اكثر أقوال متعامِ خر (لینی متناد) ہیں اور بیاس کئے کہ بیائے فہم پر ہوا اعمّا وکرتے تھے۔ اد شاد : بال اين فيم براعتاد اوروه بهي ائمه كرام كمقابله ير كبيل كلهة بن "وَاسْتَدَلُّوا لِآبِي حَنِيفَةَ بِوُجُوهٍ وَالْكُلُّ بَاطِلٌ ابوضيك لَيَ كَاطر ٥ لِيلِر لائے اورسب ماطل ہیں۔'' كبيس "قَالَ أَبُو حَنِيفَةَ كَذَا وَالْحَقُّ كَذَا الوحفيف لول كبااور في يول با ا مام محد دمنى الله قالى عزكو كميتر جيل " هه خَدا وَهُدُّم احَدُ لِصَاحِبِ الْكِتَابِ يهال كتاب دالے كاايك اور وہم ہے۔" آومی کواپی حالت کالحاظ ضرور ہے نہ کدایے کو پھولے یاستایش مردم (بین آدمیوں کے تعریف کرنے) پر چھولے، اپ نفس کاعلم تو حضوری ہے۔ علما نے اتن

ملفوظات اعلى حضرت (حصداؤل) تیمیہ کولکھاہے:"عِلْمُهٔ اَکْبَرُ مِنُ عَقُلِهِ" اُس کاعلم اس کی عقل ہے بڑا ہے عِلم نا بع وہ جس کےساتھ فقاہت ہو۔ ايك عجيب وغريب مَسْنَله (ای ضمن میں ارشاد فرمایا) مولوی (عبدالحی)صاحب نے اپنی کتاب نَفُعُ الْمُفُتِى وَالسَّائِل ''مِين جس مِين خود بي سائل اورخود بي مُجِيب (يعني جواب ديے والے) ہیں ، سوال وجواب کو استِفسار و اِستِبشار لکھاہے ۔ ایک سوال قائم کیا کہ جس مکان میں جانور ہو ، کوئی آ دی نہ ہووہاں جِماع جائز ہے یانہیں؟ اس کا جواب لکھا '' ناجائز ہے۔''اس جواب سے لا زِم کہ مکان سے تمام مکھیوں کو نکا لیے اور حیاریا ئیاں تھٹملوں سےصاف کرےاور بیر نکلیف مَالاً یُطاق ہے(لینی ایے کام کا یابند بنانا ہے جس کے کرنے کی طانت نہ ہو) حالا نکہ فقہا تصریح فرماتے ہیں '' جو بچہ بھتااور دوسرے کے مامنے بیان کرسکتا ہو،اس کے سامنے جماع مکروہ ہے در نہ حرج نہیں۔' (الفتیادی الهندية كتاب السكاح، مطلب عدد النياب المتعة، ج ١، ص ٢٠٤) أو جب ناسمج المي كي ك ما منے جائز ہے حالانکہ آ دمی ہے۔ جانور کے سامنے کیوں ممانعت؟ ناسمجہ بچے کے سامنے جماع کیٹوں ممنوع ہے؟ **مؤلف**: فقہائے کرام نے میشرط کیوں زائد کی کہ غیرسے بیان کرسکتا ہو محض سمجھنا كافى تها،اوراس يريبهى الزام آتا ہے كه كوئے ايا جى كے سامنے جائز ہواورا ہے كى طرح عُقَال تعليم كرنے كے لئے تيار نہيں ہے۔

🎞 🅉 : مطس المدينة العلمية (الرجاء الراي)

ملفوظات اعلی حضرت (حصه اوّل) ار شاد : سمجھنے کے دومعنی ہیں **ایک**نفس حرکات کو مجھنا، بیہ بیچے میں قوت بیان (مین بولنے کی طاقت) آنے سے بہلے ہوتا ہے اور (دوسرا) میسجھنا کد بدحر کات شرم وحیا ہیں،ان کا اِٹھا (یعنی چمیانا) ضرور ہے۔ بیقوت بیان آنے کے بہت بعد ہوتا ہے۔ بیان کے لئے پہلا مجھنالازم ہاورای قدر ممانعت کے لئے کانی کے خوداً کرجہ ہے کوئی امر شرم دحیانہ مجھا مگر دوسر دل ہے کہ یقو سکے گا بخلاف دوسر مے عنی فہم کے کہ د وما نع ستقل (بعن مستقل زکارٹ) ہے ، اس میں دوسرے سے بیان کی حاجت نہیں تو جس میں دوسر مے عنی کا مجھنا ہو، اس کے سامنے بدرجہ اولی مطلقا مما نعت ہے آگر جہ بیان نہ کر سکے۔ تاریخ کی اِبْتداد اِنْتِها کے 4 طریقے عد من : حضوراً ج كما بهلي تاريخ ي؟ اد شاد : بیلی تاریخ تقی کل جاند ہوا، آج دوسری شب ہے۔ تاریخ کی ابتدادانتها میں جارطریقے ہیں: ایک طریقہ نصاریٰ (مین میسائیں) کا کسان کے بہال نصف شب سے نصف شب تک تاریخ کا شار ہے۔ وومرا بُزُور این بندوں) کا کے طوع آ فآب سے طلوع آ فآب تک ، تیسرا طریقہ فلاف یونان کا سے کہ نصف النہار سے نصف النبارتك علم ميمات يس يبي ماخوذ ب- چوتفاطريقة ملمانون كاكونروب آ نآب ے غروب آ نآب تک اور بی عُقْلِ سلیم پیند کرتی ہے کہ ظُلمت (مین اعرمرا) انورے پہلے ہے۔ کیا گانے کا گوشت صحت کے لئے نقصان دہ ہے؟ ف عض : حاضر بن مي كائ كا كوشت كها في كا دراس كي مُضِر (يعني نقصان ده)

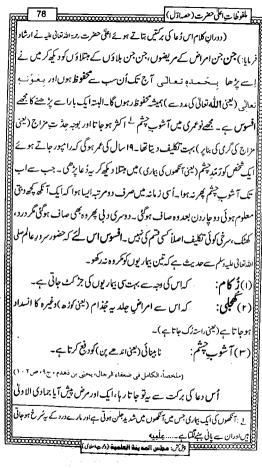
ت زدہ کو دیکہ کر بڑھی جانے ہ الی ڈعا کی برکتیں ا یک صاحب نے میری دعوت کی ، باصرار لے گئے ۔ان دنول جناب سَیّا ہیپ اللہ دمشقی جبلانی (علہ رحة اللہ الغی)فقیر کے یہاں مقیم تنظے ،ان کی بھی دعوت تھی میرے ساتھ تشریف لے گئے ۔ وہاں وقوت کا بیسامان تھا کہ چندلوگ گائے کے لیاب بنار ہے تھے اور حلوائی توریاں ، بیہ ہی کھانا تھا۔سیدصاحب نے مجھے نے فرمایا : '' تُو گائے کے **گوشت** کا عا دی نہیں اور بیاں کوئی اور چز موجو زنہیں بہتر کہصاحب خانہ سے کہد دیا جائے۔''میں نے کہا کہ'' یہ میری عادت نہیں۔'' کے وہی یوریاں کہا ب کھائے ۔اُسی دن مسوڑھوں میں وَرُم ہوگیا اورا تنا بڑھا کہ خُلْق اور موزھ بالکل بند ل : المام الل سنت مجد ودين ولمت الشاه مولا تا احدر ضاخان مليدهة الرحن فبآذي رضوبي جلد 1 2 صفحه 652 پر نکھتے ہیں:'' کھانے میں عیب نکالناایے گھر پر بھی نہ جا ہے بھروہ وخلاف سنت ہے۔ (سر کا بروء عالم صلّی الله تعالی علیه والدوسلم کی) عادت کریمه میتمی که پسند آیا تو تناول فرما یا ور نهبیس اور برائے مگمر عیب نکالنا تو (اس میں) مسلمانوں کی دل علی ہے اور کمال حرص و بسمروتی پر دلیل ہے۔ ''تھی کم ہے یا عزہ کا نتی " بیعیب نکالنا ہے اور اگر کوئی شے اسے معز (نقصان ویق) ہے، اسے نہ کھانے کے عذر کے لئے اس کا اظهار کیا نه (که) بطویطین دعیب مثلاً اس میں مرچ زائد ہے میں آئی مرچ کا عادی میں تو بیعیب فکالنا نہیں اور اتنا بھی (اس وقت ہے کہ جب) بے تکلفی خاص کی جگہ ہواوراس کے سب وعوت کنندہ (لیٹنی میز بان) کواور تکلیف ند کرنی پڑے مثلاً دوقتم کا سالن ہے،ایک میں سرچ زائد ہے اور پیعادی نہیں تو اے نہ کھائے اور دجہ پوچھی جائے بتاوے۔اوراگر ایک ہی تم کا کھانا ہے،اب اگر (پ)نہیں کھا تا تو وموت کنندہ (لینٹی میزیان) کواس کے لئے بچھے اور شکوانا پڑے گا ، آہے ندامت ہوگی اور تک وست

Marfat.com

ہے تو تکلیف ہوگی ایک حالت میں مروت یہ ہے کہ صبر کرے ادر کھائے اور اپنی اذیت کھا ہر شکرے۔

والله تعالى اعلم (قادى رضويه ، ١٦٢ ، ١٥٣) (عِلْمِيه)

ملفوظات اعلى حفرت (حصاؤل) ہو گیا۔مشکل سے تھوڑا دُودھ حلق ہے اُ تارتا،اوراسی پراکتفا کرتا،بات بالکل نہ کرسکتا تھا یہاں تک کہ قراءَ ت بسر یہ (یعیٰ آہتہ قراءت) بھی میسر نہ تھی سنتیں بھی کسی کی إقتد ا كركے اداكر تا_اس وقت مذہب جنفي ميں عدم جوازِ قِراءَ ت خَلُفَ الإُمَام (يعني امام کے پیچے قراءت جائز نہ ہونے) کا پیفیس فائدہ مشاہدہ ہوا۔ جو پچھکی ہے کہنا ہوتا لکھ دیتا، بخار بہت شدید تھااور کان کے بیچھے کلٹیں میرے مخطے (یعنی مجھے چھوٹے) بھائی (مولانا حسن رضاخان) مرحوم ایک طبیب کولائے۔ اُن دنوں بریلی میں مرضِ طاعون ^{لی}بشد ت تھا۔ اُن صاحب نے بغورد کھے کرسات آٹھ مرتبہ کہا '' پیوہی ہے! وہی ہے!وہی ہے! ینی طاعون ۔''میں بالکل کلام نہ کرسکتا تھا اس لئے انہیں جواب نہ دے سکا ، حالا نکہ میں خوب جانتاتھا کہ بیغلط کہدرہ میں نہ جھے طاعون ہے، نہ اِن شدآء اللّٰهُ الْعزيز بھی ہوگا ،اس لئے کہ میں نے طاعون ز دہ کود مکھے کر بار ہاوہ ڈیما پڑھ لی ہے جے حضور مرورِعالم صلی الله تعالی عایه دیلم نے فر مایا : جو خف کسی بلا رسیدہ کودیکھ کرید دُ عایرٌ ھے لے گااس گابلا ہے محفوظ رہگا۔ مصیبت زدہ کو دیکہ کر پڑھی جانے والی دُعا **8** وه دُعابيب. النحمدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا معن تمام تعریفی اس الله تعالی کے لئے جس ابْتَلاک بـ ، وَفَصَّلَنِيُ عَلَى كَثِيرُ نے مجھے اس سے بچایا جس میں تُو مبتلا ہے اور مجھے ای مخلوق میں سے کشر لوگوں پر فضیلت المَّمِّنُ خَلَقَ تَفُضِيُّلا ط عطافر مائی به ت (جامع ترمذي ، كتاب الدعوات باب ما يقول اذا راي مبتلي، الحديث ٣٤٤٢، ج٥، ص٢٧٢) ا : الك بلاكت خيزياري جس من جسم يركلنيان لكتي بين اورتيز بخار موتا بـ عِلْمِيه



ملفوظات اعلى حضرت (حصداذل) <u> ۱۳۰۰ ھیں بعض اہم تصانیف کے سبب ایک مہینہ کامل باریک خط کی کتابیں شیانہ روز</u> عَلَمَ الْإِنِّصال (يعنى رات دن ملل) ديكهنا بوا ـ گرمي كاموسم تها ، دن كواندر كے دالان میں کتاب دیکھتا اور لکھتا ،اٹھا کیسواں سال تھا،آنکھوں نے اندھیر ہے کا خیال نہ کیا . ا یک روز شدّ ت گرمی کے باعث دو پہر کو لکھتے لکھتے نہایا۔سریریانی پڑتے ہی معلو، ہوا کہ کوئی چیز د ماغ سے ڈنی آنکھ میں اُتر آئی۔ بائیس آنکھ بند کر کے ڈنی ہے دیکھا تو وسط شے مَرُ کی (یعنی نظرآنے والی چیز کے درمیان) میں ایک سیاہ حلقہ نظر آیا۔اس کے ینچے شے کا جتنا حصہ ہواوہ ناصاف اور د باہوامعلوم ہوتا۔ یہاں اس ز مانہ میں ایک ڈاکٹر علاج چثم میں بہت سر بر آوردہ تھا۔سینڈرس یا انڈرس کچھالیا ہی نام تھا۔ میرےاستاذ ^{کے} جناب مرزاغلام قادر بیگ صاحب رمیۃ اللہ تعالیٰ علیہ ^{کے} نے اِصرار فر مایا لي حضرت مرزاصاحب مرحوم مغفوراعلي حضرت قبله كے استاد بھي تھے كەحضرت قدى سرە نے ابتدائي تعليم مرز ب سے بچھودن حاصل کی اوراعلی حصرت رضی اللہ تعالی عنہ کے شاگر دہجی تھے کہ بعض کتب درسیہ غالبًا ہدا ر وغیره انہوں نے حضور پرنور مرحوم مغفور سے پڑھیں۔ ۱۲٪ بیمال مرز اغلام قادر بیگ صاحب رحمۃ اللہ تعالی علیہ سے مرزا قادیانی کا بھائی مُر ادنہیں ، کیونکہ وہ 1883ء مرا ۳۰ اچدیں فوت ہو گیا تھا جبکہ اعلیٰ حضرت کے أستاذ بحتر م مرز اغلام تادر بيك صاحب رممة الله تعالى عليه كي پيدائش كيم محرم ١٢٨٣ه هر 25 جولا ئي 1827 ء کی ہےاورس وفات کیم محرم ۱۳۳۷ ھر 18 اکتوبر 1917ء ہے۔مولا نامرز اغلام قادر بیگ رحمہ اللہ تعالی علیہ نے اعلیٰ حضرت بلے رویہ رب امنز ہے کے پاس ایک استفتا جمیجا، جس کے جواب میں اعلیٰ حضرت بلیہ رویہ ر ۶۹ - نے ۱۳۰۵ هیں تاریخی نام سے ایک رمالدکھات جسلسی الیسقیس بسسان نبیت موسلین (۱۳۰۵ه) - پھریمی مولاً نامرزاغلام قادر بیگ 1310 ه بین کلکتہ سے استفسار کرتے ہیں، ر1311 ھاور1312 ھيں کلکته ہي فتو کي طلب كرتے ہيں۔ پھر كلکته ہي سے 1314 ھيس اعليٰ هنرت طیررته رب ۱۸ سے سوال کرتے ہیں ۔ بیفتو ہے، فبآ د کی رضوبیہ، جلد 22 بص 152 ، فبآ د کی رضوبہ (قدیم)،جلد 3 ص32 ـ نمآو کی رضویه،جلد 11 ،ص 45 (رضا فا وَندْیشْ لا ہور) پرموجود ہیں، نیہ کیسے ہوسکتا ہے کہ جو خص 1301 ھے میں فوت ہواور پھر دوبارہ 1305 ھے میں زندہ ہوجائے اور کی سال تک نة ے طلب کرے؟ (عِلْمِیه)

کہ اے آئکھ دکھائی عائے ۔ع**لاج** کرنے نہ کرنے کا اختیار ہے۔ ڈاکٹر نے ا ندھیرے کمرے میںصرف آئھ برروثنی ڈال کرآلات سے بہت دیرتک بغور دیکھ اور کہا: '' کثرت کیاب بنی ہے کچھ نیوُسُت (یعنی نشکی) آگئی ہے۔ بندرہ دن کیار نہ دیکھو۔''مجھ سے بندرہ گھڑی بھی کتاب نہ چھوٹ سکی ۔مولوی حکیم سیراشفاق حسین ما حب مرحوم سہوانی ڈیٹی کلکٹر طیابت بھی کرتے تھے اور فقیر کے مہربان تھے فرمایا: ۔ مُقدمہ نزول آپ ہے(یعنی یانی اُتر نے کے آثار ہیں) ہیں برس بعد (خدانا کردہ) یانی اُتر آئے گا (یعیٰ موتیا کے مرض کی وجہ ہے بینائی جاتی رہےگی)۔''میں نے اِلتّفات نہ کیا (یعیٰ توجہ نه دی) اور مز ول آب (مین موت کی بیاری)والے کو دیکھ کر وہی دُعا بڑھ کی اور اپنے محبوب صلی اللہ تعالی علیہ رسلم کے إرشاد باک برمطمئن ہوگیا ۔۲۱۳۱۱ھ میں ایک اور حافی ق (یعنی اہر)طبیب کے سامنے ذکر ہوا، بغور دیکھ کر کہا جار برس بعد (خدانخواستہ) یانی اُثر آئگا۔ان کا حیاب ڈیٹی صاحب کے حیاب سے بالکل موافق آیا۔انہوں نے ہیں ارس کے تھے، انہوں نے سولہ برس بعد حیار کہے۔ مجھے محبوب سلی اللہ تعالی علیہ ہلم کے ارشاد اروه اعمّاد ندتها كرطبيبول كركهني يصمعًاذَ الله متزازل (يعنى كزور) موتار ألْحَمدُ لِلله کہ ہیں در کنارتمیں برس سے زائد گزر جکے ہیں ، اور وہ حلقہ ذرہ بھرنہیں بڑھا۔ نہ عَوْبِهِ تعالى بوص، نديس نے كتاب بني ميس بھى كى كى، ند إن شآء الله تَعَالى كى روں۔ پیرمیں نے اس لئے بیان کیا کہ بیرسول اللہ ملی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے دائم وباقی بجزات ہیں جوآج تک آنکھوں دیکھنے جارہے ہیں اور قیامت تک اہلِ ایمان مشاہدہ کریں گے، میں اگرائنی واقعات کو بیان کروں جو اِرشادات کے منافع مَیں نے خو ا یی ذات میں مشاہدہ کئے توایک دفتر ہو۔

لمفوظات اعلیٰ حفرت (حصادّل) منسسسسسسسس (پ*ھر فر* مایا) **مجھے** ارشادِ حدیث پراطمینان تھا کہ مجھے **طاعون بھی** نہ ہوگا _آخر شب میر كرب (يعني درد) برد ها،مير ب دل نے در گاوالي (عَــرُوْ حَـلٌ) ميں عرض كى: `` اَلــلّهُــةً صَدِق الْحَبِيُبَ وَكَذِّب الطَّبِيُبَ "(يعنى الله عَزُوَعَلَ اين صبيب كاسچا اورطبيب كا 🖁 جموناہونا ظاہر فرمادے۔ت) کسی نے میرے داہنے کان برموزھ رکھ کر کہا کہ مسواک اور ا الله مرچیں ۔لوگ باری باری سے میرے لئے جاگتے ۔اسونت جو شخص جاگ رہاتھا میں نے اِشارے سے اسے بلایا اور اسے مسواک اور سیاہ مرچ کا اشارہ کیا۔ وہ مواک توسمجھ گئے ، گول مرچ کس طرح سمجھیں غرض بمشکل سمجھے۔ جب یہ دونوں چزیں آئیں بُدقَت (لین بمثل) میں نے مواک کے سہارے برتھوڑ اتھوڑ امنہ کھولا اور دانتوں میں مسواک رکھ کر چھوڑ دی کہ دانتوں نے بند ہوکر دبالی۔ پسی ہوئی مرجیں ای راہ سے داڑھوں تک پہنچا ئیں تھوڑی ہی دیر ہوئی تھی کہ ایک کلی خالص خون کی آئی مگر کوئی تکلیف واذیت محسوس نہ ہوئی۔اس کے بعد ایک کلی خون کی اور آئی بحمد الله تعالى و گلئيس جاتى رئيس مونه كل كيا- ميس فالله تعالى كاشكراداكيا اورطبیب صاحب سے کہلا بھیجا کہ آپ کا وہ طاعون بفَصُلِه تَعالی دفع (یعی دُور) ا موگيا، دوتين روزيس بعَوُنِهِ تعالى بخار بھي جا تار ہا۔ طاعون کا سبب **سۇلىغ** : چونكداً ثنائے گفتگو م**ين طاعون ك**اذ كرقعالېذامولا نامولوى *حكيم*امج*د على* ا صاحب نے بو*ں عرض کیا۔* عوض : غالبًا يبلائين كفارجن مول_

Marfat.com

ر ہتا ۔اب آپ نے اس حال میں کہ جھے بیل دیکھا (اور) کلام فرمایا، بین میں کوئی بیل شدر ہے گا۔ یہ کہ کرعائب ہوگیا۔ یہ الله تعالیٰ کی اپنے بندوں پرومت تھی کھ ہ الفوظاتِ اعلیٰ حضرت (حصاؤل) <u>مسمسسسسسسسس</u> 83 مس آپ نے بہلی تین حالتوں میں اس سے سوال نہ فر مایا ۔ بیلوں میں مرگ (یعیٰ موت)

ے ہی ہوگی اگر اس وقت کوئی بیل اچھا بھی ذرج کیا جاتا تو اس کا گوشت ایسا خراب ہوتا کہ کوئی کھانہ سکتا اُس میں گن**دھک کی بوآتی**۔

تُو آگ میں ھے

انہیں سیدمحمد یمنی رضی اللہ تعالی عنہ کے ایک صاحبز ادے مادرز ادولی تتھے۔ایک

تشریف رکھی۔ایک شخص سے کہالکھ " فُلاَنْ فِی الْحَنَّةِ" یعیٰ فلاں شخص جنت میں ہے۔ ایو نہی نام بنام بہت سے اشخاص کو کھوایا۔ پھرفر مایالکھ:"فُلاَنْ فِی النَّارِ" یعنی فلاں شخص

دوزخ میں ہے۔انہوں نے لکھنے سے ہاتھ روک لیا،آپ نے پھر فرمایا، انہوں نے نہ

کھا آپ نے سہ بارہ (بین تیری بار) ارشاد کیا۔انہوں نے لکھنے سے انکار کر دیا۔اس

يرآپ نے فرمايا: "أنْتَ فِي النَّارِ" وُ آگ ميں ہے۔وه گھبرائے ہوئے ان كے والد ماجد

(علير حمة الله الواجد) كي خدمت مين حاضر بوئ حضرت فرمايا:" أنُتَ فِي النَّارِ"

کہا یا"اَنُتَ فِی حَهَنَّمَ"؟ عِرض کی، "اَنُتَ فِی النَّارِ" فرمایا۔ حضرت نے ارشاد

فرمایا: ''میں اس کے کیے کو بدل نہیں سکتا ،اب بختے اختیار ہے دنیا کی آگ پند کریا آخرت کی؟''عرض کی:'' دنیا کی آگ پیند ہے۔''انکا جل کرانقال ہوا۔

حدیث میں آگ کے جلے ہوئے کوبھی شہید فرمایا ہے۔

(مجمع الزوائد، كتاب الجنائز، باب حامع فيمن هو شهيد، حديث ٣٨٧٨، ج٣، ص٥٥)

Marfat.com

لے : بیر جناب دلا درحسین خال صاحب مرحوم زمیندار موضع جواہر یور شلع بر کی کی عرض ہے۔ ۱۳

ملفوظات ِاعلیٰ حضرت (حمداة ل) ایک روایت میں ہے:'' قیامت کے دن ملائکہ کہیں گے کہ جن کامجمہ یااحم **ہے جنت میں چلے جاؤ۔'' (نسردوس الاحبار دی** ٥٠٥٠، ج٢؛ ص٥٠٣ ـ لفظه يوقف عبدان بين يدى الله عزو حل فيأمر بهما الى الحنة فيقو لان ربن استـأهـلنـا منك الجنة و لم نعمل عملًا يجازينا [به] الجنة، فيقول الله عزوجل لهما: عبدي ادخلا اني آليت على نفسي ال لا يدخل النار من اسمه احمد و محمد " ایک روایت میں ہے: ' ملائکہ (مین فرضے) اس گھر کی زیارت کو آتے ہیں جس میں کسی کا نام محمد یا احمد ہے۔'' ایک روایت میں ہے:'' جس مشور ہے میں اِس نام (لین محمرنام) کا آ دمی شریک ہواس میں برکت رکھی جاتی ہے۔'' (كنز العمال ، كتاب النكاح ، قسم الاقوال، الحديث ٢١٦ه ، ج١٦، ص١٧٥) ایک روایت میں ہے:''تمہارا کیا نقصان ہے کہتمہار ہے گھروں میں دویا من مراد الحديث ١٦٢، ج٥، ص ٤٠) بُوتا بهن كرنمازير هنا كيبا؟ عوف : جوتا بهن كرنماز يرْ هناچا ہے يانبيں؟ اد شاد: نہیں۔عالمگیری میں تصریح ہے کہ مجدمیں جوتا پہن کر جانا، بے او بی ہے۔ (الفتاوي الهنديه، كتاب الكراهية، الباب الخامس في اداب المسجد.....الخ، ج ٥، ص ٣٢١) تعظیم و توهین کا دار ومدار غرف پر هے عص : غيرمقلدين يرصع بين اوركهتي بين كدمرورعالم ملى الله تعالى عليه والم **اد شاد** : بعض احكام مي*ن عُرُ* ف ومُصالح (يعنى معلحون) كيسبب تَغَيَّر و تَبَدُّل موتا إلى ہے (یعن تبدیلی ہوتی ہے)۔ میں نے خاص اس بارے ایک رسالہ سلی بنام تاریخی

المفرطات الخل صورت (صداقال) المستحدد المستحدد المحتلف المحتلف

ٹرین میں بیٹہ کر نَماز پڑھنا کیسا؟

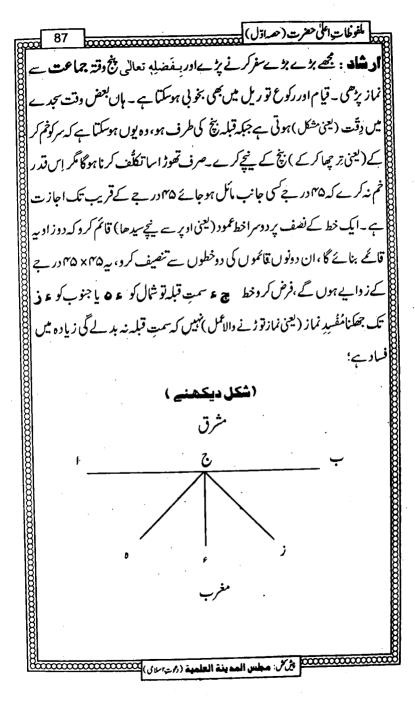
عسو ض : ریل گاژی میں پنچ پر پیژه کر پاؤں لاکا کرفرض یاوتر پڑھے نماز ہوئی یانہیں

لعض ایسا کرتے ہیں؟ •

ار شاد : نبین که قیام فرض بهاور جب تک مجز نه بوسماقط (مین معاف نبین بهوسکه) از حلب کبیر ، فرانص الصلوه، النانی الغیام، ص ۲۱۱) فرض اوروژر اورضیح کی منتین یول نه بو

سکیں ھے۔

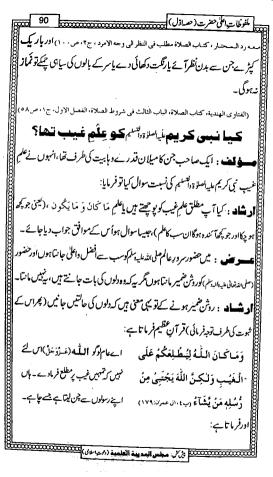
ٹرین میں نماز پڑھنے کا طریقہ عو**ض** : دیل پیمالیاموقع کم لمثاہے کہ کھڑے ہو کرنمازادا کی جائے۔

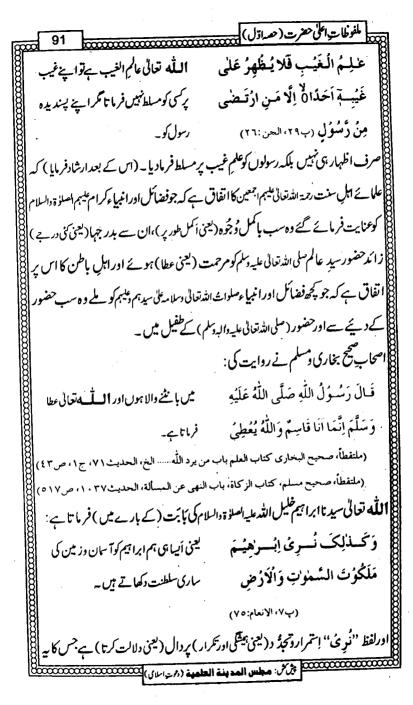


Marfat.com

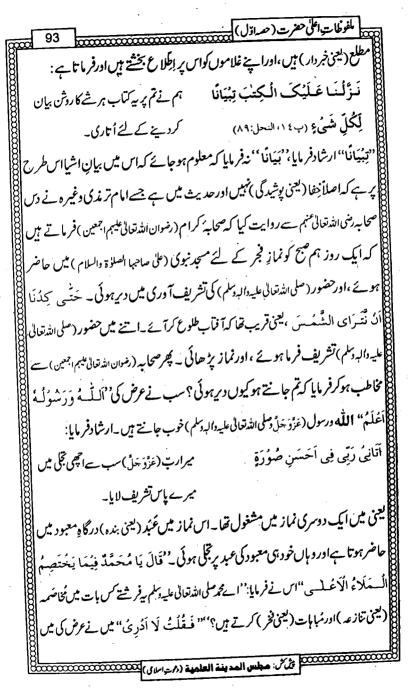
ملفوظات اعلى حضرت (حصداؤل) غَلَط پڑھی گئی نَمازوں کو دوبارہ پڑھنے کا حکم _____ جنتی نمازیں اس طرح پڑھی ہوں ،ان کے اِعادہ (لینی لوٹانے) کی ضر ورت نه ہو گی اس لئے کہ وہ نا دانشگی (یعنی ناواقعی) میں پڑھی ہیں ، ہاں آئندہ بونمی *الرِّ* ھنافرض ہے؟ **ار شاد** :جہل عدم اِعادہ(بعنی دوبارہ نہ بڑھنے) کا سبب نہیں ہوسکتا ۔جہل خود **گناہ**ے۔ جارے علیانے احکام شرعیہ شرق سے غرب تک روش کردیے اور قر آن عظیم میں فرمایا: فَسْنَ لُوْ آ اَهُلَ اللَّهِ كُو إِنْ كُنتُهُ تَهِم اللَّهِ عَلَيْهِ مِاتِ جَائِ والول ع لَا تَعُلَمُونَ 0 (ب٤١، النحل:٤٣) ليچيوب اب نہ جاننے والے کی غلطی ہے کہاس نے کیوں نہ سیکھا؟ان نماز وں کا إعادہ ضرور ہے۔ کتنی نَمازیں دوبارہ پڑھی جانیں؟ ع من : پھرس قدر کا إعاده کما جائے؟ ادشاد: إتى كظن غالب موجائ كداب باقى ندرى مولى -نَماز مِیں مُصَلَّے ٹیڑھا ھونے کا حکم **عو ض** : ایک شخص نے نماز پڑھائی مصلئے گج (مینی میز ھا) تھا، ندانہوں نے استقبال قبله (يعي قبلارزخ .) كيانه صلح بي كوُهك كيا، نماز هو كي يأنبيس؟ اد شاد : اگر مصلے کامیلان (مین نعریاز) قبلہ ہے ۲۵ درج کے اندر تھا تو نماز ہوگئ، اورا گرزیاده تھا تو باطل۔ ಯಯಯಯಯಯ ನೈಗ್ರೆ: ಕ್ಷಾಫೆಟ ಗಿತ್ತಾಟಕ ಗಿತ್ತಾಟಕ ಗಿತ್ತಾಟಕ

لفوظات اعلیٰ حضرت (حصراة ل) (پھر فرمایا) ہریلی میں اکثر مساجِد قبلہ سے دودو در ہے جانب شال ہٹی ہو کی میں اور جمبئی کی مساجد دس در ہے جانب جنوب،اگر شرع مطہراس کی اجازت نہ دیتی تو لا کھوں نمازیں باطل ہوتیں ۔ (پھرفز مایا)انسان کی پییثانی کے قوی شکل ہونے میں یم مصلحت ہے تا کہ بیآ سانی رہے کہ اگر قبلہ سے ۳۵ درجے تک اِنجر اف (یعنی بھر نا) بھی ہوگا تو بھی پیشانی کے کسی جز (یعن ھے) سے تحاذات (یعنی برابری) ہوجائے گی اگر ببیثانی مستوی (یعیٰ سیدهی) ہوتی تو یہ بات حاصل نہ ہوتی (انحراف مساجد کی دجہ یان فرمائی)لوگوں نے میں تمجھا کہ مغرب کی طرف منہ کر کے اس طرح کھڑ ہے ہوں کہ تَطُب ^{کے} داہنے شانے پر ہوتو جو جہت محاذی وجہ(یعنی چ_رے کے سامنے) ہو وہی ہمتِ قبلہ ہے۔ حالانکہ میتحقیق نہیں ہے البتہ ہندوستان میں تقریب کے لئے کافی ہے۔ باریك كیڑوں میں عورت كى نماز كا حكم عوض : عورتوں کی نماز باریک کیڑوں سے ہوتی ہے یانہیں؟ اد شساد : آزاد مورتول کوسرے یا وال تک تمام بدن کا چھیانا فرض ہے مگر چیرہ لینی پیشانی سے ٹھوڑی اور ایک کنپٹی سے دوسری کنپٹی تک (جس میں سرکے بالوں یا کان کا کوئی ۔ داخل نہیں نہ مفوڑی کے بیچے کا) بیتو بالا تفاق نماز میں چصیا نا فرض نہیں اور گوں تک دونو _ل ہاتھ، فخنوں تک دونوں یاوُں ،ان میں اختلاف روایات ہے۔ان کے سوااگر کمی عضو کاچوتھائی حصہ نماز میں قصدا (یعنی جان ہو جو کر) کھولے اگر جہ ایک آن کو یا بلا قصد بقتر ر ئے رُکن یعنی تین بارسُبُ حَانَ الله کہنے کی دیر تک کھلا رہے تو **نماز نہ ہوگی**۔ (درّ مسار ہ روش تارہ جو کرؤ زمین کے ثالی یا جنوبی سرے پر نظر آتا ہے۔اس کی وجہ ہے سمت معلوم ية (الرياسال) ٢٠٠٠





مطلب کہوہ دکھاناایک بارکے لئے نہ تھا بلکہ مُسْتَعِبوّ (یعنی ہمیشہ) ہےتو بہصفت حضور ا کرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں اَ کمل طور پر ثابت ،حضور کے دیے ہے اورحضور کے فیل میں حضور کے جدّ اکرم ملی اللہ تعالیٰ علیہ وَلیٰ ابیہ وہا زک دِلم کو یہ فضلیت ملی ۔اس کا اِ نکار نہ كرركًا مَركُورِ بالطِن (يعن كين ركض والا) أعَاذَنَا اللُّهُ تَعَالَى مِنُ هذِهِ الْعَقِيدُةِ الْبَاطِلَةِ (يعِنِ اللّٰه تعالى ميں اس اطل عقيد سے بحائے۔ت) اور لفظ ' كَذَلِكَ " تشيه کے واسطے ہے جے ہر معمولی عربی وال جانتا ہے اور تشبید کے لئے مُشَبَّد و لین جے تشيدى كئى)اور مُشَبّه به (يعنى جست شبيدى كئ) ضرور (يعنى لازم) ب- "مُسَبّه" "تو خودقر آن كريم مين فدكور بي يعني حصرت ابراتيم عليه اصلة والسلام باقي رما "مُشَبَّه به وه نبي كريم عليه اصلاة والسلام بين _مطلب ميه جوا كدام حبيب لبيب (صلى الله تعالى عليه وسلم) چیے ہم آپ (ملی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) کو آسانوں اور زمینون کی ملطنتیں دکھارہے ہیں یونکی آب (مل الله تعالى عليه ملم) كطفيل مين آب كوالد ما جد حضرت ابراجيم عليه اصلاة والتسل لوبھی ان کامعائد کرارہے ہیں اور قرآن کریم میں إرشاوفر ماتا ہے: يعنى ميرامحبوب غيب يربخيل نهيس-وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيُنِ 0 (ب، ٣٠ التكوير: ٢٤) س میں استعداد (لین صلاحت) یاتے ہیں اے بتاتے بھی ہیں اور طاہر کہ بخیل وہ جس کے پاس مال ہواور صَرْف(بعن خرچ) نہ کرے۔ وہ کہ جس کے پاس مال ہی نہیں کیا خیل کها جائے گا؟ اور یهاں بخیل کی نفی کی گئی توجب تک کوئی چیز صرف (مین خرج) کی نه ہو(نفی کا) کیامَفا د(لینی فائدہ) ہوا؟ لہٰزامعلوم ہوا کہ حضور (سلی اللہ تعانی طیہ داله دسلم بغیب پر



ے تیرے بتائے کیا جانوں ، تورب العرزت (غرو حل) في اينادست فَوَضَعَ كَفَّةً بَيْنَ كَتِفَيٌّ فَوَجَلْتُ قدرت میرے دونوں شانوں کے درمیان بَرِدَ أَنَامِلِهِ بَيْنَ ثَدَى فَتَحَلَّى لِيُ رکھا اور اس کی ٹھنڈک میں نے اپنے سینے كِلُّ شَيْءٍ وَعَرَفُتُ (ملتقطأ، حامع میں یا کی اورمیرے سامنے ہرچزروش ہوگئ ته ممذي كتماب التفسير باب موز سورة ح اور میں نے پیچان کی۔ الحديث ٢٢٤٦، ج٥، ص ١٦٠) صرف ای پر اُکٹِفاندفر مایا کہ کی وہابی صاحب کو مید کہنے کا گنجائش ندرے کڈکل شے سے مراد ہر ہے متعلق بشرایع (مین شریع سے سکتات ہر چز) ہے بلکہ ایک روایت میں فرمایا: میں نے جان لیا جو کچھ آسان اور زمین مًا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْض میں ہے۔ (ملتقطاً، حامع ترمذي كتاب التفسيرباب من سورة ص، الحديث } } اوردوسرى روايت مين فرمايا: اور میں نے جان لیا جو بچھ شرق سے فَعَلِمُتُ مَا بَيْنَ الْمَشُرِق مغرب تک ہے۔ وَ الْمَغُرب (ملتقطاً، حامع ترمذي، كتاب التفسير باب من سورة ص، الحديث ٢٢٤٠، یہ تینوں روایتیں میچے میں تو تمیوں لفظ ارشادِ اقدس (ملی الله نعانی علیہ والہ وسلم) سے ثابت ہیں۔ یعنی میں نے جان لیا جو کچھ آ سانوں اور زمین میں ہے اور جو کچھ شرق سے مغرب تک ہے۔ ہر چیز مجھ پر روثن ہوگئی اور میں نے پیچان کی اور روثن ہونے کے

لفوظات اعلى حضرت (حصاة ل) اور حضور (ملی الله تعالی علیه داله وسلم) کے صدیقے میں اللّی الله تعالیٰ نے حضور کے خلامول کو پیمرتبہ عنایت فرمایا۔ایک بزرگ فرماتے ہیں:''وہ مردنہیں جوتنام دنیا کوشل تھیلی کے نہ دیکھیے ۔'' انہوں نے بچ فرمایا اپنے مرتبہ کا اظہار کیا ۔ ان کے بعد حضرت شخ بباءالملة والدين نقشبند وُدُن برُهُ نے فرمایا :''میں کہتا ہوں مردوہ نہیں جوتمام عالم کو انگوٹھے کے ناخن کی مثل نہ د کھے۔'' اور وہ جونب میں حضور کے صاحبزادے اور نسبت میں حضور کے ایک عالیٰ حاد گفش بردار (یعنی بلندر تبیغلام) ہیں اُئے نے در ایعنی) حضور سيد ناغوث اعظم رضي الله تعالىء فقصيده غوشيه شريف ميس ارشا دفر ماتع بين -نَظُرُتُ إِلَى بِهُ وِاللَّهِ جَمُعًا كَخَرُدَلَةِ عَلَى حُكُم انِّصَالِ لعنی میں نے الله (عَزُوْ خَلُ) کے تمام شہروں کوشش رائی کے دانے کے ملاحظ کیا۔ اور بدد کیمنائسی خاص وقت سے خاص ندتھا بلکہ غلے اُلا تِبصال (یعنی رِكَا تار) بِي بَيْ تَكُمْ ہِے، اور فرماتے ہيں:"إِنَّ بُؤْبُو هَ عَيْنِي فِي اللَّوْحِ الْمَحْفُوظِ بمرك آ نکھ کی تلی لوح محفوظ میں لگی ہے۔'' وحِ محفوظ کیا ہے۔ اس کے بارے میں الله تعالی فرما تا ہے: ہرچیوٹی ہوی چز لکھی ہوئی ہے۔ كُلُّ صَغِيْروً كَبيْر مُسْتَطَرُ ٥ (ب٢٧، القمر:٩٥) اورفرما تاہے: ہمنے كتاب ميں كوئى شے اٹھاندر كھى۔ مَا فَرَّطُنَا فِي الْكِتْبِ مِنْ شَيْءٍ (ب٧، الإنعام: ٣٨)

ا :اس مسئلى تنعيل بهارشريت حسيوم مني 17 مطبوعه مكتبة المدينة مين ملاحظه يجيئ عِلْمِيهِ homosososos

مَلْفُونْطاتِ اعْلَى حَفْرت (حصداوّل) ے ہیں قدر کہ شدت کر (بینی گری کی شدت) جاتی رہے جبیبا کہ حدیث میں ارشاد ہوا: ظہر کو شنڈا کر کے بڑھو کہ گری کی تخی جہم أَبُر دُوا بِالظُّهُرِ فَإِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ کی مانس ہے۔ فَيُح جَهَنَّمَ **او شاد** : بان ایک شل تک تو هر گزشدت بخر (مین کری ک هذن) میں کی نہیں ہوتی، س اعلیٰ درجہ کی حدیث امام کی اعلیٰ دلیل ہے اوراسے واضح تر کردیا بخاری کی حدیث الوذ ر اِس الله تعالىء نے كه ايك منزل ميں تشريف فرما تھے، مؤذن ادان كهدكر حاضر بارگاہ ہوئے ،فر مایا ''اَبُر د'' وقت تصندا کرو، پھر دیرے بعد حاضر ہوئے فر مایا ''اَبُر د'' وقت شنڈا کرو" حَدّٰی سَاوَی الطِّلْالُ التَّلُولَ" بِہاں تک کیٹیوں کے مائے ان کے برابر مو <u> مح باس وقت نماز اوافر ما كي - (ملت في ط</u>ية صحيح البحاري كتباب الإذان، بياب الإذان اللمسافرالخ ، الحديث ١٢٩ ، ج١ ، ص٢٢٨) خودائمه ثنافعيه تصريح فرماتي جي كهثيلون كاساميشروع اس وتت موتاب جب اکثر ظبر کاوقت نکل جاتا ہے تو ان کے برابر کس وقت ہوگا یقییناً جبکہ میل اول دمیکا نکل چکا ہو، قائلانِ مثلِ اول کے پاس اس حدیث سی سے اصلاً کوئی جواب نہیں۔غیر مقلدوں کے پیشوا نذ برحسین دہلوی نے معیار الحق میں جوحرکت نہ بوحی اور حدیث مے مخرگی کی ہے اسکار قرمیری کماب "خاحزُ البَحْرِين" میں ویکھتے۔ دومثل سے پھلے نماز عَصْر پڑھنے کا حکم عوض : اگرتبل دوش عصری نمازیره ی جائے تو ہوجائے گی؟

الفوظات ِاعلى حفرت (حمه اڏل) اسسسسسسسسسسسسس اد شاد : بال! صاحبين (يعن الم اعظم كرد جليل القدر شاكر دامام ابو يوسف اورام مجررته الله تعالیٰ علیها) کے نز دیک ہوجائے گی۔ عوض : كياإعاده (يعن نماز دوباره پرهنا) واجب نه بوگا؟ **ار شسساد** : فرض نه موگا کهاس قول پر بھی فتو کا دیا گیا ہے اگر چیشیح و معتمد قول اما م اخُتِلافی مسائِل کا حکم عرف : توكياتمام مائل اختلافيكاية ي عم ي؟ ارشاد: نہیں بلکہ جس میں اختلاف فتوی ہاس کا یہ بی حکم ہے کہ جس قول پڑمل کیا جائے گا ہوجائے گا اور چونکہاس میں علما دونو ں طرف گئے ہیں اور دونو ں تو لوں پر فتوىٰ ديا ہے لہذا جس يرعمل كيا جائے گا ہوجائيگا مگر جو مُعتَقِدِ ترجيح قولِ امام (يعني امام اعظم کے قول کوراخ مانا) ہےاہے اِختر از (لینی بچنا) جا ہے۔ جرمین طیبین میں اب کچھ برسوں سے حنفی مصلے پر نماز عصر مثل ٹانی میں ہونے لگی ہے۔ صبح کے سواسب نمازیں میلے مصلائے حنفی یر ہوتیں، ثنا فعیہ نے شکایت کی کہ ہمارے لیے وقتِ عصر ہمارے نمہب کی رو سے تنگ ہوجا تا ہے۔اس پر تو یہ ہوانہیں کہ نمازِ عصر مثل صبح مؤخر کر دی جائے ، رکھی مقدّم اور مثلِ دوم میں کردی۔اس بار کی حاضری میں بینی بات دیکھی میں اور مکہ کے جلیل علائے حنفیہ مثل مولانا شیخ صالح کمال مفتی حنفیہ ومولانا سید آسلعیل محافظ کتب حرم اس جماعت میں شریک ہوتے تو نفل کی نیت سے پھر حنفی وقت پر اپنی

جماعت کرتے جس میں وہ ا کابراس فقیر کوامامت پرمجبور فرماتے .

لمفوظ ت اعلى حضرت (حمدادل) زوال کے وقت جمعہ ادا کرنا کیسا؟ ع ف : جمعها گرعین زوال کے وقت پڑھا جائے تو ہو گا پانہیں؟ **ار شاد** : نہیں - کتب نقهٔ 'بح' 'وغیرہ میں تصریح فرمائی کہ جعہ ثل ظہر ہے۔ ایک اشکال اور اس کا حواب **سوٹ :** زوال کےوقت نماز کی کراہت اس بنایر ہے کہ جہنم روثن کیا جاتا ہے۔ (الاشباه والسظائر، القول في احكام يوم الجمعة، ص ٢٦١) أوربيحديث مين ب- وومرك حديث مين ارشا دفرما باكه جمعه كون جهنم بحثر كامانهين حاتا رمانقطا، كنز العمال، كتاب البصلاة باب وقت الاستحباب الحديث ١٩٥٩، ض ١٧١) للبزاج استحرار وال كروقت مکروہ نہ ہوکہ مانع (یعنی رکاوٹ)موجوز نہیں۔ **او شاد** : بهاس وقت نوافل کی کراہت میں جاری ہوسکتا ہے فرائف*ن کے* نواول وآخر وقت مقرر ہیں،اوّل ہے پہلے باطل ہیںاورآ خرکے بعد قضامثلاً نمازم ہے کا اوّل وقت طلوع فجر ہے اس سے پہلے شروع کی تو نماز قطعانہ ہوگی ، نہ میدکداسے جائز کہددیں کہ وہ وقت کراہت نماز کانہیں، یوں ہی جعہ کے دن جہنم ندسلگائے جانے سے اگر ثابت ہوا تو اتنا کہ وہ اوقات کراہت ہے ندر ہانہ ہیر کہ جمعہ جس کا آغازِ وقت بعدِ زوال ہے پیش از وقت جائز ہوجائے ، ہاں در بارہ نوافل ای صدیث کی بنایرامام ابو یوسف رحمة

Marfat.com

الشتال ملینے روز جمعہ وقت زوال کراہت نہ مانی واشاہ میں اسے تھی و معتمد رکھا۔ (رالانب و السطائر، الفول فی احکام یوم العملة، مص ۲۲۸ مگر بیھا وی قدی سے ہے میرا

ملفوظات إعلى حفرت (حسداة ل) تجربه ب كرصاحب حادى يوسفى المذب بين برجگة ول امام ابويوسف كوب في أحدُ (یعنی ہم ای کواختیار کرتے ہیں) کہتے ہیں۔ ہمارے امام رضی اللہ تعالیٰ عند کا مذہب جس پر تمام متون وشروح ہیں'' إطلاق ِمنع''ہے(یعنی مطلقاً منع ہے) اور یہ ہی سیح ومعتمد ہے۔ یانی اللہ تعالٰی کی نعمت ھے **مۇلك :** آج حفزت مولا نا مولوى وصى احمە محرّبة ث سورتى عليه ارحمه (جن كواعلى حفزت مظله الاقدس نے "اُلاَسَدُ الْاَسَدُ الْاَشَدُ" (لِعِنى فَتَوْلِ كَالْمَلِ روك قِهَام كرنے والاقوى شير) ہے مخاطب فرمايا تقااور جناب مولانامولوي حمدالله صاحب بييثاوري بهي دولت كده اقدس پرمہمان ہیں ۔ دو پہر کا وقت ہے، بیرحضرات اور حضرت قبلہ دامت برکاتم کھانا ملاحظہ فرمارہے ہیں ۔مولا نامولوی حکیم امجدعلی صاحب بھی حاضر اور شریکِ طعام ہیں **۔** بریلی کے بانی کی نفاست کاذکر ہوا، اس پر: ارشاد : ہوا کہ یانی اللہ تعالیٰ کی بہت بڑی نعمت ہے جس سے قر آنِ عظیم میں جا بجا المندول يرمِنَّت ركمي (يعني أبين ابنا حسان ياددلايا) اوراكي جلَّه خاص اس يرشكر كي بدايت فرما كي: اَفَرَءَ يُتُمُ الْمَآءَ الَّذِي تَشُرَبُونَ ٥ کیاتم نے دیکھایہ یانی جو پیتے ہو کیاتم نے اسے بادلوں سے أتارا يا بم بين أتارنے ءَ أَنْتُمُ أَنُزَلُتُ مُوهُ مِنَ الْمُزُن آمُ والے (بلکہ تواے رب (غزو خل) ہمارے) نَحُنُ الْمُنْزِلُوُنَ 0 لَوُنَشَآءُ جَعَلْنَهُ ہم چاہیں تواہے بخت کھاری کردیں پھر کیوں أَجَاجًا فَلَوُ لَا تَشُكُرُونَ 0 نہیں شکر کرتے (تیرے وجبہ کریم کے لئے میشه حمد ارت (غزو خل) مارے) (پ ۲۷، الواقعه :۲۸، ۹،۲۸) حضور سرورِ عالم ملی الله تعالی علیه دسلم نے بھی کھانے پینے پہننے کی کوئی چیز کسی سے ،: مجلس المدينة العلمية (ارترابان)

للب نەفرماكى **گرمىشىدا ياتى** دوبارطلب فرمايا - ايك بارفرمائش فرماكى: '' رات كاما ك مدینے کے بانی کی کیا بات ہے میں نے مدینۂ طیبہ سے بہتر یانی کہیں نہ پایا۔خذ ام کرام حاضرین بارگاہ کے لئے زَورَتوں (مینی بیالوں) میں یانی جو کرر کھتے ہیں، گری کے موسم میں اس شہر کریم کی شنڈی سیمیں (بینی صبح کی شنڈی خوشگوار ہوا ئیں)ا تنا سر د کر دیتی ہیں کہ بالکل برف معلوم ہوتا ہے۔ع**مدہ یانی** کی تین صفتیں ہیں اور وہ متیوں اس میں اعلیٰ درجہ پر ہیں[۔] ا یک صفت بیر که بلکا مواور ده یانی اس قدر بلکا ہے کہ یہنے وقت حلق میں اس کی شنڈ کہ تومحسوں ہوتی ہےاور کچھنہیں اگر نخنگی (یعنی خنڈ) نہ ہوتو اس کا اُتر نابالکل معلوم نہ ہو، د**وسری** صفت شیرین (بینی مٹیاس)وہ یانی اعلی درجہ کا شیریں ہے۔ایسا شیریں میں نے کہیں نہ باما ۔ تغیسر می خنکی ، رہجی اس میں اعلیٰ درجہ پر ہے۔ میری عادت ہے کہ کھانا کھاتے میں پانی پیتا ہوں ۔کھانا مکان پر کھایا جائے اوروہ جانفرا پانی مجد کریم میں، لہٰذا کھانا کھاتے میں یانی نہ بیتا کھانے کے بعد مجد کریم میں ہزیتِ اعتکاف حاض رای عطبیهٔ سرکاری ہے دل وجان سیراب کرتا ،اعتکاف تو ہرمسجد کی حاضری میں مبیشہ ہوتا ہی ہے۔ پانی کے لئے اعتکاف نہ ہوتا تھا بلکہ اس کی مُشْفَعَت (لیعن فائدہ) میر ے کہ غیر معتکف کومسحد میں کھانا بینا جا ترنہیں۔

صُوْمُوا تَصِحُّوا دوزه رکھوتندرست ہوجاؤگے۔

(المعجم الاوسط، الحديث ١٢٨٣، ج٦، ص١٤٦)

توینہیں ہوسکتا کہ روزہ تندرتی کی **نبیت سے رکھا جائے ، بلکہ روزہ اللّٰہ تعالیٰ کے لئے** ہوگا اور تندرتی کی منفعت بھی اس سے مبعاً حاصل ہوگی۔ پھر اس حدیث میں فر مایا:

حُجُّوا تَسْتَغُنُوا جَيْ مُرَفِي بوجاؤك_

(ملتقطاً، مصنّف عبد الرزاق باب فضل الحج، الحديث ٢٣٥٩، ج٥، ص٨)

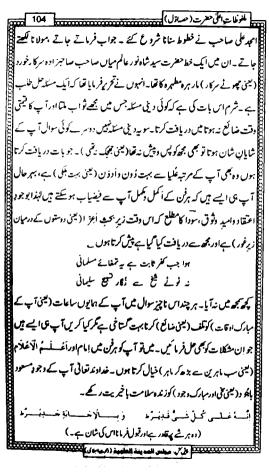
توینہیں کہ ج مال کی نمیت ہے کیا جائے بلکہ ج اللّٰہ تعالیٰ کے لئے ہوگا، اور یہ نفع بھی ضمنا ملے گاتو جس طرح یہ دونوں اللّٰہ ہی کے لئے ہیں اور صحت دغنا، اِن کے شمی منافع ای طرح اعتکاف اللّٰہ تعالیٰ کے لئے ہوگا اور کھانے پینے کا جواز نفع بالتبع ۔ فقادیٰ عالمگیری وغیر ہا میں ہے اگر مبحد میں سونا چاہا عتکاف کی نیت کر لے پچھ دیر فقادیٰ عالمگیری وغیر ہا میں ہے اگر مبحد میں سونا چاہا عتکاف کی نیت کر لے پچھ دیر اللّٰی (عَدْدُ حَلْ) میں مشغول رہے پھر جو چاہے کرے۔

(الفتاؤي الهندية، كتاب الكراهية باب اداب المسحد و القبلة.....الخ ، ج٥، ص ٣٢١)

ایک شعر کی وضاحت اور اس کا شرعی حکم

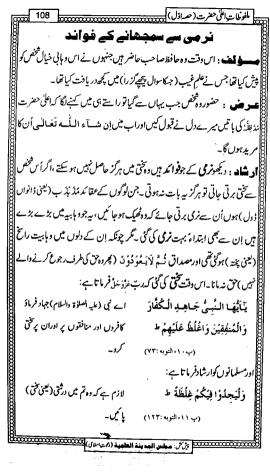
🎞 🍪 🅉: مجلس المدينة العلمية (٨چاساي)

کھانے کے بعد ڈاک نکالنے کا حکم فر مایا۔ ڈاک نکالی گئی ،مولوی حکیم محمر



ملفوغات اعلى حضرت (حصداذل) إك شعر كى نثر ٢ مخضراور تھوڑى تر كيب عبارت اورخلاصه اور نتيجه مطلب خيز بذريعيه كس طالب علم صاحب کے إفادہ فرمایا جائے۔ہم سب لوگ آپ ہی کے ارشاد وحلِ مطلب پرنظر کررہے ہیں۔ایک علی تُحِ یہ کا مُطلع تو حیدیہ جس کو بڑے بڑے ذہین و خن سنج (یعی شعر کہنے دالے) نہ طل کرسکیس کے پہلے آپ نے آن کی آن میں حل فرمادیا تھا، بیتواس کے سامنے ہیچ معلوم ہوتا ہے۔ بہر حال متوقع ہوں کہ جواب ہے مُسُرُ ور ومُفَخَّو (لینی خوش اور نازاں) فرمایئے فقط۔ مولانا امجد على صاحب: حضور!إس كاكيا مطلب ب؟ **ار شاد** : بهت آسان اور ظاہر ہے، اچھا! اِس کا جواب لکھئے اور ای ڈ اک سے روا نہ افر ماد <u>یکئے</u> یہ مؤلف: پهرحضرت قبله مظادالاقدى نے يه جواب لکھوا كررواندفر مايا: . ابشرف ملا حظه حضرت والإ دامت بركاتهم ظاہرمطلب شعر جہاں تک شاعر نے مرادلیا ہوگا صرف اتنی مناسبت دیکھ لینا ہے کہ دانہ سلیمانی میں جس کی شہیج عُبًا دو زُبًا د (یعنی عبادت گزار ادر پر ہیز گار) رکھتے میں شکل زُمَّا ر^ا موجود ہے اور اس کار کھنا تمغائے فقر قراریایا ہے۔ شاعر کہ مذہبا سنی نة قااور بدگمانی تمغائے شعراب غالبًا اس سے زائد بچھنة تمجھا ہوگا اور بدایک بے ہودہ عنی تھے مگرا تفا قااس کے قلم سے ایک لفظ ایسانکل گیا جس نے اس شعر کو بامعنی و پُرمغز لے : وہ دھاگایا زنچیر جے ہندو گلے اور بغل کے درمیان ڈالے رہتے ہیں جبکہ عیسانی، مجوی اور بودى كريس باندست بين -... عِلْمِيه

ملفوظات اعلیٰ حضرت (حصرازل) كرديا، وه كياليين لفظ'' ثابت'' ـ زُقَار كه كفار بإند ھتے ہيں ذُنَّار زائل ہے كه ايك جعظيم میں ٹوٹ سکتا ہے اور دانہ سلیمانی میں اس کی تصویر ثابت ہے کہ جب تک داندر ہے گا، قائم رہے گی۔ یوں ہی کفرووسم ہے کہ ایک کفرز اکل جو کفر کفارے اورجس کی سزا خُلُور فی النَّار (لینی دوزخیس بیشدرمنا) ہے۔ ہرکا فرموت کے بعداس سے بازآتا ے۔ قَالَ تَعَالَٰی ترجمه كنزالا يمان: اور أكلُّه كيسوااورخدا وَاتَّخَذُوا مِنُ دُوْنِ اللَّهِ الِهَةُ بنالئے کہ وہ انہیں زوردی، ہرگزنبیں کوئی دم لِيَسَكُونُوا لَهُمُ عِزَّا لَأَكُمُ كَلَّا جاتا ہے کہ وہ ان کی بندگی ہے منکر ہول مے سَيَكُفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمُ وَيَكُونُونَ اوران کے مخالف ہو جائیں گے۔ عَلَيُهِمُ ضِدًّا ٥ (پ ۱۱، مربع: ۸۲،۸۱) وومرا كفر ثابت جولبدُ الآباد (بميشه بميشه) تك قائم رب گا جے علمائے دين نے جوايمان فرمايا بوه بحصر آن عظيم ارشادفرما تاب: ترجمه کنزالایمان: توجوشیطان کونه مانے فَمَنُ يُكُفُرُ بِالطَّاعُوْتِ وَيُوْمِنُ ا اورالله (غروخل) يرايمان لاعال بالله فَقَدِ اسْتَمُسَكَ بِالْعُرُوَةِ نے بری محکم کرہ تھای جے مجمی کھلنانہیں الْوُ ثُقِي قَ لَا انْفِصَامَ لَهَاطُ وَاللَّهُ اور الله (غرر خرا)ستاجاتا ہے۔ سَمِيعٌ عَلِيْمٌ 0 (پ۳، البقره:۲۰۱۱)



ملفوظات اعلى حضرت (حمداوّل) کہاتم لوگ تھبر جاؤاس کی راہ تمیں جانتا ہوں ۔سبزگھاس کا ایک مٹھالے کر چُم کا رتا ہوا اُونٹ کے قریب گیااوراہے بکڑ لیااور بٹھا کراس پرسوار ہولیا۔ فر مایااس وقت اگرتم استقل کردیج توجہم میں جاتا۔ قرض ديا لينا عد ف : حضورمبرے کچھرو ہے ایک شخص پر ہں وہ نہیں دیے؟ ار شاد : إس زمانه مين قرض دينا وربي خيال كرنا كه وصول وجائ گاه ايك مشكل نیال ہے۔ میرے بندرہ سورو پے لوگوں پر قرض ہیں۔ جب قرض دیا، یہ خیال کرلیا کہ دے دی قر خبر ورنہ طلب نہ کروں گا۔ جن صاحبوں نے قرض لیادیے کا نام ندلیا (پھرخود ہی فرمایا) جب یوں قرض دیتا نہوں تو ہیہ کیوں نہیں کر دیتا (لیخی تحذیموں نہیں دے دینا) اوراس کی وجہ بیہ ہے کہ حدیث شریف میں ارشاد فرمایا: جب کس کا دوسرے بر دَین (بیخ قرض) ہواوراس کی میعاد گزر جائے تو ہرروز ای قدرروپی_د کی **خمرات کا تُوابِ مِلْتَابِ جِنْنَا دَينِ (لِيحِنْ تَرَضُ) ہے۔ (السسند لامام احسد بن حنبل، مسند عمران بن** المعدیث ۱۹۹۷، ج۷، ص ۲۲۶) اِس **تُوابِ عظیم کے لئے میں نے قرض دیجے** ہبہ ند کئے کہ پندرہ سورو بے روز میں کہاں سے خیرات کرتا۔ **حافظ کتینے اَفراد کی شَفَاعَت کر ے گا؟** عب عن : حضور حافظ کتنوں کی شفاعت کرے گاسنا گیاہے کہایۓ اُعِرَّ ال^{ای}نی رشتہ داروں میں) ہے دی شخصول کی؟ **آوشك: بال- (سنن ابن ما مه، كتاب السنة، باب في فضل مَن تعلم الغران و علمه، المحديث**

لمغونطات واعلى حفرت (حمداؤل) مىيىيىيىيىيى ۲۱۶، ج۱، ص۱۶۱)اوراُس کے مال باب کو قیامت کے دن ایسا تاج بہنا یا جائے گا سے مشرق سے مغرب تک روش ہوجائے اور شہید بچاس شخصوں کی ، حاجی ستر کی ، اورعلا کے گنتی لوگوں کی شفاعت کریں گے جتیٰ کہ عالِم کے ساتھ جن لوگوں کو پچھ بھی تعلق ہوگا، اُس کی شفاعت کریں گے۔کوئی کہے گا: میں نے وُضو کے لئے یانی دیا تھا، کوئی کیے گا: میں نے فُلا ں کا م کر دیا تھا۔لوگوں کا حساب ہوتا جائے گا اور وہ جنسے کو بھیج جا ^نیں گے،علا کا حساب کب کا ہو چکا ہوگا اور وہ رو کے جا ^نمیں گے۔عرض کریں گے الٰبی (عَـزُو َحَلُ)لوگ جارہے ہیں ہم کیوں رو کے گئے ہیں؟ فرمایا جائے گا:تم آج میرے نز دیک فرشتو ں کی مانند ہو شفاعت کرو کہ تمہاری شفاعت ہے لوگ بخشے جائیں۔ ہرشنی عالم سے فرمایا جائے گاایے شاگردوں کی شفاعت کراگر چہآ سان کے سارول كرير براير بول - (ملحصاً، فردوس الاخبار، باب اليا، الحديث ١٧ ٥٠، ج٢، ص٥٠٥) سركار مدينه عيه وسلم كانام اقدس عوض : حضوراقدس ملى الله تعالى عليد ملم كانام اقدس كيا ہے؟ اد شاد : حضور کے علم ذات دوہیں: کتب سابقہ میں احمد ہے اور قر آنِ کریم میں مجمد ہے ملی اللہ تعالی علیہ وہلم اور حضور (صلی اللہ تعالی علیہ دالہ وہلم) کے اسماء صفات (یعنی صفاتی نام) بے گنتی ہیں۔علامہ احمر خطیب قسطلانی (علیدممۃ الله افن) نے بارنچے سوجمع فرمائے۔ دے ب المدنيه، الفصل الاول في ذكر اسمائه الشريفةالغ ،ج١، ص٣٦٦) سيرت شاكي میں تین سواوراضا فدکئے اور میں نے چھ سواور ملائے کل چودہ سوہوئے اور حضور کے اسا ہر طبقے میں مختلف ہیں اور ہر ہرجنس میں جدا گانہ ہیں ، دریا میں اور نام ہیں پہاڑوں مُثِينٌ عطس المدينة العلمية (راج الال) المحمد

عرض : بيكثرت اساء كثرت عفات يردلالت كرتى ہے؟ اد **شاد** : با*ل* ـ عسوف : برطبقداور برجنس میں جداجدانام ہونااس لئے که برجگه حضور (ملی الله تعالی علیہ دالہ وسلم) کی ایک خاص بخل ہے۔جس جگہ جس صفت کا ظہور ہے ای کے مناسب نا م ارشاد: بیکی ہے۔(اس کے بعد بیان فرمایا) انجیل شریف کی بہت ی آیات ہیں، جو حصور (ملی الله تعالی علیه داله دملم) کے أوصاف بيان كر رہى بيں ، اگر جد نصار كی (ليني عیسائیوں) نے بہت تحریف کی ہے،اورا پی چلتی وہ کل آیٹیں جوحضور (ملی نیزیال بلا الدیاب بلر) کے اوصاف میں تھیں، نکال ڈالیس مگر جس امرکو **اللّٰہ** (غزز خل) بورا کرنا جا ہے اس کو کون ناقص کرسکتا ہے ۔ بہت می آبیتیں اب بھی رہ کئیں گرانہیں سُوحِھتی نہیں على هذا الْقِيَاس (يعني إى طرح) تورات وزبوريس-کیا اللہ اور اُس کے حبیب عبداللہ کا علم برابر ھے؟ **ہو گف** : ایک صاحب ثنا بجہانپورے حاضرِ خدمت ہوئے انہوں نے عرض کی میں نے سنا ہے اور بعض دیو بندیوں کی کتابوں میں بھی دیکھا ہے کہ حضور سید عالم سلی اللہ تعالی مایہ ملم سے علم شریف کو جناب (یعنی اعل حضرت قبلہ) **اللّٰ**ہ تعالیٰ سے جنم کریم کے برابر فرماتے ہیں گر چونکہ یہ بات بجھ میں نہیں آتی ،اس لئے میں نے عام کہ حضور کا شرف للا قات حاصل کر کے اے عرض کروں اور جو پکھ حضرت کا اس بارے میں خیال ہو 🛭 در یافت کروں۔

ملفوظات اعلى حضرت (حمداة ل) اد شاد: ال كافي القرآن عظيم في فرماديا: فَنَجُعَلُ لَّعُنَتَ اللَّهِ عَلَى ترجمة كنز الإيمان: توجهولون ر الْكُذِبِينَ 0 (ب١،١لِ عمرن :٦١) الله (غزُدُ هَلْ) كى لعنت ۋالىس_ جومیرے عقائد ہیں وہ میری کتابوں میں لکھے ہیں۔وہ کتا ہیں چھپ کرشائع ہو چکی ہیں، کہیں اس کا پچھنام ونشان ہوتو کوئی دکھادے۔ ہم اہلِ سُنّت کا مسئلہ علم غیب میں يعقيده بك الله تعالى في حضور كوعلم غيب لل عنايت فرمايا - ربّ عَزْوَ هَلْ فرما تا ب: وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنِ 0 یہ نی غیب کے بتانے میں بخیل نہیں۔ (ب ۲۰ التكوير ۲۶) فسير معالم وتفسير خازن ميں ہے بعنی حضور (ملی اللہ تعالی طیروالہ وسلم) کوعلم غيب آتا ہے وه مهمين بھی تعليم فرماتے ہيں۔ (تفسير حازن، سورة النكوير تحت الاية ٢٤، ج٤، ص ٣٥٧) اور و ہابید دیو بندیوں کا بیر خیال ہے کہ سی غیب کاعلم حضور کونہیں ،اپنے خاتمہ یکی کا بھی علم إ : قرآنِ كريم كى بكثرت آيات كريد شل" وعَلَم مَك مَالَمُ قَكُن تَعْلَمُ ط وَكَانَ فَضُلُ اللَّهِ تصاور السلْسه كاتم ربر الفل ب-"اوربهت ا حاديث ثريفه مثلًا "فَسَحَسَلُسي لِسَي كُلُّ شَيْسً وَعَرَفُتُ ترجمه تومير عمامن مرجزروش موكى ادريس في اس بجيان ليا- (ملتقط، ـذى، كتاب التفسير، باب من سورة ص، الحديث ٢٢٤، ج٥، ص ١٦٠) نيزَ كثيراً توال علم غيب عمايت موا تفعيل كے لئے'' خالص الاعقاد'''' أنباء المصطفع'''' اَللهُ وَلَهُ الْسَدِيلَةُ "،"مَالِعُي النحيِّب" وغيره رساكل شريفه امام المسدت مجدوا لمائة الحاصرة واست بركاتهم لما حظه مول-م حضور کو مَعَاذَ الله این خاتمہ کا بھی علم نہیں اور دیوار کے پیچیے کی بھی خرنہیں اور حضور کے لئے علم غیب کا ﴾ ماننا شرک نہیں تو کون ساایمان کا حصہ ہے اور شیطان کاعلم وسیع ہے اپنے خاتمہ کاعلم نہ ہونا دیلی کے ایک و ہالی نے کہاتھا۔ باتی سب كفريات براتينِ قاطعه ميں ہيں مؤلف مغرار ن مطس المدينة العلمية (رارت الال)

ملفوظات اعلی حضرت (حصہ اوّل) نہیں ، دیوار کے پیچیے کی بھی خبز ہیں بلکہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ دالہ دملم) کے لئے علم غیب کا ماننا شرک ہے اور شیطان کی وسعتِ علم نص (بینی ایس آیب قرآنی یا حدیث) سے ثابت ہےاور **الیّلٰہ** (غـزُوْ خَلُ) کے دیئے سے بھی حضور (ملی اللہ تعالیٰ علیہ دالہ وسلم) کوعلم غیب حاصل نہیں ہوسکتا۔ برابری تو در کنار، میں نے اپنی کتابوں میں تصریح کر دی ہے كه اگرتمام اولين وآخرين كاعلم جمع كياجائة واس علم كوعلم اللي (غـــــرو خـــرر) سے وہ نسیت ہرگزنہیں ہوسکتی جوایک قطرے کے کروڑ ویں حصہ کو کروڑ سمندرے ہے کہ میہ نبیت متنای کی متنای (یعنی محدود) کے ساتھ ہے اور وہ غیر متنا ہی (یعنی لامحدود)،متنا ہی 🖁 کوغیرمتناہی ہے کیانسبت ہے۔ صدقیے کا جانور ذَبح کئے بغیر کسی کو دینا کیسا؟ عبير منيه : صدقے كاحانور بلاذى كئے كىي مُصر فب صدقہ (يعنی جے مدقہ دیناجا مَ ا ہو) کودے دیا جائے تو جائزے یا ہیں؟ اد شاد: اگرصرقه واجبه باورد جوب خاص ذی کاے تو بدن کا داند دوگا۔ گر اس حالت میں کہ ذرج کے لئے وقت معین (یعن مقرر) تھا جیسے قربانی کے لئے ذی المجہ کی دسویں گیار ہویں بار ہویں اور وقت نکل گیا تو اب زندہ تَصَدُّ ق(یعنی صدقہ) کیا م ي كار (الفتاوي الهندية، كتاب الاضحية، الباب الاول، ج ٥٠ ص ٢٩٤) کیا نانا نانی وغیرہ عقیقے کا گوشت کھا سکتے ہیں؟ عسوف : عقيق كا كوشت يج كمال باب، ناناناني ، دادادادى ، مامول چاوغيره کھائیں پانہیں؟

ملفوظات اعلى حضرت (حصاة ل)

ار شاد: سب كهاسكة بين "كُلُوا و تَصَدُّفُوا وَاتَتَحِرُوا" (يعنى: كهاؤصدة كرواوركار ثواب بين صرف كرورت) عُفُودُ الدُّرِيه مِين بُ أَحُكَامُهَا أَحُكَامُ الْأَصُحِيَةِ" (يعنى عقيق كا حكام قرباني كے احكام كى طرح بيں۔ت)

(العقود الدرية في تنفيح الفتاوي الحامدية، كتاب الذبائح و مطالبه، ج٢، ص٣٣٣)

مُحَرَّم وصَفَر ميں نكاح كرنا كيسا؟

عوف: كياتُحرَّ م وصفريس تكاح كرنامنع ب؟

ارشاد: نکاح کی مہینہ میں منع نہیں، پیغلط مشہور ہے۔

رَبِيْبَه كا نكاح

عوف : زیدگ رمیه (مین ویلی) او کی کا نکاح زید کے حقیقی بھائی ہے ہو سکتا ہے؟ اوشاد : ہاں جائز ہے۔

دورانِ عدت نكاح كرنا كيسا؟

عرض: كياعِدَّ ت كاندرجي نكاح بوسكاے؟

ارشاد: عدَّ ت مين نكاح تو نكاح، نكاح كاپيام دينا بهي حرام ہے۔

(الفتاوى الهندية ، كتاب الطلاق، باب في الحداد، ج١، ص٣٤٥)

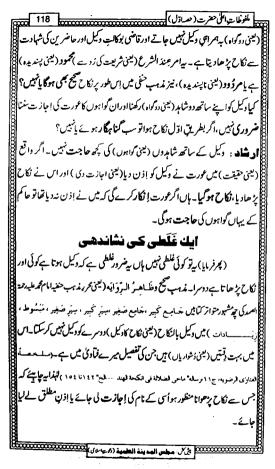
دورانِ عدّت نکاح پڑھانے والے کا حکم

عوف : اگر کوئی پیش امام یا قاضی عدت میں نکاح پڑھائے گا تو اُس کے لئے کیا تھم ہے؟ اُس پڑھانے والے کے نکاح میں تو پھے فرق نہ آئے گا اورا یہ شخص کی اہامت کا کیا تھم ہے؟ اوراُس پر پھے کفارہ بھی لازم ہوگا یا نہیں؟ اور اِس نکاح میں جولوگ شریک

يُّلُّ ثُنَّ: مطس المدينة العلمية (وُرِتِ الراي)

المفوطات اعلى حضرت (حدادّ المستنفق المس ہوئے اُن کی نسبت بھی اِرشاد ہو، پیش اِمام نے اِقرار کیا کفلطی ہوگئ ہے، اب مجھے مسلمان معاف فرما ئیں ۔ گرایک مولوی صاحب نے اُس سے کہہ دیا کہتم کہدو'' مجھے اطلاع بتھی میں نے بےخبری میں نکاح پڑھادیا،اُن صاحب کے لئے شرعاً کیا تھم ہے؟ ا و **شاد** : جس نے دانستہ (لینی جان بوجھ کر)عدت میں نکاح پڑھایا،اگرحرام جان کر ر ھا ما ہنخت **فاسق** اور نِیا کا دَلَّال ہوا مگر اِس ہے اُس کا بنا نکاح نبہ گیا اورا گرعدت میں نکاح حلال جانا تو خود اُس کا **نکاح جانا رہا** اوروہ اِسلام سے خارج ہوگیا۔ ا بهرحال اُس کی اِمامت جا تزنهیں جب تک کو قدنہ کرے۔ یی تکمشر یک ہونے والوں کا ہے، جو مذجانیا تھا کہ نکاح پیش أزعدّت (لين بتكميلِ عدت سے پہلے) ہور ہا ہے اُس بر إلزامنهيں اور جو دانسة شريك ہوا ، اگر **حرام** جان كرتو سخت **گنا مگار** ہوا اور حلال جانا تو إسلام بھی گیا۔اوروہ تخص جس نے إمام کو چھوٹ بو لنے کی تعلیم دی بخت گنا ہگار ہواء أس برتوبہ فرض ہے۔ مَیکے میں رہنے والی عورت کا نان نَفَقَه عب مندہ کے نکاح ورخصت کو دوسال ہوئے۔ رخصت کے بعد صرف چودہ پندرہ روزشو ہر کے یہاں (یعن شوہر کے گھر) رہی پھرا بے میکے چلی آئی ، جب سے نہ شوہر بلا تاہے ندرونی کیڑادیتاہے اور ہندہ کائم رنصف مُعَدِّل اورنصف مُوَجَّل ب،ابشرعاده نصف مُعَدل اورنان نفقه (يعن خريه) السكتاب يانبين؟ ا : مهرتمن تتم كاب: (١) مجل: جوخلوت سے يمبله دينا قراريائے ، (٢) مؤجل ؛جس كے لئے كو میعاد (یائذت)مقرر ہو، (٣)مطلق:جونم قبل ہواورند مؤجل۔ بیجی ہوسکا ہے کہ (مہرکا) کچھ حصہ قبل ہوا در بچے مؤجل، بچے مؤجل بچے مطلق ، یا بچے مغل ادر بچے مؤجل ادر بچے مطلق _ (بہارشریعت ،حصہ ے،

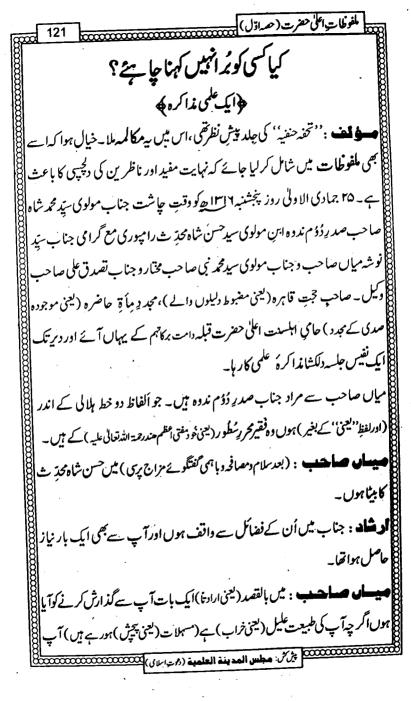
ملفوظات اعلى حضرت (حصداؤل) ارشاد: بان! نصف مُعَدَّل كالمجمى ياجب جاب وعوى كرستى بـ رالفناوي الهندية، كتساب الطلاق، الفصل الحادى عشرالغ،ج ١، ص ٣١٨) اورا گروه شوېركے يہاں جانے سے إ تكارى موكر نبيطى بلكدو بال جانا جا جى ہے اور شو برنبيس آنے ديتا تو نان نفقہ کی بھی مستحق ہے، مگر جتنا زمانہ گزرلیا اُس کا دعویٰ نہیں کرسکتی جب تک بچھ ماہوار مقررت موكيا - (الفتاوى الهندية ، كتاب الطلاق باب السابع عشر في النفقات، ج ١ ، ص ٤٥٥) دوران عدّت نكاح كا حُكم (پھرایک اِستفتامیش ہوا) کہزید نے اپنی عورت کو**طلاق** دی، دوتین روز کے بعد دوسرے تخص نے **نکاح کرلیا۔ ابھی عدت نہ گزری تھی ،آیا اُس کا نکاح ہوایا** نہیں؟ اورا گرنہیں ہوا تو تمیں برس تک اُس نے **حرام** کیا اور وہ حرام کا مرتکب ہوا۔ اب ہم برادری والے اس پر **جر مانہ** ڈالنا جا ہے ہیں ،شریعت کیا تھم دیتی ہے؟ ہم اُ سے منزا بھی دینا جا ہے ہیں جوشرع فرمائے۔ وہ سزا ہم اُسے دیں یا اُسے برادری سے جدا کردیں، یا کھاوگوں کو کھانا کھلادیں؟ ار شاد: وه نکاح نبیس مواجرام محض موا، اور مرد وعورت بر فرض ہے کہ فوراً جدا ہو جا کیں ، نہ مانیں تو برادری والے انہیں قطعا برادری سے خارج کردیں ، اُن سے میل جول، بول حال ،نشست برخاست (یعنی انمنا بینمنا) کیکافت (یعن فورا) ترک کر دیں۔ اِس کے سوایبال اور کیا **سزا**ہو عتی ہے اور جبرا کھانا ڈالنایا جرمانہ لینا جا ئز نہیں۔ نکاح کی وَکالت لیتے وقت گواہ قائم کرنا عرف : هارے یہاں اب بیرواج ہو چلا ہے کہ نکاح کے وقت شاہد کین مرين محلس المدينة العلمية (الربيالي) 🚥 🚃



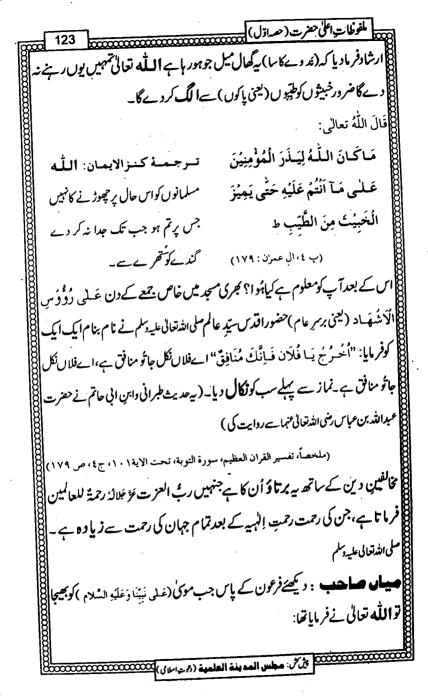
لمغوظات اعلى حضرت (حصداذل) دُوليا كايسمر ا عوض :حضورنوشہ(یعن دولہا) کا وقت نکاح سمرابا ندھنا نیز باہے گاہے ہے جلور کے ساتھ نکاح کوجانا شرعا کیا تھم رکھتا ہے؟ اد شاد : خالی چولول کا سرا جائز ہے اور یہ باہے جوشادی میں رائج ومعمول ہیں سبناجائز وحرام ہیں۔ ولیمہ سنّت ھے عسو ف : حضور و لیے کا کھانا شریعت کے س حکم میں داخل ہے اور اس کا تا رِک (یعنی حچوڑ نے والا) کیسا ہے؟ **لوشاد**: ولیمه بعدِ زِفاف(یعن سهاگ رات کے بعد) **سنت** اوراس میں صیغهٔ امر (یعن حم كالفظ) بهى وارد ب_عبدالرحمن بن عوف رضى الله تعالى عنه سارشا دفر مايا: "أوُلِمُ وَلَوُ بِشَا قٍ" وليمه كروا گرچه ايك بى دُنبه يا اگرچه ايك دُنبه يه (ملتقطأ، حامع ترمذي، كتاب النكاح، باب ى الوليمة، المحديث ١٠٩٦، ج٢، ص ٢٤٨) وولول معنى مُحتَمَل (ليعني مُراد لِيّ نِكَاحَ ہے يہلے وليمه كرنا كيها؟ عَوْض : جسشر كوگول ميں سے ايك بھى وليمه نه كرتا ہو بلكه نكاح سے يہلے اوّل روز جیسا رواج ہے کھلا دیتا ہوتو اِن سب کے لئے کیا حکم ہے؟ ار شاد: تاركانِ مُقت بي گريد سُنن مُسْتَحَبّه سے بارك (يني چوزن والا) گنامگارنہ ہوگاء اگر اے (یعنی دیسے کو) حق جانے۔ ل : پہلم عنی ایک دنبہ کی قلت پر دلالت کرتے ہیں یعنی زیادہ نہ ہوتو ایک ہی دنبہ ہی ، دوسرے معنی اس کی ثرت بریعنی اگر چه پوراد نبه مرف کرنا پڑے۔۱۲منه 🕮 گُلُّ گُ: مطس المدينة العلمية (رائي السن)

جائے گی اور اس کے بعد اگر بیا تو حرمت نکاح نہیں اگر چہ پا نا جائز نہیں۔ مدت پوری ہونے کے

بعد بطور علاج مجى دوده جنايا بلانا جائز نبيس _ (بهارشريت، حصر ١٩ مسي علميه



ملفوظات اعلى حضرت (حصداؤل) کو تکلیف ضرور ہوگی مگر بات ضروری ہے اور اِس میں آپ کی رائے دریافت کرنی ہے۔ اد شاد: میں حاضر ہوں جوفہم قاصر (یعنی ناتص نہم) میں آئے اے گذارش بھی کروں كا، اكرچه "رَأْيُ الْعَلِيلُ عَلِيلٌ" (لِعِنى يَاركى رائ بهي يَاربوتى بـــت) میساں صاحب: میری دائے ہے کہ کی کوبرا کہنا شرط ہے اس لئے ک صائب نے کہا ہے۔ کیں زر قلب بھر کس که دھی باز دھد دهن خويش بَدُشُنام ميالا صائب (ترجمہ: اےصائب گالی گلوچ ہے اپنا منہ آلودہ نہ کر کیونکہ جے تو برا کے گا اس کے دل ہے بھی { {وني صدا نظےگ∟ت) رماله "مَـلُّ السُّيُوفِ الْهَنُدِيَّةِ عَلَى كُفُرِيَاتِ بَابَا النَّحَدِيَّة" مِإِل صاحب ك ا باس پینچ چکاتھا، پیشیحت اِس بنابرهی-ا و الله : بهت بجال یعن دُرُست) فرمایا - جهال اِحتلافات فَ وُعِیْسه مهول جیسے باہم حفیہ وشافعیہ وغیر ما فِر ق البسنّت (معنی البسنّت کے گروہوں) میں وہاں ہر گز ایک دوسرے کو برا کہنا جا کڑ ٹبیں اور نخش وُشنام (یعنی گالی گلوچ) جس سے وہن (یعنی منہ) آلوده ہوکسی کوبھی نہ جا ہے۔ سیا**ں صاحب** : کچھاختلافات فروگ کی قیرٹیس سزمانٹر رسالت میں دیکھتے: منا فق لوگ کیےمسلمانوں میں <u>گھلے ملےر</u>ہتے تھے،نمازیں ساتھ پڑھتے ،مجالس میں ایاس بیٹھتے ہٹر یک رہے۔ اله شاه : بال صدواسلام (ليني شروع اسلام) مين الساقها مُكر الله عَرْدَ حَلَّ في صاف ಯ 🕬 مُرُانُ: مجلس المدينة العلمية (الرجاحال)



فَقُولًا لَهُ قَولًا لَّيْنًا أس سے زم بات كہنا۔ (س١٦٠، طه: ٤٤) اد شاد : گرمجررسول الندسلي الله تعالى عليه وللم كو إرشاد فرماما: اے نی جہاد کر کا فروں اور منافقوں ہے نَّايُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ اوران برشدت وختی کر۔ وَالْمُنْفِقِينَ وَاغُلُظُ عَلَيْهِمُ ط رب ۱ ، التوبه: ۷۲) ر انہیں علم دیتا ہے جن کی نسبت فرما تا ہے۔ یے شک تو برے خلق برے۔ وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُق عَظِيْمٍ ٥ (ب ٢٩، القلم: ٤) تو معلوم ہوا كەمخالفان دىن برشدّ ت وغِلْظَت (يعنى تَنْ)مُنافى أخلاق (يعنى بداخلاق) انہیں بلکہ بی خلق کسن ہے۔ میسان صاحب: میری مراد کافرول سینیس . (منافقین اور فرعون شاید سلمان ار شاد: بى آپ كى بېركس (يعن "بركى") توسبكوعام تقى - خيرابكو كى دائره محدود يدال مساهب : جوكلم كفركم إسه إن لفظول سے بيان سيج كم مير ار شاد: كفريات بكني والا بِحسند الله ميرا بعالى نبيس اورجب اس كاكلمة كفر 🚥 ಯ المحادث (۴جاس المدينة العلمية (۴جاس)

ملفوظات ِاعلیٰ حضرت (حمه اوّل) ۔ امونا ثابت ہوتو ان گر لے لفظوں کی کیا حاجت کہ''میر سے نز دیک ایسامعلوم ہوتا ہے' ا جس سے عوام مجھیں کہا حمالی بات ہے، شک ہے۔ ميان صاحب: مير عزديك ضرور كهنا عائد **ار شاد** : جب دلیل شرعی قائم ہوتو ضرورصاف کہنا جا ہے۔ ميان صاحب: خريه كهوكه كفركما مركمراه نه كور ارشاد: کیاخوب گرای کفریات بکنے سے بھی کسی بدر چیز کا نام ہے؟ **میاں صاحب** : یوں تو داڑھی منڈ افاس بھی گمراہ ہے مگر عرف میں گمراہ بہت بُر ا لقب ہے۔ **ار شاد**: داڑھی منڈانے والا کہ اسے فعلِ حرام جانے **فاسق** ہے گراہ نہیں، (کہ راہِ سنت جانتااور اِس پراعتقاد رکھتا ہےاگر چہشامت نفس سے اختیار نہ کی)مگر قائل کفریات قاضرور ممراه ہے۔ **میساں صاحب**: کوئی قائلِ کفریات ہوبھی! اب آپ نے اتنے بڑے عالم محدِّ ث(اساعیل دہلوی) جس کی عمر خدمتِ حدیث میں گٹی ،کو قائلِ کفریات بنادیا۔ ارشك: "سَلُ السُّيُوف" آي ني ملاحظ فرماكي مي؟ **امیاں صاحب : ہ**اں۔ ا ارشاد: میں نے اس میں کا فراکھا ہے؟ مياں صاحب : نہيں كافرنہيں لكھا۔ (الْحَدُدُ لِله يهمى غنيمت بورندبهت و بايرتو میں رور ہے ہیں کہ تکفیر کر دی۔)

ملفوظات المل معزت (حداة ل) الد شاد: توجس قدر میں نے لکھا ہے وہ ضرور ثابت اور خدمت حدیث مسلم (بین تسلیم بھی ہوتو اس سے انتفائے صلالت (بعن مراہی کانہ ہونا) لازم ہیں۔ قَالَ اللهُ تَعَالَى ترجمة كنز الايمان: الله(عُأَاخَاً) أصَّلَهُ اللَّهُ عَلَى عِلْم (ب ۲۰، العانیه: ۲۳) نے اسے باوصف علم کے گراہ کیا۔ **یاں صاحب**: ابآپ نے لکھ دیا کہ انہوں نے کہاہے: خدا کے سواکی کو نہ اد شاد : جي چھي موئي کتاب موجود ہے، يهي لفظ جا بجاد کير ليجے۔ ميان صاحب: بيكون كيمًا كه بي كاعتقاد ندر كهو-ار شاد : حضرت اُردُوز بان ہے۔ آپ ہی فرمایے کہ مانے کے معنی کیا ہیں؟ ميسان صاحب : بهلابم ني كونه مانة تولد ل نديز هة كرنو كرى ملتى - مديث کیوں پڑھتے؟ ار شاد: يآب اين نبت كيّر أس كونت ندال الفائد ألى كوكرى-**مولانا حسن رضا خان صاحب:** حفرت پجیس برس کی عرے بعدو کری ملتی بھی تونہیں۔ ميان صاحب: بملاكوئي ني كي شان مين كتاخيال كركا؟ ادشاد: كيا مَعَاذَ الله مركم في بين ل جانا بتانا كتاخي بين؟ ميان صاحب: (إنكارى ليحيس) بول كس نے كما ي **اد شاد** : استعیل نے۔ 🚥 🕉 ٫ مولس المدونة العلمية (الجاءات)

Marfat.com

ملفوظات اعلیٰ حضرت (حصراة ل) **ان مساحب** : كونى نېيى _ بھلاكوئى رسول (مىلى اللەتغالى عليەدالەرىلم)كواپيا كېر ارشاد: "نَقُويَةُ الْإِيُمان" هِي بُولَى موجود ب، وكم ليجير مياں صاحب: بھلاكوئى رسول (ملى الله تعالى عليدوالدوسلم)كوايسا كے ہے؟ ار شاد: جی رسول (صلی الله تعالی علیه واله وسلم) بی کی شان مین کہا ہے، دیکھ لیجئے نا۔ سيد مختبار صاحب : جناب ميان صاحب أس كلمات ضروريها ل ایسے ہیں جن سے دل و کھتا ہے۔ یہ (اعلیٰ حضرت قبلہ) اِن کے سبب جوش میں ہیں۔ ميا صاحب : مولوى رُوم نِه متنوى مِن لَكها بِكراب الله (عَزْوَ عَلْ) تُو ظالم ہے جتناجا ہے مجھے پرظلم کئے جا، تیراظلم مجھے اُوروں کے انصاف سے اچھا لگتا ہے۔ ارشاد: مولاناتدى رؤن الله عَزْدَ عَلْ سے يوں عرض كى ہے؟ میاں صاحب: جی مولانانے۔ اد شاد : مثنوی شریف لا وُ مولوی محمد رضاخان صاحب (یعنی سرکاراعلی حضرت رضی الله تعالی عنہ کے چھوٹے بھائی)مثنوی شریف لائے ، جناب میاں صاحب کے سامنے رکھ دی۔میاں صاحب نے ہاتھ سے ہٹادی۔ ادشاد: حضرت بتائيكهال لكهاب؟ ميا صاحب: (متنوى شريف اور بناكر) اب اس ميل لكها بي رع "گهه شهید دیده ازخر" خرکے ساتھ شہید کالفظ د کھئے۔ 🏎 🏎 مجلس المدينة العلمية (الربراسال)

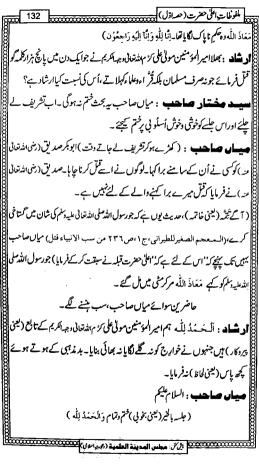
ملفوظات اعلى حفرت (حصاقل) **ار شاد** : بیفِ**س پر**اِسُتهزاہے۔(لین کناہ کرنے پر کناہ گارکا نداق اُڑایاہے)(قرآن مجید إیس) فرمایا: ترجمة كنز الايمان: چكه بال بال أو ذُق مِ إِنَّكَ أَنْسَتَ الْعَرِيْسِرُ ہی برواعزت والا کرم والا ہے۔ الْكُويُمُ0 (ب ١٥٠ الدخان: ٤٩) ای حکایت کی سرخی میں ہے: "جان من رادیدی وکدورا ندیدی" -جناب نے بینددیکھا کہمولانا کا بیارشادتو ہماری دلیل ہے۔جب ایک فابقہ کی نسبت ا كابر دين ايسي كلمات فرمات بين تو كمرابان بددين زياده مستحق تشنيع وتو بين بين-ميان صاحب: ابآب بي جوائة آب وعبدالمصطفى للص بين؟ **اد شاد** ؛ بەمىلمان كےساتھەمسن كلن كى خونى ہے!ربُ العزت بل جلالانے قرآكِ عظیم میں جوفر مایا: ترجمة كنزالايمان: اورنكاح كردو وَأَنْكِحُوا الْإِيسَامِسِي مِنْكُمُ وَالْسَصَّلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمُ ابْول مِن ان كاجوب ثاح بول اور وَإِمَا يَكُمُ ط (ب ١١٨ النور: ٣٢) ايخ لائل بندول اوركيزول كا-إے بھی مثرک کہدد بچئے ۔ (حضرت عالم اہلِ سنت (لینی اعلیٰ حضرت) نے اپ تصیدے "أكسير عظم"٢٠١١ه كي شرح" بمبير معظم"٢٠١٠ه هي تحرير فرمايا بي، شاه ولي البندصاحب نے " إِذَالَةُ الْسِينِ اللهِ " ميں حديثُ قل كي ہے: امير المؤمنين عمر فاروقِ اعظم رضي الله تعالى عنه في رسول التُصلى الله تعالى عليد ملم كي نسبت فرمايا" تُحنُتُ عَبُدَهُ وَحَدادِمَهُ" مِن حضور كابنده اورحضور كا خاوم

Marfat.com

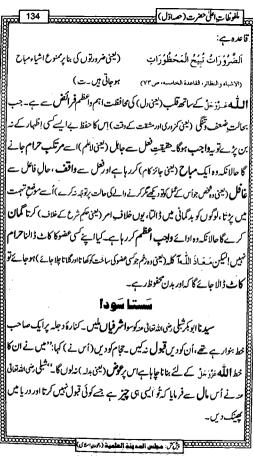
من المدينة العلمية (المجالات) المدينة العلمية (المجالات)

ملفوطات اعلى معرت (مصاول) میاں صاحب: ے ٹک۔ اد شاد: خود حضور اقدى ملى الله عليه وللم نے سب بد غد مبول كوجنى بتايا: به توجمه: ایک فرقے کےعلاوہ ماتی سب كُلُّهُمُ فِي النَّارِ إِلَّا وَاحِدَةً فرقے دوزخی ہیں۔ (ملخصاً، جامع ترمذي، كتاب الإيمان، باب ما جاء في افتراق هذه الامة، الحديث، ٢٦٥، ج ال ٢٩٢) اب كيانه كهاجائے گا كەرافضى گمراه جہنمى ہن! ميان صاحب: رافضي جني دير. ادشاد: مديث كاكياجواب؟ ميان صاحب: (سكوت فرما) ال شاد : كيا آپ كيزويك ابو بكروتر رض الله تعالى عنها كوكا فر كينے والا جنبني نهيں؟ ما صاحب: كون كبتاب؟ كونى نبير-ارشاد: رانسي کتے ہیں۔ **میاں صاحب**: کوئی دافضی ایرانہیں کہتا۔ مولوی سیِّد تَصَدُّق علی صاحب : پُھی ہوئی کا بیں وَ موجود ہیں اور کوئی کہتا ہی نہیں! **میساں صاحب** : میرے دی بارہ ہزار ملا قاتی اور عزیز رافعی ہیں ^ہی نے میرے سامنے اِس کا قرار نہیں کیا ،کوئی ایسانہیں کہتا۔ سيد مختار صاهب : هزت وه فرورايا كمت أي كما مختقة

(لینی اینے ندہب کو چھیاتے ہوئے) کچھاور کہد ماہوگا۔ ارشاد: حضرت اب وجه حمايت معلوم مولى! **ميياں صاحب** : پھر بھائيتم اُنہيں پُر اکہو، ومتہيں پُر اکہيں _ **ار شاد** : اِس کی پرواہ نہیں ۔ابو بکر وعمر رضی اللہ تعالیٰ عنما کو جواَب تک (نر ۱) کہا جا تا ہے ۔ **میاں صاحب**: ایسے ہی وہ بھی کتے ہیں۔ **ار شاد**: آپ کے نز دیک یہود ونصار کی گمراہ ہیں ہانہیں؟ **میاں صاحب :** ہوں گے۔ **ارشاد** : بي يانبيس؟ ميال صاحب: مول كرالله الله ضروريات وين من مجى تأمُّل) يد مختاد صاحب: اسوال كامطلب بير اليه اليه اليه اليه اليه اليه کہتے ہیں تو اہلِ باطل اگر اہلِ حق کو اہلِ باطل کہیں ، اس سے اہلِ حق انہیں اہلِ باطل ا کہنے سے بازنہیں رہ سکتے ۔ **یاں صاحب**: تشدد کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ الگلے زمانے میں رافضوں نے سنیوں کو مل کیا ہسنیوں نے رافضیو ل کو مارا۔ ہمار سے زو یک دونوں مرؤ ود (اللّٰہ اللّٰہ کفریات كمنے والوں كو مراہ ند كے ، رافضو ل كوجہنى ند بتائے مرستى ضرور مردود _إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا اِلْكِهِ رَاحِعُون ار شاد: آب ایسافر مائے مراہل سُنت ایسا ہر گزنہیں کہ سکتے۔ مياں صاحب: جب دونوں مسلمان ہيں اور با ہماڑے، دونوں مرؤود ہوئے (مُسبحنَ اللَّه ای دلیل سے خارجیوں نے مولی علی رضی الله عندا وراہلِ بَحمَل واہلِ صَفَّین سب پر عُنْ كُنْ: مطس المدينة العلمية (الرجاسان)



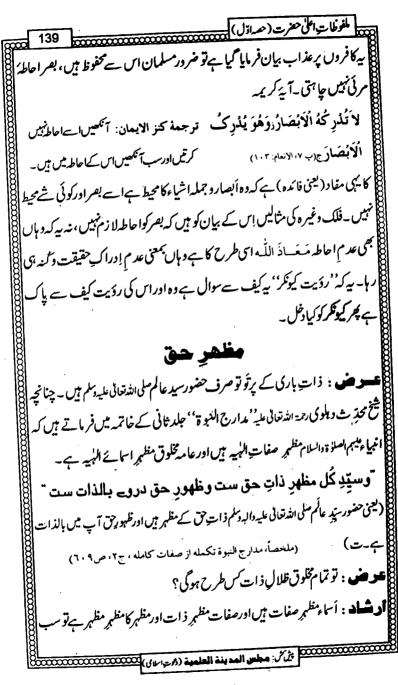
‱ مجلس المدينة العلمية (الرجاء الال)



Marfat.com

ار شاد : اس میں غورونہ اُٹ اُ ماموجب حیرت (بین جران کن) ہے باباعث صلالت (بینعمرای کا سب)_اگراس کی تھوڑی بھی تفصیل کروں تو کچھ بھیر میں نہ آئے گابلکہ او ہام کثیرہ (یعنی کثیرہ ہم) پیدا ہوجا کیں گے۔ (اس کے بعد کچھ شالیں بیان فرمائیں ،ان میں ہے ایک یادرہی) مثلاً روشنی بالذات (مین بلاداسط) آفتاب و چراغ میں ہے ، زمین ومکال این ذات میں بےنور ہیں گم بالعرض (یعنی بالواسطه) آفماب (بعنی سورج) کی وجہ ہے تمام دنیامتوً راور جراغ ہے سارا گھ روش ہوتا ہے۔ اِن (بعنی زمین ومکاں) کی روشنی اُنہیں (بعنی آنتاب د جراغ) کی روشنی ہے۔ اُن (لینی آ فاب دجراغ) کی روشنی اِن(لینی زمین درکاں) سے اٹھالی جائے تو وہ ابھی ا تاریک محض رہ جائیں۔ هر جاه تُو هى تُو عرف : يدكول كربوتا ب كه برجگه صاحب مرتبكوالله بى الله نظرا تاب؟ **اد شاد** : این کی مثال بوں سجھئے کہ جوخص آئینہ خانہ میں جائے وہ ہر طرف اپنے آپ ہی کود کیھے گا،اس لئے کہ یمی اصل ہے اور جتنی صورتیں ہیں سب ای کے **ظل** (لین عکس) ہیں گریپصورتیں اُس کی صفات ِ ذات کے ساتھ متصف (بینی موصوف) نہ ہول گی مثلاً سننے والی دیکھنے والی وغیرہ وغیرہ نہ ہول گا۔ اِس لئے کہ بیصور تیں صرف اُس کی سطح ظاہری (یعنی جسم کے ظاہری ہے) کی ظل (لیعن عکوس) ہیں ، ذات کی نہیں اور سمج وبھر (لیعن شتا ارددیکها) ذات کی صفتیں ہیں سطح ظاہر کی نہیں للبذا جواثر ذات کا ہے وہ بین طِلا ل (میمی عُوس) ميں پيدانه ہوگا بخلاف حضرتِ إنسان كه بيطلِ ذات ِ بارى تعالىٰ ہے لہذا ظلال صفات سے بھی حب استعداد (یعنی بقد رصلاحیت) مبرہ و ر (یعنی فیضیاب) ہے۔

ملفوظات اعلى حضرت (حصاؤل) شعاع بصری آئینہ بریو کرواپس آتی ہاوراس رجوع میں اینے آپ کو دیکھتی ہے۔ البذاؤي جانب بالمس ادر بالمس وخى معلوم بهوتى بياق آئيية تمهاراعين نبين محرد كعاياس نے تنہین کو یے ظلال اپنی ذات میں معدوم ہیں کہ کمی کی ذات منتنصی وجودنیس (لین ا و جود کا نقاضانیس کرتی)۔ ترجمة كنزالايمان: بريزقانى ب كُلُّ شَيُّءِ هَالِكٌ إِلَّا وَجُهَهُ ط (ب، ۲، القصص: ۸۸) وا اس کی ذات کے۔ مگر وجو دِعطائی سے ضرورموجود ہیں۔اسلام کا پہلاعقیدہ ہے کہ ترجمه:اشاء کی حقیقتیں ثابت ہیں۔ حَقَائِقُ الْاَشْيَاءِ ثَابِتَةٌ نظر ہے ساقط (لینی اوٹھل) ہونا واقع ہے عدم نہیں کہ نہ ناظر رہے نہ نظر ۔ نی الواقع (يين درحقيقت) إس مشابده ميس خودايي ذات بھي اُن کي نگاه ميں نہيں ہوتي۔المسنّت کا ایمان ہے کہ قیامت وجنت میں مسلمانوں کو دیدارالی (عزز عَلْ) بے کیف و بے جہت و بي محاذات (ليني كيفيت ومت ومقالي كيغير) بوكار فَالَ اللَّهُ تَعَالَى: وُجُوهٌ يُومَنِيْدِ نَاضِوةً أَلَّ إِلَى رَبَّهَا ﴿ كُوم مند رَّوتازه مول م اي ربّ فَاظِوَ قُلْ (ب ٢٩، الغيامة: ٢٢، ٢٢) (عَزُو مَوا) كود يَصِح موت -كفارك في مين فرما تاب: بے شک وہ اس ون اپنے ربّ كَلَّا إِنَّهُمُ عَنُ رَّبِّهِمْ يَـوُمَــيْلٍ (عَزُوْ مَلُ) سے قیاب میں رہیں گے۔ لَمَحُجُو بُو رَن ٥ (ب ٢٠ المطنفين:١٥)



Marfat.com

لفوظات اعلى حضرت (حصه اوّل) ملق مظہ_ر ذات ہے اگر چہ بواسطہ یا بوسا کط شیخ کا کلام مظہر ذات بلا واسطہ میں ۔ نہیں گرحضور مظہر اول ملی اللہ علیہ ملم اُن کے لفظ و کھیئے کہ " ظهور حق دروے بالذات ست" (يعنى حضور جان عالم ملى الله تعالى عليه والبوملم بلا واسطة عليم حتى جير) (ايضاً) صُلُحَ كروانيكا مُعَاوَضه ليننا ناجانز هي به صنع : دو خصول میں کچھروییہ کا جھگڑا تھا، چودھری نے صلح کرادی اور مدعی (یعنی دعویٰ کرنے والے) کو مدعا علیہ (یعنی جس کے خلاف دعویٰ کیا) سے رویے مل گئے اور برادری میں بیدستور ہے کہ جب چودھری تصفیہ کراتا ہے تواپنا کچھی مقرر کر رکھا ہے وہ لے لیتا ہے چنانچہ اس ملے میں بھی چودھری اپنے حق کا طالب ہوا، اُس (یعن مدگ) نے دیے سے انکار کیا۔ جب اُس (مینی چودھری) نے اصرار کیا تو اُس (مین مدی) نے سب رویے چودھری کو دے دیئے۔ چودھری نے کہا کہ میں صرف اپناحق لول گاسب نہ لوں گا۔اُس نے کہا:''میں خوتی ہے دیتا ہوں۔''چودھری نے وہ سب رویے لے لئے۔ بعد اِس واقعہ کے مدعی نے کچبری میں نالش (یعن مقدمہ) دائر کی کہ جمھے رویے نہیں ملے اور دوشخصوں نے جو اِس واقعہ میں موجود تھے اور جن کے سامنے روپے و يے گئے تھے مم كھاكر شہادت دى كداسكوروپے نہيں ملے -ان سب كے لئے اثربعت كاكياتكم ہے؟ ار شساد : مرگ سے چودھری کوروپید لیناحرام ہے، ہاں! پی خوتی سے دیتو مضايقة نبيل اور مدى اور كوابول برفويد فرض ہے كہ جھوٹا دعوىٰ كيا اور جموثی كوابى دى اورجھوٹی قشم کھائی

رشوت کو اپنا حق قرار دینا کفر هے

عرف : رشوت بھی اپی خوش سے دی جاتی ہے بلکہ چودھری نے تو مانگا اور مدی نے ا اِنکار کیا۔ پھر جب چوہدری کا بہت إصرار ہواتو اُس نے سب دے دیئے جس سے

معلوم ہوا کہ دہ ناخوش تھا اور میہ کہ خوشی سے دیتا ہوں جھوٹ تھا اور رشوت تو بغیر طلب خود دی جاتی ہے پھریہ کیوں جائز ہوا؟ اور دہ تو حرام ہی ہے اور چودھری کو جو پہلے لینا

حرام تقااس کی وجه بھی نیتِ رشوت ہو گی؟

ارشاد : انسانی خواہش دہاں تک معتبر ہے جہاں تک نہی شرعی (لیمی شرعی ممانعت) نہ ہو،رشوت شرع نے حرام فرمائی ہے وہ کسی کی خوشی سے حلال نہیں ہو سکتی صیح حدیث

میں فرمایا:

اكرَّاشِي وَ المُرْتَشِي فِي النَّارِ مِن رَثُوت لِينِ والا اوردينِ والا دونول جَهِني مِين ـ

(محمع الزوائد، كتاب الاحكام، باب في الرشاء، الحديث ٢٠ . ٧، ج٤، ٥٩)

چودهری جوملے ہوجانے پرملح کرانے کامعاوضہ لیتے ہیں وہ رشوت نہیں ہے، بلکہ ایک

ناجائز أجرت ہے۔جاہلانِ بے فِرو (یعنی بے عقل جائل) ایک جگہ حق کا لفظ ہو لتے

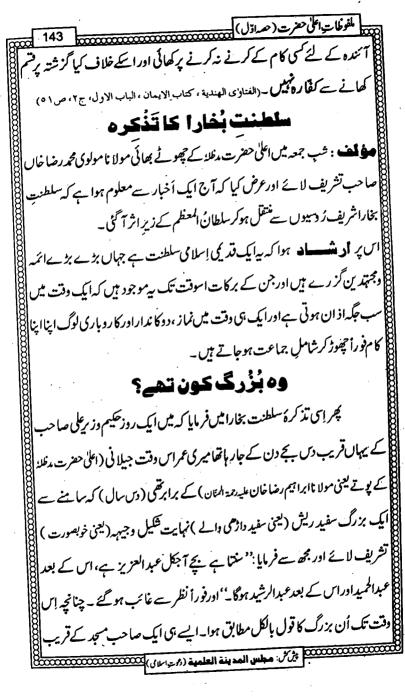
ہیں بہاں تک کہ رشوت خوار (یعنی رشوت کھانے والا) بھی یہی کہتا ہے کہ ہمارا حق دلوائے۔ بیکفرہے کہ حرام کوخت کہا۔ وَ رع (یعنی تقویٰ) کا مرتبہ وہی ہے جوتم نے کہا کہ

ظاہراً ندازے مظنون (یعنی گمان) ہوتا ہے کہاس کا بید یناحقیقة خوشی سے نہ ہوا۔اگر چہ بظاہر صاف کہ رہا ہے کہ میں خوشی سے دیتا ہوں مگر شریعتِ مطہرہ میں زبان مُظہرِ مَا فِی

الصّب مير (يعن دل ك بات ظام كرن والى) مانى كى ب، وه جو يحمد عنى ولالت ب

ಯ 🕉 مطس المدينة العلمية (الرتباس) 🚥 🚃 💮 💮

اور یہ کہ خوثی ہے دیتا ہول **صریح تصریح ہے اور ف**اوکی قاضی خال وغیرہ میں مُصَرُّ ر (بعنی واضح طور بربیان کیا حمیا) ہے؟ مریح کے آمے دلالت نہ لی جائے گی۔ الصّريحُ يَفُونَ الدُّلَالَةَ (درمنحتار معه رد المحتار، كتاب النكاح، باب في منع الزوحةالخ ،ج٢، ص فقه میں بہت مسائل اِس پرہنی ہیں کہ خانیہ وہند میہ وُوَرِ مختار میں ہیں اورتمام'' کتاب حِيَل'' (حِيلِي بِع) کي بنا ہي اس پر ہے ور خه اصل غرضِ قبلي اس عقد ملفوظ (ليني زبان ے ذریعے کئے محے معاہدے) کے مطابق نہیں ہوتی ۔ درزی سے کپڑ اسلوایا اور اُجرت دين كا كجوذ كرنة يا أجرت واجب وكل كداس كالبيشة ى وليل اجرت بي كان أكر أس نے كهدديا تھا كەيىل تىم سے أجرت نہيں چاہتا اب نہيں لے سكنا ،اگر چددوستانہ میں کہا ہو۔اگر چدالی صورت میں غالبابی کہنا دل ہے نہیں ہوتا بلکے مض مُرُ وَ ت ولحاظ ہے، حتی الا مکان مسلمان کا حال صلاح (مین اچھائی) پرمحمول کرنا (مین مجمنا) واجب ہے۔ قیاس سے ضمرالینا کہاس نے خوشی سے دینا جھوٹ کہااس کی طرف تین کبیروں ک نبت ہے، ایک تو جوٹ، دوسرے دھوکا دینا کردیا تاراضی سے اور اس پر رضا فاہری، تیسرے درام ال دینا ''جس کالینا حرام ہے دینا بھی حرام ہے۔'' لبندا اس کا قول وا تعیت (یعن حقیقت) پرمحمول کریں گے (یعن سمجیس مے)۔ قسم کا کفّارہ کب واجب هو گا؟ عد ف : حضورتهم كاكفاره يجينين؟ اد الساد : اس صورت من كفاره برئيس الوبد يكفاره أن تتم كابوتا ب جو



ملغوظات اعلى حضرت (حصاؤل)

144

لے میرے بھین کا زمانہ تھا، جھے بہت دیرتک غورے دیکھتے رہے۔ پھرفر مایا کدئو رضا علی خاں کا کون ہے؟ میں نے کہا:''پوتا۔''فرمایا:''جھبی۔''اورفوراَ تشریف لے گئے۔

سنّت قبليه كا قَضًا هونا

عوف : نمازِفرض بے بل کی سنتیں ند ملنے سے کیاوہ قضا ہوجاتی ہیں؟ **او شاد** : اینے وقت سے تضایجی جائیں گی ندوقتِ نماز سے۔

(الفتاوي الهندية، كتاب الصلاة ، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٢)

امام کی تَقَلِید ضروری ھے

عسو ف : کیاائمہ مجبتدین (لیمن الم اعظم ابوطیف الم شاقعی الم مالک اورالم احد بن صبل وغیرهم رفته الله تعالی علیم اجمین) میں اختلاف ہے جو ہاتھوں کے باندھنے میں

اختلاف ہے كەبعض سينے پراوربعض ناف پر باندھتے ہيں؟

ار شاد : خربوزہ کھا سے فالیز (مین فربوزے کے کھیت) سے کیا غرض اس میں نسہ پڑ سے جو کچھائمہ نے فرمایا مطابق شرع ہے اور جو خلاف کریں تو امام ہی کس بات کے بیرا کیک کوامام کی تقلید حاصلے ہے۔

زيارت سركار غيباللم كا وظيفه

عوف : صبيب اکرم مل الله تعالى عليه رام کې زيارت پشريفه حاصل ہونے کا کيا طريقه ہے؟

ا و ساد : وُرُ دوشريف کی کثرت شب بل اور سوتے وقت کے علاوہ ہر دقت تکشير (يدی کثرت) رکھے بالخصوص اِس وُرُ دوشريف کو بعد عشاء سو باريا بنتنی بار پڑھ سکے (يدی کثرت) رکھے باد پڑھ سکے دوسری کھیں۔

(يدی کثرت) رکھے بالخصوص اِس وُرُو درشريف کو بعد عشاء سو باريا بنتنی بار پڑھ سکے دوسری کھیں۔

(عدد کا مدینہ کا مدینہ العامیة (8 مدارات))

يزھے۔

اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا اَمَرُتَنَا اَنُ نُصَلِّى عَلَيْهُ اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا هُوَ اَهُلُهُ اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَما تُحِبُّ وَ تَرُضَى لَهُ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَما تُحِبُّ وَ تَرُضَى لَهُ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى رُوحٍ سَيِدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْآرُواحِ اللَّهُمُّ صَلِّ عَلَى رُوحٍ سَيِدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْآرُواحِ اللَّهُمُّ صَلِّ عَلَى جَسَدِ سِيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْآجُسَادِ

اَللَّهُمَّ صَـلِّ عَـلٰى قَبُرِ سَيِّـدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْقُبُورِ صَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوُلْنَا مُحَمَّدٍ ؞

حصول زیارت اقدی (ملی الله تعالی علیدوالد دسم) کے لئے اس سے بہتر صیفتہیں مگر خالص تعظیم شان اقدی (ملی الله تعالی علیدوالد دسم) کے لئے پڑھے اس نبیت کوبھی جگدنددے کہ مجھے زیارت عطا ہو،آ گے اُن کا کرم بے حدو بے انتہا ہے۔

فراق ووصل چه خواهی رضائے دوست طلب

كسه حيف باشداز وغيسر اوتمنائي

(قربت و دُوری سے کیا مطلب! دوست کی رضا وخوشنودی طلب کر کہ اِس کے علاوہ اُس سے

دوسرے کی آرز وکر ٹاافسوس ٹاک بات ہے۔ ت)

سائِل کا کُتُب کے حوالے طَلَب کرنا کیسا؟

پھرایک مئلہ معمولی پیش ہوا جس کے اخیر میں لکھاتھا کہ جواب بحوالہ کتب ارقام فرمایا جائے (یعنی کتابوں کے حوالے سیت لکھاجائے)۔

مرسيرين مجلس المدينة العلمية (يرتاسي)

المفوظات الخل معزت (مداذل)

جن کے جواب فرمادیے جاتے تھے۔ حوالہ کتب وہاں کہاں تھااور آ جکل مُسدُلُسل (بین دیل سے تابت کیا ہوا) مفضل (بین بالنعیل) صفحہ سطر در مافت کرتے ہی

>) عالانكه بجصته بجويجي نه ہوں۔

اسْتَفَاتُه کس دن پیش کیا جائے؟

عوف : حضوراً یک استفافہ پیش کرنا ہے۔ اِس کے داسطے کونسا دن سناسب ہے؟ او شاد : اِس کے لئے کوئی خاص دن مقرونہیں البتہ حدیث شریف میں ارشاد ہے

کہ جوشف کسی حاجت کو **یفتے کے د**ان صبح کے داقت قبل طلو یا آفتاب اپنے گھرے نگلے تو اس کی حاجت روائی (یعنی حاجت **ب**ری ہونے) کام**یں صامن (ی**عنی ذرور) ہول -

(كنزالعمال، الحديث ١٦٨٠٨، ٣٢٠ ص ٢٣١)

عوض : حضورا قدس ملى الله قالى عليد كلم في برحاجت ك لئے ارشاد فر مايا ہے؟

ارشاد: بال جائز حاجت (ك ك) بوتا جائي-

نَمازمیں قرآن کا لفظ بدل جانے کا حُکُم

عوض: الَّمْ كَ بِارِكِ مِن الكِ جُكْرُ عَذَابٌ عَظِيْمٌ " آيا جِ الْرَمْ ازْ مِن اَلِيْم

ا پڑھاہوجائے گی یانبیں؟

ا**د شہداد** : ہاں ہوجائے گی ہماز اُس غلطی ہے جاتی ہے جس ہے محنی فاسد ہو کئیسا میں میں میں

جائمي (يعن مجز جائمي)۔

(ملخصاً، الفتاوي الهندية كتاب الصلاة، الفصل الخامس في زلة القاري، ح ١٠ ص - ٨)

يُّ كُرُ مِنْ المِدينة العلمية (التاحال)

نماز میں بُلند آواز سے بسم الله پڑھنے کا حکم عرض : نماز میں اگر بِسُمِ الله شریف بالجم (یعن باوازباند) فکل جائے تو کیا حکم ے؟

ارشاد : بلا قُصد (ليني بداراده) نكل جائة خير ورنة قصد أكروه_

(ملخصاً، غنية المتملى، فصل كراهية الصلاة، ص ٣٥٦)

ایک مَسْجِد کا سامان دوسری مَسْجِد میں لے جانا کیسا؟

عرف : دومبحدی قریب قریب میں ایام بارش میں ایک شهید ہوگئ اب اس کا سامان دوسری مبحد میں کدوہ بھی شکت (یعن نوٹی پھوٹی) حالت میں ہے لگا سکتے میں یانہیں ؟

ار شسساد: ناجائز ہے تی کہ ایک مجد کالوٹا بھی دوسری مجدیں لے جانے کی ممانعت ہے گا مسلمانوں پر دونوں کا بنانا اور آباد کرنا فرض ہے اور اس قدر قریب

بنانے کی ضرورت ہی کیا؟

🗪 🕉 محلس المدينة العلمية (راحت الراي)

لمفوظات اعلى معزت (مصادل)

من من عنده كها جانب والا جهنم كا مستحق هي عرض : حضور مجد كنام عد وصول كر كنودكما بات كوكراتم عن الم

اد شاد : جہنم کامتحق ہے۔

ارشاد : ۱۳۸۴ کے۔ اینس زندگی میں ھی قَبْر تیار کروانے کا حکم

عوف : اگرکونی شخص اپن زندگی میں پخته (مینی کی) قبر بنوا کرتیار رکھے بیجا زُنے یا

ناجائز؟

ادشاد: الله تعالى فرما تا ب:

وَمَسا تَسَدُرِى نَفُسَ بِلَيِّ أَرُضٍ ﴿ كُولَيْ بَيْنِ جَانَا كَدُوهُ كَهَالِ مَرْسُكًا-

تُمُوُكُ ط (ب٢١، لفنن: ٣٤)

قبرتارر کھنے کا شرعا حکم نہیں البتہ گفن سِلوا کر رکھ سکتا ہے کہ جہاں کہیں جائے اپنے

ساتھ لے جائے اور قبر ہمراہ نہیں رہ عتی۔

خُطبے سے پھلے بسم اللّٰہ پڑھنا کیسا؟

عوض: جعدوميدين كا خطبه عبسم الله جائزے؟

ارشاد: أعُودُ بِاللهِ آسته يزهاس كابعد خطبه يزه- ا

و المحتار على المرأ المحتار كتاب الصلاة ، باب الحمعة ، مطلب في قول الخطيب ... الح ، ج٢٠ ص ٢٤)

لِ الْمُلْ حَمْرَت ملیدرو رب اوْ حافماً فی رضویہ جلد 8 صنحہ 302 پرائ تم کے موال کے جماب بھی ارشاد فرماتے ہیں: (بم اند تربید) نہ باواز نہ اِ ففا مکار تنہا اُنسوڈ ڈیسال کے آ بہت پڑھ کرھم المحی سے شروع

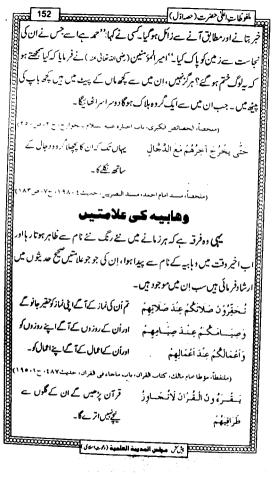
___(فآوي رضويه ج ٨ م ٢٠٠٠) علييه

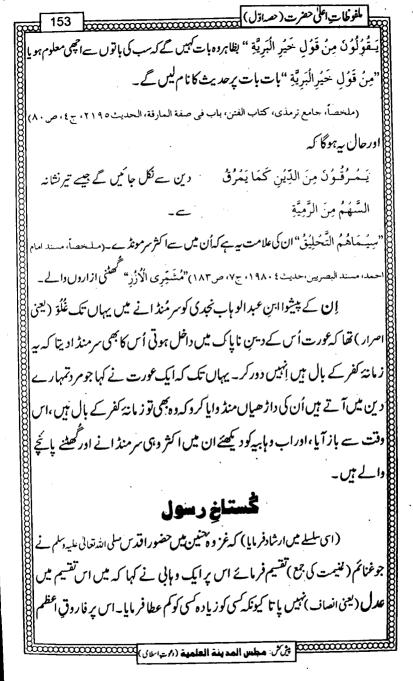
يري مطنس المدينة العلمية (رات اللي)

ملفوظات اعلى حضرت (حصاة ل) عمامے کے ساتہ نماز پڑھنے کی فضیلت عبر ض : اگرنماز کے وقت ممامہ باندھ لے اور سُنّوں کے وقت اُتار لے کہ در دِسر کا المان ہے تو جائز ہے یانہیں؟ اد شاد : خیز، مُراُولی (یعی بهتر) بیه به کدندأ تارے ایک جعد ممامه کے ساتھ ستر جعدبغیرعمامہ کے برابرہے۔ (كترالعمَّال ،الباب الثالث في اللباس،الحديث ١١٣٠، ج١٥، ص١٣٣) بُخار کے شکرانے میں نَوافل ادا کرنے والے بُزُرُگ (ای بیان میںارشادہوا کہ) در دِسراور بخاروہ **مبارک** امراض ہیں جوانبیاء علیم الصلوٰ 8 والسلام کو ہوتے تھے ، ایک ولی اللّٰدرحمة اللّٰہ تعالیٰ علیہ کے در دِسر ہوا ، آپ نے اس شکر ہیمیں **تمام رات** نوافل میں گز اردی کہ ربُ العزت تبارک وتعالیٰ نے مجھے وہ مرض دیا جوانبیا علیم العلاۃ والبلام کوہوتا تھا۔اللّٰہ اَنْحَبَر ! یہاں بیصالت کہا گر برائے نام در دمعلوم ہوا تو یہ خیال ہوتا ہے کہ جلد نماز پڑھ لیں۔ پھر فر مایا: ہرایک مرض یا تکلیف جسم کے جس مُوضِع (یعیٰ جگہ) پر ہوتی ہے وہ زیادہ کفارہ ای موقع کا ہے کہ جس کاتعلق خاص اس سے ہے لیکن بخاروہ مرض ہے کہ تمام جم میں سرایت کرجا تا ہے جس سے بِاذُنِهِ تَعَالَى (يعن الله تعالى عظم سے) تمام رگ رگ کے گناہ نكال ليتا ب- ألْحَمُدُ لِله كرجم اكثر حرارت ودر دسرر بهاب-مَنْ كُنْ: مجلس المدينة العلمية (١/١-١٠١١)

ملفوظات اعلى حضرت (حصراقل) خُلَفَانہ ر اشدین کے زمانہ میں بدمنھب موجود تھے؟ عوض : حضور خلفائ راشدين كزماندين بهي فرقد وبابيتها؟ **ار شساد** : ہاں یہی وہ فرقہ ہے جےعبداللہ بن عباس میں اللہ تعانی عبدانے امیرالمومنین حضرت علی کز م_{الش}تعالی وجهه انگریم سے فہماکش (یعن نصیحت) کی اجازت حیا ہی تھی اور حککم امیر المؤمنین (می الله تعالی عنه) تشریف لے گئے اور ان سے لوچھا: کیا بات امیر المؤمنین (رہی اللہ نتائی عد) کی تم کو نالب ند آئی ؟ انہوں نے کہا واقعہ صَفَّین میں ابومویٰ اشعری (رمی اللہ تالىءنى) وحكم (لىى مُصِف) بنايار شرك مواكد الله تعالى فرما تا ب عَمْنِينِ مَر الله (عَزْوَ عَلْ) كے لئے۔ إِن الْحُكُمُ إِلَّا لِلَّهِ طَ (پ۱۲، يوسف: ٦٧) بن عباس رض الله تعالى عنهانے فر مايا: اس قر آن كريم ميں بيآيت بھي تو ہے: زن وثو ہر میں خصومت (لیعنی جھکڑا) ہو فابعثوا حكما من أهله ایک فکم اس کی طرف ہے بھیجوایک فکم وَحَكُمًا مِنْ أَهْلِهَا ءِ اس کی طرف ہے۔ (ب٥، النساء: ٢٥) اگروہ دونوں!صلاح چاہیں گے **والـ اُنہ** (غــزُونِیل)ان میںمُیل (بینی طاپ) کروے گا۔ دیکھوو ہی طریقہ اِستِد لال (مینی دیل کچڑنے کاطریقہ) ہے جو وہا ہیکا ہوتا ہے کہ علم غیب وامداد وغیر جابین ذاتی (بینی سی کے دیے بغیر حاصل ہونے والی شے)وعطائی (بینی الله كعطا عاصل مونے دال في كفرق بي تكم بنداورفي كي آيتوں بردموكا ا یمان اورا ثبات کی آیوں سے کفر۔ اِس جواب کوس کر اُن میں سے پانچ بزار تا ئب

(لیمی توبرکنے دالے) ہوئے اور پانچ ہزار کے سر پرموت سوارتھی ، وہ اپنی شیطئت برائی) پر قائم رہے۔امیرالمؤمنین (رضیالشقالی عنہ) نے اُن کے قُل کا حکم فر مایا۔ اِمام حسن و امام حسین اور دیگر اَ کابر رضی الله تعالی عنم کوان کے قبل میں تأکمل ہوا (یعنی جھی محسوں ہوئی) کہ بیقوم رات بھرتہجدا در دن رات تلاوت میں بسر کرتی ہے ہم کیونکر اِن پرتلوارا ٹھا ئیر المرامير المؤمنين (رضى الله تعالىءنه) كوتو حضور عالمم مَا كَانْ وَمَا يَكُو وُصلى الله تعالى عليه وسلم (يعني ماضی اور متنقبل کا حال جانے والے) نے خبر دے دی تھی کہ نماز روز ہ وغیرہ ظاہری اعمال کے بَشِدُّ ت پابند ہوں گے، ہاایں ہمہ (یعنی ان سب کے باوجود) دین ہے ایسا نکل جا کیں گے جیسے تیرنشانے سے، قر آن پڑھیں گے مگران کے گلوں سے نیخ نہیں اُترے گا۔ جامع ترمدي، كتاب الفتن ، باب في صفة المارقة، الحديث ٢١٩٥، ج.٤، ص ٨٠) **امیر** المؤمنین (رض الله قعالی عنه) کے حکم ہے لشکر اُن کے قبل پر مجبور ہوا ،عین مرکے میں خبر آئی کہ وہ نہر کے اس یار اُتر گئے ۔امیر المؤمنین (رضی اللہ تعالیءنہ) نے فرمایا: **والیله** اِن میں سے دس اُس یار نہ جانے یا کیں گے ،سب اِی طرف قتل ہوں گے۔ جب سب قتل ہو چکے امیر الممؤمنین (رض اللہ تعالیٰ عنہ)نے لوگوں کے دلوں ہے اُن کے تقویٰ وطہارت وتہجر و تلاوت کا وہ **خدشہ دفع** (یعنی دُور) کرنے کے لئے فر مایا: ''تلاش كرو،اگر إن مين ذُوُ النَّه دُيسه (يعنى پيتان والا) ما يا جائے تو تم نے بدر ين اہلِ ز مین کوفل کیا،اور اگر وہ نہ ہوتو تم نے بہترین اہلِ زمین کوفل کیا۔'' حلاش کیا گیا ، لاشوں کے پیچے نکلا جس کا ایک ہاتھ بیتانِ زَن کے مشابہ تھا۔امیر المؤمنین (رمی اللہ تعالی عنہ) نے تکبیر کہی اور حمدِ الٰہی (غـزُونحَلُ) بجالائے اور نشکر کے دل کا شبہ اِس غیب کی 🏧 🅉 مطس المدينة العلمية (الرتواسان)





(رضیانلد تعالیٰ عنه) نے عرض کمیا که یا رسول الله (غـــرَّدُ خـلٌ وسلی الله تعالی علیه والروملم) ا جاز ت دیجئے کرمیں اِس منافق کی **گرون ماردوں ۔ فر** مایا کدا*ے دینے دے ک*داس کی نشل ے ایسے ایسے لوگ پیدا ہونے والے ہیں۔(وہابیہ کی طرف اٹنار دفر مایا) اُس سے فر مایا: افسوس اگر میں جھھ برعدل ندکروں تو **کون** عدل کرےگا، اور فرمایا الله (غزر خ^{ار})رحم فر مائے میرے بھائی موکٰ (طیالصلوٰۃ والسلام) پر کہ اِس سے زائدا پذادیے گئے۔ سركار مدينه سيهاله كي سَخَاوت علما فرماتے ہیں:حضور اقدس ملی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ایک اُس دن کی عطاحیٰ ہا دشاہوں کی عمر بھر کی وادو دِہش (لینن سخاوت و بخشش) سے زائدتھی ، جنگل عنائم سے جرے ہوئے میں اور حضور (ملی اللہ تعالیٰ علیہ دالہ دملم) عطا فر مار ہے ہیں اور ما تکنے والے ہر مرتے ملے آتے ہیں اور حضور (ملی اللہ تعالیٰ علیہ والد بملم) چیچھے ملتے جاتے ہیں -یہاں تک کہ جب سب اُموال تقتیم ہو لئے ایک اُعرابی (یعی عرب سے دیہات میں دیخ والے) نے روائے مبارک (مین جا درمبارک) بدن اقدس پرسے تھینج کی کہ شانہ وہشتِ مبارک پراس کا نشان بن گیا،اس پر اِ تنافر مایا:اے لوگو! جلدی نه کرو، دانله که**م جھے کو** ى وقت محمل شديا و كعد رسنه طرف صحيح البحاري، كتاب الحهاد حق ہے،اے مالک عرش (غے زوجل) کے نامی اکبر اقتم ہے اس کی جس

سی ہے، اے مالک حمر ک (عسف کا علی ایک جمال کا علی ایک کا نے حضور (ملی اللہ تعالیٰ ملیہ دار پہلم) کوچق کے ساتھ بھیجا کہ دونوں جہان کی فعیش حضور

(ملى الله تعالى عليه والبريم) مى عطا بي يدونول جهان حضور (ملى الله تعالى عليه والبريم) كى

(ملتقطأ، مسند امام احمد بن حنبل، مسند ابو سعيد، الحديث ١١١١٨، ج٤، ص ٣٣)

ار ثاد فرمایا: "اگرتم الے آل کردیتے تو اُمّت پرسے بڑا فتندا تھ جاتا۔"

میرتھا وہابیہ کا باپ جس کی ظاہری ومعنوی سل آج دنیا کو گندہ کررہی ہے اس نے مجلس اقدیں کے کنارے پر کھڑ ہے ہو کرایک نگاہ سب پر کی اور دل میں بیا کہتا ہوا چلا گیا تھا کہ مجھ جبیبا ان میں ایک بھی نہیں، پہغرور تھا اس خبیث کو این نماز وتُقَدُّس (یعنی پرمیزگاری) براور نه جانا کهنماز هو پا کوئی عمل صالح وه سب اس سر کار (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والد بہلم) کی غلامی و بندگی کی فرع ہے جب تک اُن کا غلام نہ ہو لے کو کُی بندگی کامنهیں دے سکتی ، (یعنی صفور جان عالم ملی الله تعالی علیه دالبدالم کی غلامی مثل ' جز" ب اوراً عمال صالح مثل'' شاخ''اور پُر ظاہر کہ شاخ بغیر جڑ مے محض باطل و بکار۔) · تعظيم رسُول ولبذا قرآ ن عظيم مين إن ك تعظيم كواين عبادت سي مُقَدَّ م ركها كفرمايا: لِتُسوُّ مِندُوا بِاللُّبِهِ وَرَسُولِبِهِ تَاكِيمَ ايمان لادَاللَّه ورمول (عَزُوْخَلُ مِلْ وَتُسعَدِزَرُوهُ وَتُسوَقِ رُوهُ ج الشتالي عيدوالدوام) يراوررول (ملى اشتعالى وَتُسَبِّحُوهُ أَكُرَةً وَ أَصِيلاً 0 للدواد وملم) كَتظيم وتو قير كرو ، اورضح وشام (ب٢٦، الفتح :٩) الله (عَزْرُ عَلُ) كى ياكى يولولينى تمازير حو توسب میں مقدم ایمان ہے کہ بے اس کے تعظیم رسول معبول نہیں ،اس کے بعد تعظیم رسول ہے کہ بے اسکے قماز اور کوئی عباوت مقبول نہیں ، یوں تو عبداللہ تمام جہان ہے گرسیاعبداللدوہ ہے جوعبد مصطفی (بعنی غلام مصطفی) سے در ند عبد شیطان مُوكًا _ اَلُعِيَاذُ بِاللَّهِ تَعَالَى

The second of the

👓🚥 🛪 🔥 مطس المدينة العل

ملفوطات اعلىٰ حضرت (حصادّل) قُربانی کی کھال مَدارِس میں دینا کیسا؟ - فلف : ایک روزمولوی سعیداحمداین مولوی فتح محرصا حب تا سب که صوی اعلی حضرت مطلاسے آ کر دست بو*س ہوئے اور قربانی کی کھال کے* بارے میں دریا ہت كيا كەمدارس ميں دى جاسكتى ہيں يانہيں؟ ار شاد: موابلا شبان کا صرف (یعن خرچ) مدرسه میں جا تز ہے۔ **مولوی صاحب** نے صاحب ہدایے اقول فال کیا کہ ان کے زدیے قربانی کی کھال بیچنے سے اس کی قیمت کا صدقہ واجب ہو جاتا ہے اور صدقات واجبہ کا مَصُرَ فَ''مُصر فِ زَكُو ة''ہےاورمصرفِ زَكُو ة میں تملیکِ فقراء (لعنی فقیروں کو مالک ابنانا) شرط ہے۔ اس پر ادشاد فرمایا کمیاس صورت میں ہے کہ تُموًل (فین صول مال) کے لئے بیج کہوہ بوجیہ نَقُرُّ ب(یعنی ثواب کی دجہ ہے) صالح تَمُوُّ ل (یعنی حصول مال کا ذریعہ بننے کے لائق) ندر ہی ، بخلاف اس صورت کے کہ فی سبیلِ الله مصارف خیر میں صَرف کے لئے ييچ كىدىي بھى تُر بت (يعنى ثواب) بادريهال قربت ہى مقصود ب_علاوه برين ايعنى اس کےعلاوہ) مدارس میں دینانچ کر ہی نہیں ضرور ہےا کثر کھالیں مدارس میں بھیج دیتے میں اور کھال توغی کو بھی دے سکتاہے، چرمدرسددیدیہ نے کیا تصور کیا ہے؟ حيلهٔ شرعی کا طريقه أس وقت مولوی حسنین رضا خاں صاحب بھی حاضر خدمت تھے انہوں نے عرض کی کہ جب صدقاتِ واجِبہ میں تملیک شرط ہے تو زکو ہ اورا یسے صدقات مدارس میں کیونکر صرف کئے جاسکیں گے؟

ملفوظات اعلى معرت (مصاؤل) ار شاد استم العن ناظم) کوچا سئے که زکو ة وصد قات واجب کی رقوم سے ضرورت ؟ الله كان بين خريد و اورانيس ما لك بناد ب يابدك جوكها ناطلب كوررست بطريق ا با حت دیا جاتا ہے (یعنی مالک بنائے بغیر صرف ویں کھانے کی اجازت دی جاتی ہے۔) کمکیا کو پہلے روپید دے کر مالک بنادے کچروہ روپیمہتم کو واپس کریں اور کھانے میں شریک ہوجا کیں البتہ مدرسین کی تنخواہ میں بیرویبیصر ف کرنا جا ترنہیں ۔ دوران سفرقران ماک کهال رکھ؟ عد ف : حضورا گرقر آن عظیم صندوق میں بند ہواور ریل کاسفریا کسی دوسری سوار کی میں سفر کرر ہا ہے اور نتگی جگہ کے باعث مجبوری ہے تو ایک صورت میں صندوق بینچے رکھ الكتاب يأتبيس؟ **ار شاد** : هرگز ندر کھے انسان خودمجبوریاں پیدا کر لیتا ہے، در نہ کچھ دشوار نہیں ،جس ے دل میں قر آن عظیم کی عظمت ہوہ مرطرح ہے اس کی تعظیم کا خیال رکھے گا۔ عصر کا مکروہ وقت کونسا ھے؟ عدف : وقت عصر مين كرابت كس وقت آتى ب؟ اد شعاد: غروب آ فآب ہے ہیں من قبل تک کراہت نہیں یعنی سلام کے بعد ہیں من غروب میں باتی رہیں۔اس کے بعد کراہت ہے کہاں وقت تخینی (لینی انداز أ 8 اس وت) میں آفاب برنگاہ جنگتی ہے۔ (رد السعندار علی الدوالمعنار کتام 🛭 مطلب في طلوع الشمس من مغربها اج٢٠ ص٣٧) من مطس المدونة العلمية (الرعامال)

ے کہ پہلے فجر کی سب نمازیں ادا کر لے، پھر ظہر، پھرعصر، پھر مغرب، پھرعشاء کی، ب نمازیں ساتھ ساتھ ادا کرتا جائے اور اِن کا ایبا حساب لگائے کہ تخمینہ (لیخی اندازه) میں باقی ندرہ جا کمیں زیادہ ہوجا کمیں تو حرج نہیں اوروہ سب بقدر بطاقت رفتہ رفة جلداداكر لے، كابلى نەكرے۔ جب تك فرض ذمەير باتى ربتا ہے كو كى نفل قبول نہیں کیا جاتا یہ نیت ان نماز وں کی اس طرح ہومثلاً سوبار کی فجر قضا ہے تو ہر بار بول کے کہ سب سے پہلے جو فجر مجھ سے تضا ہوئی۔ ہر دفعہ یک کیے، یعنی جب ایک ادا ہوئی تو با قیوں میں جوسب ہے پہلی ہے اس طرح ظہر وغیرہ ہرنماز میں نیت کرے جس پر ببت ینمازیں قضاہوں۔ قَضًا نَمَاذِينِ ادا كرنے كا آسان طريقه اس کے لئےصورت تخفیف (لینی آسانی)اور جلدا دا ہونے کی یہ ہے کہ فالى ركعتوں ميں بجائے المحمد شريف كے تين بارسبدن الله كي، اگراك با ہمی کہہ لے گا ، تو فرض اوا ہو جائے گا نیز تسبیحات رکوع و چود میں صرف ایک ایک با "سُبُحَانَ رَبِّي الْعَظِيْمِ" اور "سُبُحَانَ رَبِّي الْاعُلَى "يِرْهُ لِيمَا كَا فَي بِ-تَعْتَمُ ك بعددونون درووشريف كربجائ "اللهُمة صَلَ عَلَى سَيِّدِنَا مُحُمَّدٍ وَاللهِ" وتروں میں بجائے دعائے تنوت" رَبِّ اغْضِرُلِی " کہنا کا فی ہے۔ طلوع ٓ آ فماب کے میں من بعد اور غروب آفاب ہے میں من قبل ، نماز ادا کرسکتا ہے۔ اس سے پہلے یاس ہے بعد ناجائز ہے۔ ہرالیا تخص جس کے ذمہ نمازیں باقی ہیں چھپ کر پڑھ { كە گىنا ە كاإعلان جا ئرنېيى -

نيت صاف مَنْزِل آسان

(ای سلیے میں ارشاد فرمایا) اگر کمی شخص کے ذیعے میں یا چالیس سال کی نمازیں ہیں واجبُ الا دا ، اُس نے اپنے ان ضروری کا موں کے علاوہ جن کے بغیر گزرنہیں کاروبار ترک کرکے پڑھنا شروع کیا اور یکا ارادہ کرلیا کہ گل نمازیں اداکر کے آرام لوں

گااور فرض کیجنے ای حالت میں ایک مہینہ یا ایک دن ہی کے بعد اُس کا انتقال ہوجائے

تو الله تعالى اپنى رحمتِ كاملى الله تعالى الله تعالى : و الله تعالى ال

اِلَّى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدُرِكُهُ جَرت كرتا بوا نَظَ چَراْ است يُل موت

الْمَوْتُ فَقَدُ وَقَعَ آجُرُهُ عَلَى آجائة اسكالاً الله (عَزُوَخِلً) ك

الله ط (به،الساء ١٠٠١) ذمة كرم پرثابت بموچكار

یہاں مطلق فرمایا؛ گھرسے اگر ایک ہی قدم نکالا اور موت نے آلیا تو پورا کام اس کے نامهٔ اعمال میں کھتے ہیں، سارا

دارومدار حسن نبیت پر ہے۔

رَسُولُوں اور ملائكہ كو ايصالِ ثواب كرنا

عسسو ف : حضور جب رُسل وملا تكه معصوم بين توان كوعليه الصلاة والسلام كهدكرا ليصال

ا ثواب کرنے کی کیا ضروت ہے؟

ار شهد : اول توعليه الصلوة والسلام اليصال توابنبيس بلكه اظهار تعظيم ہے، اوران پر خوار مسلم ميرين مراجع ميرين ميرين مستعنز ديون مراجع

نزولِ درود دوسلام کی دُ عااور ہو بھی تو ملا نکہ زیادتِ تُواب سے ستعنی (یعنی بے نیاز) نہیں۔

Marfat.com

سکین ہوگئے۔''وہاب زندہ موجود ہیں اس روز ہے بھی شاکی نہ ہوئے۔

پریشانی دُور کرنے کا وظیفہ

مولوی عبدالرحمٰن صاحب بہاری ہے پوری بحضور حاجی عبدالجبار صاحب کو اکثر اوقات پریشانی رہتی ہے۔

ار شاد: لاحول شریف کی کثرت کریں بیہ ۹۹ بلاؤں کو وقع (بینی زور) کرتی ہے۔ اُن (بلاؤں) میں سب سے آسان تر پریشانی ہے اور ۲۰ بار پڑھ کر پانی پردم کر کے روز بی لیا کریں۔

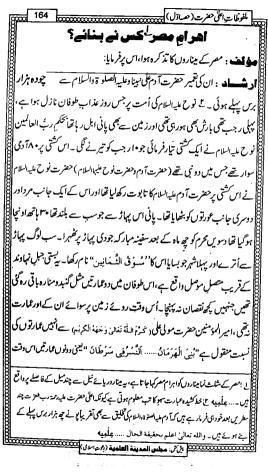
رِزُق میں بَرکت کا وظیفہ

عوفى: بركت رزق كى كوئى دُعاحضورارشادفرما كين مين آجكل بهت پريشان هول ـ الد شخص: بركت رزق كى كوئى دُعاحضورارشادفرما كين مين آجكل بهت پريشان هول الوشكان عند الدولت الله والدولم عن من من مناف محص بيش پهيرل فرمايا كياده شيخ تهمين يا دُنهين جو منافكه كى اور جس كى بركت سے روزى دى جاتى ہے منافكه كى اور جس كى بركت سے روزى دى جاتى ہے منافكه كى اور جس كى بركت سے روزى دى جاتى ہے منافق من وزيا آئے گى تيرے پاس ذيل وخوار موكر مُلُوع فجر كساتھ سوباركها كر " سُنه خن الله الْعَظِيم وَ بحَمْدِه اَسْتَغْفِرُ الله"

(لسان الميزان،حرف العين، الحديث ١٠٠، ٥١-٢، ص ٣٠٤)

اُن صحابی رضی اللہ تعالی عدکوسات دن گزرے متھے کہ خدمتِ اقد س میں حاضر ہوکر عرض کی :'' حضور! دنیا میرے پاس اس کشرت ہے آئی، میں جیران ہوں کہاں اٹھا دُل کہاں رکھوں۔''اس تنبیج کا آپ بھی وِرُ در کھیں ، حَّی الا مکان طلوع صبحِ صادق کے ساتھ ہو ور نہ صبح ہے پہلے جماعت قائم ہوجائے تو اس میں شریک ہوکر بعد کوعد د پورا کیجئے اور جس دن قبلِ نماز بھی نہ ہو سکے تو خیر طلوع سمس سے پہلے۔

المركث مطس المدينة العلمية (الرت الال)



ملفوطات اعلیٰ حفرت (حصاة ل) بنائی گئیں جب ستارہ نسرنے برج سرطان میں تحویل کی تھی۔نسر دوستارے ہیں:نسر واقع ونسر طائر اور جب مطلق بولتے ہیں تو اس سے نسرِ واقع مراد ہوتا ہے۔ان کے دروازے پرایک گدھ کی تصویر ہے اور اسکے پنچہ میں کنگچہ ہے جس سے تاریخ تعمیر کی طرف اشارہ ہے ۔مطلب یہ کہ جب نسرِ واقع بر جِ سرطان میں آیا اس وقت یہ عمارت بن جس کے حساب سے بارہ ہزار چھ سوچالیس سال ساڑھے آٹھ میںنے ہوتے ہیں کہ ستارہ چونسٹھ برس قمری سات مہینے ستائیس دن میں ایک درجہ طے کرتا ہے اور اب برج جدی کے سولھویں درجہ میں ہے تو جب سے چھ برج ساڑھے پندرہ در ہے ے زائد طے کر گیا۔ آ دم علیہ العلوة والسلام کی تخلیق سے بھی تقریباً پونے چھے ہزار برس پہلے کے بنے ہوئے ہیں کہان کی آفرینش (یعن خلیق) کوسات ہزار برس سے پچھزا کد ہوئے۔لائِرَم (یعی ضرور) بی قوم جن کی تعمیرے کہ پیدائش آ دم علیالسلا ،واللام ا پہلے ساٹھ ہزار برس زمین پررہ چی ہے۔ ادم ثانی کون؟ عوف : حضور النبين ١٨ انسانون کي اولا د ډوکر د نيا برهي؟ ارشاد : بهماندگان طوفان ہے کئی کی نشل نہ بوھی صرف نوح علیہ السلام کی نشل تما ونيامي ب_قرآن عظيم فرماتاب: وَجَعَلْنَاذُرَّيَّتَهُ هُمُ الْبِقِيُنَ 0 ترجمه كنز الإيمان: اورجم في اك کی اولا د باتی رکھی۔ (٤٣٠ الصافات:٧٧) ای لئے انہیں آ دم ٹائی کہتے ہیں۔

ملفوظات اعلى حضرت (حصاؤل)

حضرت نوج عليه السلام كي عُهْر كتسني تهي؟

عوض : کیا حضرت نوح عیداله اس نه دنیایش ایک بزار برس قیام فرمایا؟ اد شاد : نبیس بلدتقر یا سوله سو برس تک تشریف فرمار ہے۔

(الجامع لاحكام القران للقرطبي، سورة العنكبوت تحت الاية ٢٤ ١٠ج٧، ص ٢٥٠))

كيا انبياء عيمم سلام يرحج فرض تها؟

عرف : حضورانبيا عليم الصلاة والسلام ربهي حج فرض مواتفا؟

ار شاد: ان پر فرضیت کا حال خداجانے! انبیاء علیم اصلا و والسلام فی کرتے رہے۔

کعبہ کی فریاد

حضرت سلیمان علی السلام کاتخت ہوا پر اُڈ تا جار ہاتھا جب کعبہ منظمہ ہے گزرا تو کعبہ رویا اور بارگا واَصَدِیت میں (مینی السلّه عَدْوَ عَلیْ سے صفور) عَرض کی کہ'' ایک نی تیرے انبیاء ہے اور ایک کشکر تیر ہے لشکر وں ہے گزرانہ بھے میں اُتر ا، نہ نماز پڑھی۔'' اِس پر ارشادِ ہاری تعالیٰ ہوا:'' نہ روا میں تیرا حج اپنے بندوں پر فرض کروں گا جو تیر ک طرف ایسے ٹو ٹیس کے جسے پر ندا ہے تھونسلے کی طرف اور ایسے روتے ہوئے دوڑیں کے جس طرح اُونٹی اسے بچہ کے شوق میں اور تھے میں نمی آخر الزماں کو بیدا کروں گا

(ملخصاً، تفسير بغوى، صورة النمل تحت الأية ١١٨، ج٣، ص ٢٥١)

غَرُور إوِر غُرُور ميں كيا فرق هے؟

مسوف : عُرُ ورپا تُقعِّ (مِين زير سَماته) اورغُرُ ورپالضُم (مِينَ بيْن مِينَ سَمَاته) مِينَ كِما رُق سر؟

ار شاد : غَر در بالفتح **فرين** اور بالضم **فريب** .

جو مجھےسپ انبیاء سے زیا وہ پیارا ہے ملی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم۔''

وَلُكُنَّ: مِعِلَسَ الْمَعِينَةِ العَلَمِهِةَ (جُعِمَالُ)

Marfat.com

تعالی علیہ دالہ دسلم) میں حاضر ہوئے اور شرعی سز اکے خواست گار (لینی طلب گار) ہوئے کہ

ہم یاک ہوجا کیں ۔ دونوں کوسنگسار کیا گیا۔جس وقت حصرت ماعز رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو

ಯ ಯ 🌣 مجلس المدينة العلمية (١٤-براءاي)

ملفوظات اعلى حفرت (حمالال)

سنگ ارکیا آپ بھا گے لیکن سنگ اربول نے پکڑ کر قل کردیا ، اور خدمتِ اقدس میں حاضر ہو کرگل واقعہ بیان کیا فرمایا '' تم نے چھوڑ کیول نہیں دیاجب وہ بھا گا تھا۔'' اور فرمایا ،''اس نے ایسی قوید کی کدا گرتمام شمر رتقعیم کی جائے سب کو کافی ہو۔''

(ملتقطاً، صحيح مسلم، كتاب الحدود، باب من إعترف بالزنى، الحديث ١٦٩٥، ص ٩٣٢)

صحاب مرام (ملیم الرضوان) میں سے ایک صاحب نے حضرت ماعز رض اللہ

تەنىء ئەنىبىت بُر سےالفاظ فرمائے ،اس پرارشاد ہوا:'' براند كھوش دىكھ رېابول كەدە جنت كى نېرون مىن غوط لگار ہاہے''

(ملحصاً، فتح الباري، شرح صحيح البخاري، تحت الحديث ١٨٢٠ - ١٨٣ - ١٠٩ ص ١٠٩)

رَجْم کی حکایت

اسى طرح محابيد من الله تعالى عنهانے اپنج جرم كا خدمتِ اقدى ملى الله عليه بيام

میں حاضر ہوکر اقر ارکیا اور مزائی خواستگار ہوئیں۔ ارشاد فر مایا: ''تیرے پیٹ میں تمثل ہے بعد وضع تمثل (بعن پر بیدا ہونے کے بعد) آنا۔'' بعد فراغ صل پچے کولیکر حاضر ہوئیں

اورعرض کی کہ اِس میچے کواب کیا کروں؟ فرمایا: اِس کودود ھابلاؤ۔ بیارشادعالی س کر دولی بی واپس گئیں اور دو برس بعد بیچے کو لے کر صاضر ہوئیں۔ بیچے کے ہاتھ میں روثی کا مگزاتھا، عرض کی حضور! (سل اشتان ملہ، اردام) اب بیر دوثی کھا تا ہے ، پچے لے کر کر تجم

(یعن سَلّسار) فرمایا۔

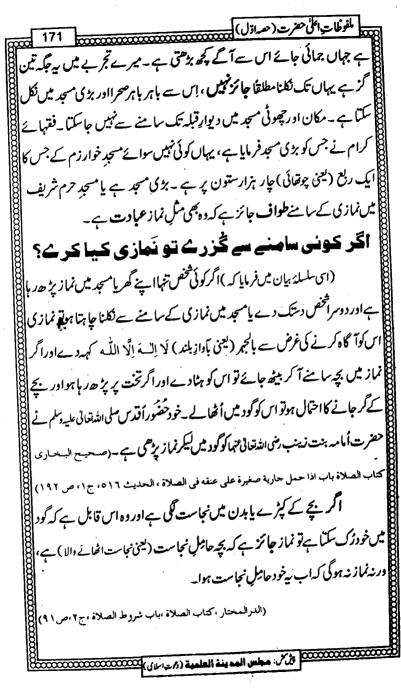
(ملتقطاً، صحيح مسلم، كتاب الحدود، باب من اعترف بالزني، الحديث ١٦٩٥، ص ٩٣٢)

وَلُ كُن مطس المدينة العَلْمِية (وعداماي)

زردهیں کے۔(بارٹریت دعہ م ۱۷)... عِلْمِیه

بدمذهب كى نمازِ جنازه پڑھنے والے كا حكم عبو ف : ایک صاحب نے وہائی کے جنازے کی نماز پڑھی ،ایے خص کے لئے کیا **ار شاد** : وہانی، رافض، قادیانی وغیرہم کفارمُر تیّزین ^{اے} جنازے کی نماز انہیں ایسا (ایعنی کافر) جائے ہوئے بر همنا کفر ہے۔ (ملحصاً الفتاوی الرضوبة، ج٩، ص ١٦٩) منبر چھوڑ کر خُطبہ پڑھنا خلاف سنّتھے عوف : اگرامام نبرچود كرخطبه يزهاور جب كهاجائ و كم كونى حرج نبيل ا صورت مين نماز هوگي مانېيس؟ اد شاد : خلاف شقت ہے۔ إمام كو تمجمانا جائے تماز ہوگئ _ حضور اقدس سى الله تعالى ملیہ رہلم کے زمانے میں برسول کے بعد منبر شریف بنا ، اکثر ستون کے سہارے حضور (صلى الله تعالى عليه والهوسلم) نے خطبہ فر ما يا ہے-(سنن الدارمي ، باب مقام الامام اذا خطب ، الحديث نَمازی کے سامنے سے گزرنے کا طریقہ موف : حضور نمازی کے سامنے سے نکلنے کے لئے کتنا فاصلہ در کارے؟ **ار شاد** : خَاشِعین (لینی ظاہری وباطنی آ داب کی رعایت کرتے ہوئے مکمل آوجہ ر <u>کھے وا</u>لوں) ک می نماز پڑھے کہ قیام میں نظر موضع ہوو (لینی تعدے کی جگہ) پر جمائی تو نظر کا قاعدہ

ل مُرْ تَدِّ مِن مُرِّ مَدُ كَا بِحَى جَعْ جِ اور مِرة وافض ہے كداملام كے بعد كى اليے امر كا افكار كرے جو ضروريات و من ہے ہو يعنی زبان کے گلہ تفريح جس میں تا دیل مجھ كی مخوائش ندہوں ہوئى بعض افعال بھى اليے ہيں جن سے كافر ہوجاتا ہے مثلا برت كو تجدہ كرنا مصحف شريف كو نجاست كی چگہ چينگ و بنا ۔ (بہار شريعت جدمدہ ہم ۱۲۲)، علميده



نبوت کا جھوٹا دعل کی کرنے والے ہے معجز ہ طلب کرنا کیسا؟ مع ف : حجو في مُدَدَّعي نبوت (ليني نبوت) جمونا دموي كرنے دالے) سے مُسعُب وَ اللهِ ا کیا جاسکتاہے؟ ار شاد : اگر مری نبوت ہے اِس خیال ہے کداس کا عجز ظا ہر ہو مجز ہ طلب کر سے آقا حرج نہیں اورا گر **حقیق کے** لئے معجز ہ طلب کیا کہ میعجز ہ بھی دکھا سکتا ہے یانہیں تو فورا كا فرجوكيا - (الفتاؤي الهندية، كتاب السير، الباب التاسع في احكام المرتدير، ج٢٠ص٢٦٢) مَنْهَب چھوڑنے کی شرط پر مُبَاحَثُه کرنا کیسا؟ (ای تذکرے میں فرمایا کہ)مباہنے میں لوگ بیٹٹر ط کر لیتے ہیں کہ'' جو ساکت (لیخی لا جواب) ہو جائے گاوہ دوسرے کا ند ہب اختیار کرلے گا۔'' بیخت حرام ہاوراشد حماقت ہے۔ہم اگر کسی ہلا جواب بھی ہوجائیں تو ندہب پر کوئی الزام نبین که جمارے مقدس ند برب کامُد اربم پرنہیں، ہم انسان ہیں اِس وقت جواب خیال میں نہآیا۔ تحریری بات چیت کے فوائد من اس وقت مولانا مولوي فيم الدين صاحب اورمولانا مولوي ظفر الدين صاحب اورمولا نامولوي احمد افتار صاحب صديقي ميرهي اورمواا نامولوي احماطي ا : نبی کے بوئی نبوت میں سے ہونے کی ایک دلیل ہیہ ہے کہ می اسپنے صدق کا اعلانیہ دعوٰ کی فریا کر کا ایا ہے عادیہ کے فا ہرکرنے کا ذمہ لیتا ہے اور منکروں کواس کی شرف بلاتا ہے انشدمز وجل اس کے دعوی کے سطائق اسر عالم عادى فا ہرفر ماديتا ہے اور منکرين سب عا جزر سبتے بين كها آن كوچو و كتبتے بين يہ جيسے حضرت صالح عليه السلام كانات معزت موی علیه السلام کا عصا کا سانپ بوجا نا اور پد بیضا اور هفترت پینی علیه السلام کانمر وول کوجلا و بینا اور ماورزاد

Marfat.com

ا مد هے اور کوڑھی کو اچھا کر دینا اور ہمارے حضور کے مجزے تبہت ہیں۔ (بہار شریعت ،حصہ ایمس ۲۸) ... جلمیعه

صاحب ميرهمي ومولا نامولوي رحم الني صاحب ناظم انجمن ابل سُنّت و مدرس مدرس ً ابلٍ سُنت ومولا نامولوى امجدعلى صاحب مدرس مدرسرة المسمنت ومهتم مطبع ابل سُنّت وغيره حضرات علمائے کرام (رحمۃ اللہ تعالیٰ علیم) حاضرِ خدمت تھے۔انجمن کے آ ریہ نار یہ لیکے مقابل جلبے ہورہے تھے۔ بیرسب<هزات جلسہ مناظرہ سےمُفَکفَر ومنصور (یعیٰ کامیار وکامران) واپس آئے تھے ،رام چندر مناظرِ آربیا کی چُڑب زبانی اور بے حیائی کا ذکر ہور ہاتھا کہ بات بیجھنے کی لیافت نہیں رکھتا ، بے حیائی سے پچھے نہ کچھے کیے ضرور جاتا ہے۔ ا*س پر ار شساد فرمایا تخت غلطی ہے کہ*الیوں سے زبانی بات چیت ہو، اِس کا حاصل یمی ہوتا ہے کہ وہ کچھ نہ کچھ کجے جائےگا جس سے لوگ جانیں کہ بردا مُقرِّر ہے ، برابر جواب دے رہا ہے ۔انسان میں بیقوت نہیں کہ زبان بٹد کردے ، بے حیا کفار الله عَزُوَ عَلَ كَحَصُورنه يُوكِيس كُومِ إلى بهي زبان جلي بي جائے گي، يہال تك ك ىنە برئىمر فرمائى جائے گى اوراً عضاء كوتىم ہوگا بول چلو_ ل :اعلى حضرت عليدرته رب اهزية في رضوبه جلد 21 صغمه 124 بر لكصة جين؛ (بهندؤون) مين ايك نيا فرقہ ہے جو**آ میں**کہلاتا ہے، وہ زبانی طور پرتو حید کا دعویٰ کرتے ہیں اور بت پرتی کے حرام ہونے کا اقر ار بھی کرتے ہیں لیکن برادری اُلفت وعمت اور اتحاد میں ان کا رویہ مِت پرستوں سے مختلف نہیں ، ان بت کے ساتھ ان کی الفت ومحبت ان کا اتحاد قائم ہے جو پقر، پانی ، درختوں اور تر اشیدہ مورتیوں کو خدا بھتے ہوئے پوجتے میں اور بیانمیں اپناہم فرہب اور دی بھائی خیال کرتے ہیں۔ پھر پیضبیث اگر چہ غیر کی عبادت و بندگی سے پر ہیز کرتے ہیں مگر مادہ اور روح دونوں کو اللہ تعالیٰ کی طرح قدیم اور غیر کلو ق انتے ہیں اور کہتے ہیں۔ پس اگر عبادت ہیں شرک بنہ ہوا تو وجوب وجود میں شرک ہو گیا ہی ہر وجہ سے ان پر تین خدالا زم ہو گئے لبذا وہ یقینا مشرک میں ، اُن کا دعویٰ تو حید ہوا میں یا دُں رکھنے کے متراد ن ہے ہم آخری درجہ پر فرض کرلیں کہ وہ مشرک نہیں تا ہم ان کے کفریعن **کا فِر** ہونے میں بات کرنے کی کوئی ش نہیں اس لئے کہ جوحضور مایہ امسازہ والسلام کے ساتھ نہ ہووہ **کا فر**ے اور جوانھیں کا فرنہ جانے وہ خود اساتھ برابر ہے۔ (فآؤی رضوبہ، ج۲۱،ص۱۲۴)... عِلْمِیه ‱ مطس المدينة العلمية (الرتباسان)

ملفه طات اعلی حضرت (حصرات ل) توجمة كنز الايمان: آج بمال ك ٱلْيَهُ مَ نَحُتِهُ عَلْيَ ٱفُوَاهِهُمُ وَ تُكَلَّمُنَا أَيْدِيْهِمُ وَتَشْهَدُ مُوْمِول بِرمبر كردي كادران كي باته أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ0 ہم ہے مات کریں گے اوران کے یاؤں (ب ٢٣، يش: ٦٥) ان كے كئے كى گوانى وس كے۔ تو ایسوں سے ہمیشة تحریری گفتگو ہونا چاہئے ، کہ مُکر نے بد لنے بحلنے کی گلی ندر ہے۔ بہت دھوکہ ہوتا ہے کہ وہابیہ وغیرہ سے فرعی مسائل بر گفتگو کر بیٹھتے ہیں۔وہالی غیر مقلد تادياني وغيروتو جاہتے ہى يەجى كەأصۇل چھوژ كرفرى سائل بىس گفتگو بوءانبيل برگز موقع نہ دیا جائے ۔ان سے بہی کہاجائے کئم اسلام کے دائرے میں آلو،ا پنامسلمان ہونا تو ٹابت کرلو پھرفر^عی مسائل میں گفتگو کاحق ہوگا۔ مُلاقات سے واپسی پر مُصَافَحَه کا حُکُم عرض : مُصَافَحه والبي كونت كرنے كامُمَا نَعَت فرماني كُل عـ؟ **ار شاہ** : نہیں ۔ اصحاب نبی (صلی اللہ تعالیٰ علیہ دالہ وسلم و رضوان اللہ تعالیٰ علیم اجھین) جسب " أيس مين ملته تتصمصا فحد فرمات به (شعب الإيسان، قسة إبراهيم في المعانقة في الثالث والشلائين من الناديد، الحديث ٥٩ ١٨ ج ١ من ٤٧٥) اور جب رُخصت جوتے معالقة كرتے ا (یعنی گلے ملتے)۔ مُعَانَقُه كرنے كا طريقه عوض : معانقه ایک جانب یا دونوں سے کرے؟ اد شاد: ایک طرف ہے ہمی ہوجائے گالیکن عرب شریف میں دونوں طرف ہے

Marfat.com

لرتے ہیں۔

نمازکے بعد مُصَافَحَه کرنا کیسا؟

عُوف : نماذِ جعه ياعيدين يأبعد صلاة و بنجاً نه مصافح كرنا كيما يج؟

ادشاد: جائزے _ائسم الریاض میں ہے

الْكَصَحُ انَّهَا بِدُعَةٌ مُبَاحَةٌ لللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ الله

(نسيم الرياض، القسم الاول في تعظيم العلى الاعلى لقدر النبي، ج٢،ص ١٣) [

اذان میں روضهٔ اَنور کی طرف منه کرنے کا حکم

عسسوف : اذان میں نام اقدی (صلی الله تعالی علیه داله دسم) لیتے وقت روضة منوره کی طرف مونه پرسکتا ہے؟

ارشاد: خلاف سننت ب-سوائے حَلَّى عَلَى الصَّلوة اور حَلَّى عَلَى الصَّلوة اور حَلَّى عَلَى اللهُ الللهُ اللهُ الله

تعالیٰ علیہ دسلم کہے م<mark>یلی محبت نہیں ،ق</mark>لبی محبت وہی ہے کہ شریعت کے **دائرے** میں رہے اس میں اپنی اصلاح کی مُدَا فَلَثْ نہ کرے البتہ خطبے میں اگر کلمہ شریف خطیب

پڑھے تو رَفْعِ سَبابہ کرنے (یعن شہادت کی انگلی اٹھانے) میں کوئی حرج نہیں۔

گناه کبیره اور صغیره میں فرق

عوض : گناہ کبیرہ وصغیرہ میں کیافرق ہے؟

ارشاد: گناه کبیره سات سو بین - (السعامع لاحکام الفران للفرطبی، سوره النساء تحت

الاية ٢١، ج٣، ص١١٢) إن كي تفصيل بهت طويل - الله هُ عَزْوَ حَلَ) كي معصيت

جس قدرہے سب کبیرہ ہے۔اگر صغیرہ وکبیرہ کوعلیحدہ شارکرایا جائے تو لوگ صغائر

ملفوظات اعلى حضرت (حصدالال) (بعنی مغیرہ گناہوں) کو ملکا سمجھیں گے، وہ کبیرہ ہے بھی بدتر ہو جائے گا۔جس **گناہ کو ملکا مان کر کرے گاوہی کبیرہ ہے۔** اِن کے انتیاز کے لئے صرف اس قدر کافی ہے کہ فر**ض کاترک کبیرہ ہےاوروا جب کاصغیرہ۔جو گ**ناہ بے ای اور اِصرار سے کیا جائے کونسی عورتیں غیر مَحُرَم کے ھاں جاسکتی ھیں؟ عد ف : کون کون عورتیں غیرمحرم کے یہاں حاسکتی ہں؟ ار شاد : مر بضه، غاسله (بعن عورت کی میت کوشس دینے والی) ، قابله (بعنی والی) کاغیر ا محرم کے یہاں جانا جا تزے۔ (رد المحتار على الدرالمختار، كتاب النكاح، باب في السفر با غیر مُسُلم کو مسلمان کرنے کا طریقہ عوض : لا ذہب کومسلمان کرنے کا کیا طریقہ ہے؟ الوشطة: لا إله اللَّه أسخمة رَّسُولُ اللَّه (صلى الله الله الله الله والم)-ز مین کے مین اُ گانے والا ایک الله (غزوندل) ہے۔ جلانے (لیمی زنده کرنے) والا ا كالله (غرُوخل) ب- مارف والا اكالله (غرُوخل) ب- روزى وي والا ايك الله (عزو على) ب- ايك الله (عزو جل) كي يوجا ب- الله (عزو على) كي موا کسی کی یو جانبیں ۔لوگ اللّٰہ (غۇز غۇ) كے سواجن جن كو پو جتے ہیں و وسب جھو قے ہیں۔الله (غزو خل)نے اپنے بندوں کو سچارات دکھانے کے لئے اپنے نیک بندے

لمفوظات اعلى حفرت (حصاؤل) بھیے جنہیں نبی اور رسول کہتے ہیں، وہ جو پکھ خدا (عَزُدُ خَلُ) کے پاس سے لائے وہ سہ حق ہے۔میں ان نبیوں اور کتابوں پر **ایمان** لایا،ان میں سب سے بڑے اور سب کے سر دار **محم**صلی اللہ تعالیٰ علیہ دسلم ہیں ، وہ جو کچھ اللہ (عَزْدَ حَلّ) کے پاس سے لائے سب سے ہے۔میرادین مسلمانوں کا دین ہے مسلمانوں کا دین سچاہے۔مسلمانوں کے دین كسوااوردين جتن بين وهسب جمول بين لا إله إلا الله مُحمَّدٌ رَّسُولُ الله (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) وَسُوسُونِ كَا عَلَاجِ عوض : وسوے کے دفع (یعنی دُورکرنے) کے لئے کیا پڑھے؟ **اَرِشَاد** : امَنُتُ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاحِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَىء ِ عَلِيهُم (يعني: مِن الله ورسول پرايمان لا ياوي اول وآخر، وبي ظاهروباطن باوروبي هر چزکوجانتا ہے۔) پڑھنے سے وسوسے وقع ہوجاتے ہیں بلکہ صرف امَنُتُ باللّٰہ وَ رَسُولِهِ 🖁 ہی کہنے سے دُور ہوجاتے ہیں۔ ریا کے لئے نمازوروزہ کا حکم عوض : اگرریا کے لئے نمازروزہ رکھاتو فرض ادا ہوگایا نہیں؟ ارشاد: (مَعَاذَ الله) فِقَهِى نمازروزه موجائكًا كرمُفْسِد (يعنى نمازياروزه تورْف والاكولى كام) نه يايا گيا، ثواب نه ملے گا، بلكه عذابِ نار كامتحق موگا_روزِ قيامت أس سے كها جائے گا:''او فاجر! اوغادِر!او خابر!او کافر! تیراعمل حَبط (لینی ضائع) ہوا، اپنا اجر اُس **ے ما نگ جس کے لئے کرتا تھا۔'' (**ملتفطاً، شعب الایسمان، کتاب ، باب فی احلاص العمل

ಯ 😘 🌣 مطس المدينة العلمية (الرجاءاراي)

الخ الحديث ١٩٨١، ج٥، ص ٢٣٦) يكى إيك براكي رياكي نرمت كوكافى ب

تبارك شريف كا مقصد

ع**ے وض : '' تبار**ک' بعد مرنے ہی کے ہوسکتا ہے یاز ندگی میں بھی کرسکتا ہے ، اور مقدار سوامُن صحح ہے ماہیں ؟

ارشاد: برسال كرين الك بى سال جارك شريف مقصود اليسال أواب ب

اورشریعت میں اس کی کوئی مقدار مقرر نہیں۔ جتنا ہواور جب ہوپاک مال اور خالص نہیت ہے اللّٰہ (غیرُزُخِرُ) کے لئے ہو، ہرنے کے بعد ہوپازندگی میں ہر مسال کریں

کوئی حرج نہیں بلکہ مقرر کر مے **موقوف** کرنانہ چاہیے۔

سورهٔ مُلك كَى فضيلت

إس كے فواكد بے شار ميں اس ميں سور و تبسارك (لينى سور و مك) شريف

پڑھی جاتی ہے۔ اِس سور ہ کریمہ کے برابر عذاب قبر سے بچانے والی اور راحت پہنچانے والی کوئی چیز نہیں ، اگر اس کے پڑھنے والے کے یاس لما نکہ عذاب (لیفی

پہچائے والی لوئی چیز میں ، اگر اس کے پڑھنے والے کے پاک ملا ملہ عمد اب ا- ق عذاب کرنے نے آ تا چاہتے ہیں تو ان کورو کی ہے، دور دسری طرف ہے آ تا چاہتے ہیں

عذاب عزیت انا چاہے ہیں وان وروں ہے، وودوس کے انا چاہے ایا تو اُدھر ماکل ہوتی ہے اور فرماتی ہے کہ اِس کے ماس شدا کو ایر جھے پڑھتا تھا۔ فرشتے

ر در رق ق رون ہے در رون ہے اور ہے۔ عرض کرتے ہیں:'' ہم اس سے تھم ہے آئے ہیں جس کا ٹو کلام ہے۔'' تو فرماتی ہے

کٹمبر جاؤ جب تک میں واپس نہ آؤں اس کے پاس نہ آنا ور بارگا والٰہی (غـــرُونه لُ) میں حاضر ہوکر اپنے پڑھنے والے کی مَغْفرت کے لیے الیا جھڑ اکرتی ہے کی کلو ت کو

اییا جھڑنے کی طاقت نہیں ، انہا یہ کہ اگر منفرت میں تا خیر ہوتی ہے وض کرتی ہے۔ '' وہ جھے پڑھتا تھا اور وُ نے اُسے نہ بخشا ۔ اگر میں تیرا کلام نہیں تو جھے اپنی کتاب میں

يُرُكُر. محلس العدينة العلمية (الرحواطاي)

سے چھیل دے۔''اس پرارشادِ باری (عَرْدَ حَلُ) ہوتا ہے:'' جاہم نے اسے **بخشا۔**'' وہ فور أ جنت میں جاتی ہے اور وہاں سے **ریٹی کیرے** اور آرام تیکیے او ر**پھول** اور خوشبوئیں لے كرتبريس آتى ہادر فرماتى ہے: "مجھے آنے ميں دير ہوئى تُو گھبرايا تونه تھا۔'' پھر پچھونے بچھاتی اور تکیہ لگاتی ہے۔فرشتے بحکم ربُ العلمین واپس حاتے ي - (ملخصاً، تفسير القران العظيم، سورة الملك، تحت السورة، ج٨، ص ١٩٥) خواب میں کسی کو بعد وفات بیمار دیکھنا عسسو ف : حضورا کی شخص نے اپنی لڑ کی کے انتقال کے بعد دیکھا کہ وہ علیل (یعنی بیار)اور برُ ہُنَہ ہے۔ بی**خواب** چند بارد کھ چکاہے۔ ار شاد : کلمه طیبه ستر برار (70,000) مرتبه معددرود شریف بیره کر بخش دیا جائے ان شاء الله يرصف والاورجس كو بخشاب، دونول كے لئے ذريعه مجات موگا اور پڑھنے والے کو دونا تواب ہوگا اورا گر دوکو بخشے گا تو تِکُنا ای طرح کروڑوں بلکہ جمیع مؤمنین ومؤمنات کوا**یصال ثواب** کرسکتا ہے۔ای نسبت سے اس پڑھنے والے کو نواب ہوگا۔ ايصال ثواب كى بَرَكتيں حضرت بینخ ا کبرمحی الدین این عربی رحمة الله تعالی علیه ایک جگه دعوت میں تشریف لے گئے ،آپ نے دیکھا کہ ایک لڑکا کھانا کھار ہاہے ،کھانا کھاتے ہوئے دفعتا (لین اچا کک) رونے لگا۔ وجہ دریافت کرنے پر کہا کہ میری ماں کوجہنم کا حکم ہے اور فرشتے اسے لئے جاتے ہیں (اس شہر میں بیاڑ کا کشف میں مشہور تھا)۔حضرت شیخ اکبر

🛲 🕬 🖒: مجلس المدينة العلمية (ارتباساي)

محی الدین ابنِ عربی رہنۃ اللہ تعالی علیہ کے باس یہی کلممۂ طبیبیہستر ہزار مرتبہ یڑھا ہو محفوظ تھا آپ نے اُس کی ماں کو دل **میں ایصال تُواب** کر دیا۔فوراْ وہ^{اڑ} کا ہنسا،آپ نے سبب بننے کا دریافت فرمایا ہڑ کے نے جواب دیا کہ حضور میں نے ابھی دیکھام پر ک ماں کوفر شتے جنت کی طرف لئے جارہے ہیں۔شخ ارشاد فرماتے ہیں:''اس حدیث کی تصدیق مجھے اس لا کے کے کُشف سے ہوئی اور اس کے کُشف کی تصدیق اس عذاب رُوح پر هوتا هے يا جسم پر؟ عرض : عذاب فقط رُوح ير موتاب ياجم ير بهي ؟ ا**د شاد** : روح دجم **دونول پر، بو**ل ہی **تو اب بھی۔** لنگڑے اور اندھے کی حکایت حدیث میں ہے:ا کیے کنجھا (لینی نکڑا) کسی باغ کے سامنے پڑا تھااور میوے د کپیر با تعا، مگراس تک جانه مکتا تعا۔ الفا قالیک اندھے کا اس طرف گزرہوا کہ باغ 🕏 ميں جاسكتا تھا گرميوےانے نظرندآتے لنجھے نے اندھے ہے کہا:'' تُو جھے باغ میں لے چل، وہاں جا کر ہم اورتم دونوں میوے کھا تھی''۔اندھااس کوایٹی گردن پرسوار کر کے باغ میں لے گیا، تنجھے نے میوے تو ڑے اور دونوں نے کھائے۔اس صورت ميں کون مجرِم ہوگا؟ دونوں ہی مجرِم ہیں۔اندھا'' جِثم'' ہےاور نجھا'' أوح-'' (شرح الصدور، الفائدة العاشرة ،ص٣٢٧ 🚃 📆 مطس المدينة العلمية (٨ ــ ١٩٠١)

عوض : ہرایک کے ساتھ کتی رُومیں ہیں؟ ار شاد: صرف ایک رُوح ہے اگر مسلمان ہے تو عِلّینین (یعنی جنت اعلی) میں اور کا فر ہے تو سِتجین الم میں۔ جو شخص قبر رہ جا تا ہے اس کو بخو بی دیکھتی ہے، اس کی بات سنتی بھت**ی** ہے۔مرنے کے بعدرُ دح کا إ دراک بے شار بڑھ جا تا ہے خواہ مسلمان کی ہویا کا فرکی ۔شاہ عبدالعزیز صاحب فرماتے ہیں : رُوح کوڤر ب وبُغدِ مکانی بکیاں ہے (یعنی روح کے لئے کسی چیز کا دُورونز دیک ہونا برابر ہے)۔ رُو رِح بُھُر (یعنی بینائی کی رُوح) کو دیکھو کنوئیں کے اندر سے ستا روں کو دیکھتی ہے لیعنی نگاہ اٹھتی ہے زمین سے فلکہ توابت تک پہنچی ہے جو یہاں ہے آٹھ ہزار برس کی راہ پر ہے ۔ حدیث میں رُوح زندہ ومردہ کی مثال پرند کی فرمائی کہ جب تک پنجرے میں بندہے اس کے لائق پُر کھول سکتا ہے جب قض (یعنی تید) سے نکال دو پھراس کی **اُڑان** دیکھو۔ (ملحصاً، كشف الخفاء، حرف الدال المهملة، الحديث ٣١٦ قَبْر کھودتے پر مُردے کی ھڈیاںملیں تو وف : قرکھودی وہاں مُر دے کی ہڑیاں تکلیں تو کیا کیا جائے؟ اد : اگرادر جگدل سكتى بوتو برگزاس مين وفن نه كرين ادراس قبركوبدستو ؤرست کردیں ورنداُن ہڈیوں کوائیک طرف ر کھ کر حائل کافضل دے کر (یعنی در میان مِں کوئی چزر کھ کر) اُس کو **ڈن** کریں ،اوراگر بیمعلوم ہو کہ پہلے یہاں قبرتھی اگر چہاب یهان نشان باتی نه ر ماتو اس صورت میں و ہاں قبر کھود نا چا تزنبیں ، ہاں اگر کوئی اور جگ ننل سکے اور بیقبر پرانی ہو چکی تو مجبور آجار بڑنے۔ لفوظات اعلى حفزت (حصداؤل)

داڑھی منڈانا اور کَتَرُوَانا گناہِ صغیرہ ھے یا کبیرہ؟

عوف : وارهى منذ انااوركتر وانا كناوصغيره بيا كبيره؟

ار شاد: کتر وانایامنڈ وانا ایک دفعہ کاصغیرہ گناہ ہا ورعادت سے بمیرہ جس سے فاسق معنین (مین علانہ بریمرہ کناہ کرنے والا) ہوجائے گا،اس کے پیچینہ نماز مکر و آخر کی (مین قریب برام) کہ پڑھنی گناہ اور پھیرنی واچیب، آئر إعادہ نہ کیا گیا (مین دوبارونہ برجی تر) گناہ گار ہوگا۔

فتوای نویس کیسے سیکھیں؟

ایک روز حفرت مولانا شاہ مید اجمد اُشرف صاحب پکھوچھوی (طیرات اند انتوی تخریف لاے ہوئے تھے۔ رخصت کے وقت اُنہوں نے عرض کیا کہ مولوک سید محمد صاحب اشر فی اپنے بھا نج کو، میں چاہتا ہوں کر حَشُور کی خدمت میں حاضر کردوں، حضور جو مناسب خیال فرما کیں اُن سے کام لیں ۔ ارشاد ہوا: ''ضرور تشریف لا کمیں یہال فو سے کھیں اور مدرے میں ورس دیں۔'' روّ وہائیہ' اور'' اِفّتا'' یدونوں ایسے فن ہیں کہ طب کی طرح یہ بھی صرف پڑھنے نہیں آتے ان میں بھی طبیب حاذِق (ایمن ماہر طبیب) کے مطب میں ہمینے کی ضرورت ہے۔ میں بھی ایک طبیب حاذِق کے مطب میں سامت برس ہمینیا، بھے وہ وقت، وہ دن، وہ جگہ، وہ مسائل اور جہاں سے وہ آئے تھے انچی طرح یاد ہیں۔ میں نے ایک بارایک نہایت و تیجیدہ اور جہاں سے وہ آئے تھے انچی طرح یاد ہیں۔ میں نے ایک بارایک نہایت و تیجیدہ ایک بارایک نہایت و تیجیدہ (لینی زائد کام ان کا کی ا کیدا تھے اندر میں جمع کیں گر جب حضرت والد ماجد فائنر ہوا۔'

کے حضور میں پیش کیا تو انہوں نے ایک جملہ ایسا فر مایا کہ اس سے بیرسب ورق رّ وّ ہوگئے ۔وہی جملے اب تک دل میں پڑے ہوئے ہیں اور قلب میں اب تک اُن کا اثر باتی ہے۔خود ستائی(یعنی اپنی تعریف) جائز نہیں مگر وقتِ حاجت، اظہارِ حقیقت تحدیث نعمت ہے(یعنی ضرورت کے دقت حقیقت کے اظہار کے لئے اپنی تعریف خود کرنے کی اجازت پڑمل ہے)۔ سيّدُ نا يوسف عليه السلاة والسلام في با وشا ومصر عص فرمايا: اِجْعَلْنِيُ عَلَى خَزَ آئِنِ الْآرُض زمین کے خزانے میرے ہاتھ میں دے إِنِّي حَفِيُظٌ عَلِيُهٌ 0 وے بے شک میں حفظ والا ہوں اور علم والاہوں ـ بغضل ورحمتِ النبي (عَــزَوْ حَـدَّ) پھر بعون وعنايتِ رسالت پناہي صلى الله تعالى عليه وسلم (يعني **السَّلْمَ ئ**ےرسول علیہ اصلاۃ والتسلیم کی مددوعنایت ہے)اِ ف**ن**ا اورردِّ و ہاہیہ کے دونوں کا مل فن دونوں نہایت عالی فن أنہیں یہاں سے اچھاإن شآء اللّٰه تعالیٰ ہندوستان میں کہیں نہ یائے گا، غیرممالک کی بابت (یعنی بارے میں)نہیں کہتا۔ میں تو ہر شخص کو بطریب خاطر (یعنی بخوش) سکھانے کو تیار ہوں۔سیدمحمد اشر فی صاحب تو میرے شاہزادے ہیں ، میرے پاس جو پچھ ہے وہ انہیں کے جدّ امجد بعنی حضور سیّدُ ناغو نیے اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کا **صدقہ وعطیہ** ہے۔آپ کے یہال موجودِین میں تُفَقِّہ جس کا نام ہےوہ مولوی ا مجرعلی صاحب (علیدرمة الله الوهاب) میں زیادہ یا یے گا۔اس کی وجد یہی ہے کہ وہ اِسْتِفُتا (یعن سوالات) سنایا کرتے ہیں اور جو میں جواب دیتا ہوں لکھتے ہیں ،طبیعت اَفّاذ (یعنی ﴿ جلدی سجھے دالی) ہے، طرز سے واقفیت ہو چلی ہے۔ ای طرح ع**لم توقیت** بھی ایک ایسا

ملفوظات اعلیٰ حضرت (حصہ اوّل) ا فن ہے کہاس کے جاننے والے بھی معدوم (بعنی نایاب) ہیں ۔ حالانکہ ائمہُ دین نے ا فرض كفاي بتايا ب - (تفسير روح المعاني، سورة الانعام نحت الابة ٩٧، ج٧، ص ٢٠٦) علائے موجودین میں تو کوئی اتنامجھی نہیں جانتا کہ فلاں دن آفیاب کب طلوع ہوگا اور ئے غروب۔ بہت ی عمر گزرگئی تھوڑی ہَا تی ہے، جن صاحب کو جو پچھے لینا ہووہ حاصل مجھے کم کرنے سے پہلے بعنی میری موت سے پہلے مجھ سَلُونِي قَبُلَ أَنْ تَفْقِدُونِيُ ے پوچھلو۔ت حصرت مولی علی کهٔ می اللهٔ مُعاتبی وَ خَهَهُ الْکَرِیمِ کا ارشاو ہے۔ دال ، التفسير ، باب تفسير اية الغ ، الخديث ٢٢٩٤ - ٣٠ ص ٩٥) اورشنخ سعدى عليالرحمة كاقول بالكل صحيح ب "قدر نعمت پس از زوال بود" (نعت کی قدراس کے زائل ہونے کے بعد معلوم ہوتی ہے۔ت) خالى يياله اگر چه کمالات ہے بھراہوا ہو ، اینے تمام **کمالات ک**و درواز ہ ہی پرچھوڑ دے اور میہ جانے کہ میں بچھ جانتا ہی نہیں ۔ " خالی موکر آئے گا تو پچھ یائے گا' اور جوابے آپ کو بحرا سمجھے گا تو ج "انائے که پر شدد گر چو ن پرد["] '' بھرے برتن میں اور کوئی چیز نہیں ڈالی جا سکتی۔''

خدمت علم سے محروم ھو گئے اورآ جکل تو حاصل کرنے والے ایسے ہیں کہ جب میں حسن میاں مرحوم کے مکان میں رہتا تھا۔اس میں ایک زینہ (یعنی سیرهی) ہے جو باہر سے جیت برگیا ہے اس زمانے میں ایک مُدرِّس (یعنی استاذ) صاحب کے ہدایہ اخرٌ بن سپر و ہوا یہ کوئی ا آ سان کتاب نہیں، جب انہوں نے کام چلتا نہ دیکھا تو مجھے **پڑھنا چ**اہا مگر **شرط** ہیگ کداس باہر کے زینے سے حجست پر مجھے بلالیا سیجئے اور وہاں ت**نہائی می**ں پڑھادیا سیجئے (تاكه)كى كومعلوم نه ہو۔ ميں نے كہا:''مولانا!هدايه اخَرَين كاسبق كوئى مرقہ (يعنى چوری انہیں جولوگوں سے پھی کر ہو، مجھ سے بینہ ہوگا۔''ایک صاحب یہیں کے فتو کی نولی کرتے تھے، وہ اس طرح لکھتے تھے کہ باہرے جواب لکھ کر بھیج دیا، میں نے إصلاح دے كر بھيج ديا۔ ايك روز أن سے كہا گيا: "مولانا يُوں جواب تو تھيك ہوجائے گا مگر آپ کو بیه نه معلوم ہوگا کہ آپ کی کھی ہوئی عبارت کیوں کاٹی گئی اور دوسری عمارتیں کس مصلحت سے بڑھائی گئیں ،مناسب بیہے کہ آپ بعد نماز عصراپے لکھے موئ فتووں بر إصلاح لياكريں-"انبوں نے كہاكة" اس وقت آب كے ياس بہت سےلوگ جمع ہوتے ہیں اس مجمع میں آپ فرما کیں گے کہتم نے پیغُلُط لکھاوہ غلط لکھااور مجھے اِس میں ندامت ہوگی۔''اس بندہُ خداکے نام افریقہ اور امریکہ تک ۔ استفتا آتے (بعن نتوب پوچھے جاتے) تھے۔اس کی دجہ رہے کہ یہاں ہے اُن کے نام ہے جواب جاتا تولوگ انہیں کے نام اِستفتا بھیجتے۔اُس زمانے میں مکہ معظمہ کے ایک عالم جليل حضرت مولا ناسيد المعيل حافظ كتب حرم رحمة الله تعالى علي فقيرك يهال تشريف

جُثُ ثُن: مطس المدينة العلر

لمفوطات اعلى حضرت (حصاؤل) لائے ہوئے تھے۔ مکہ معظمہ سے صرف ملاقات فقیر کے لئے کرم فرمایا تھا ، اُن کے سامنے إسكا تذكرہ ہوافر مايا:''ايما فخص بركت علم سے محروم ربتا ہے۔'' ببي ہوا كہوہ صاحب چھوڑ کر بیٹھر ہے۔اب لی۔اے(B.A) یاس کرنے کی فکر میں ہیں۔ شاگرد کی عَاجزی حضرت عبدالله ابن عباس رضي الله تعالى عنها فرمات بين جب مين بغرض تص**ل علم** (یعنی علم دین <u>ع</u>یضے کے لئے) حصرت زید بن ثابت رہنی اندتعالی عنے وروولت یر جا تااورده با هرتشریف نه رکھتے ہوتے تو براہ ادب ان کو**آ واز** نه دیتا ،ان کی جوکھٹ يرم ر كه كرليث ربتا ـ بَوَا خاك اورريتا أزْ اكر مجھ يرِدْ التي ، كِير جب حفزت زيد (مِن ﴾ الله تعالى عنه) كا شانعُهُ القدس سے تشریف لاتے فرماتے:'' ابن عم رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم (لعنی اے رسول اللہ معلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم کے چیا کے بیٹے) آپ نے مجھے **اطلاع** كيول نه كرادى؟ "ميس عرض كرتا مجھے لائق نه قعا كه ميس آپ كواطلاع كراتا۔ " (ملخصاً، الإصابة في تميز الصحابة، حرف العين المهملة، ج٤، ص١٢٥) مدوه ادب ہے جس کی تعلیم قرآن عظیم نے فرمائی: انَّ الَّـٰذِيۡنَ يُنَسادُوُ نَكَ مِنْ وَرَآء وهِ جوجِروں كے باہر ہے تهميں آواز دیتے میں ،ان میں بہت کوعقل نہیں اور اگر وہ صبر الُحُجُرِبِ أَكْثَرُهُمُ لَا يَعْقِلُونَ ٥ وَلَوْالَيْهُ مُ صَبْهُ وَاحْتُهِى تَخْهُرُ جَ ﴿ كُرِيِّ يَهِالِ تَكَ كُرُمٌ بِابْرَتْشُرِيفِ لَاوُتُو ان کے لئے بہتر تھااور اللّٰہ (غـرُوخلُ) إِلَيْهِهُ لِكَانَ خَيْرًا لَّهُمُ طُوَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٥(ب٢٦٠ المعرات:٥٠٤) بخشے والامبر بان ہے۔ mmmmmm چُرائل مطس المدينة العلمية (الاجامال) 🌣

نے وہ آئی صلقہ جو محور سے کی زین میں دونو س طرف لٹکتار ہتا ہے اور سواراس پر پا وَس رکھ تر محور سے پر چن هتا ہے۔ -

عِلْم کی عزَّت

ایک مرتبه بارون رشید نے ابومعاویہ عزیز کی دعوت کی وہ آٹکھوں ت **معذور ت**ھے۔ جب آفیائہ (یعنی ڈھکنے داردستہ لگا ہوالوٹا) اور <u>جسلہ مُہ</u>ے (^{لیع}نی ہاتھ منہ

رھونے کا برتن) ہاتھ دھونے کے لئے لا کی گئی تو چکھی خدمت گارکو دی اور آفما یہ خود لے

کران کے ہاتھ و دُھلائے اور کہا:'' آپ نے جانا کون آپ کے ہاتھوں پریانی وُال

ہاہے؟'' كہا:''نہيں۔'' كہا: ہارون۔(انہوںنے)كہاجيسى آپ نے علم كى عزت كى الی الله (غداز خل) آپ کی عزت کرے۔ ہارون رشیدنے کہا ای وُعا کے حاصل

کے لئے رکیا تھا۔ (تاریخ بغداد، ذکر من اسعه هارون ، ج؟ ١٠ ص٩)

عُلَمَانے کرام کا اِحْتِرام

مارون رشید کے دربار میں جب کوئی عالمم تشریف لاتے ، بادشاہ اُن کی

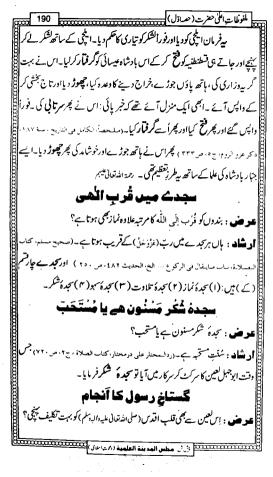
تعظیم کے لئے سروقد (لینی نرو کے درخت کی طرح بالک سیدھا) کھڑا ہوتا۔ ایک بار

درباریوں نے عرض کیا ''یا امیر المومنین رعب سلطنت جاتا ہے۔'' جواب دیا:

''اگر علائے دین کی تعظیم ہے رُعب سلطنت جاتا ہے تو جانے ہی کے قابل ہے۔' یمی وجی تھی کہ اُن کا رعب روئے زمین کے بادشاہوں پر بدرجہ اتم (لیمی بہت زیادہ)

تھا۔سلاطین نصاریٰ (بعنی میسائی ہوشاہ)ان کا نام کیتے تھر اتے تھے۔

عیسائیہ کا بیٹا تخنت ِ قتطنطنیه پرایک عیسائیه عورت حکمران تھی اور وہ ہرسال خراج ^{لے}ادا کرتی۔ جب وہ مرگئی تو اس کا بیٹا تخت پر بیٹھا اور خراج نہ حاضر کیا۔ اِدھرے خراج کا مطالبہ ہوا تو اُس نے حضرت ہارون رشید کی خدمت میں ایک ایکی (یعنی قاصد) کے باتھاں مضمون کی تحر مربھیجی کہ: '' ده مرگئ جوخود پیا دَه^{تا} بن هی اورآپ کورُخ ^{تا} بنایا تھا'' (یعنی میری ہاں جر نے آپ کی بالادی قبول کی تھی وہ مرچکی ہے،اب میرے ساتھ آپ کا کوئی معاملے نہیں ہے) میتحریر لے کرا پلحی جب حاضر در بارہوا، وزیر کو حکم ہوا سناؤ! وزیر نے اُسے دیکھ کرعرض کی ''حضور مجھ می**ں تا ب**نہیں جواسے سناسکوں ۔'' فرمایا '' لا مجھے دے <u>'</u> اورا*س تح ریکویژ ها*۔ باد شاہ کودیکھتے ہی ایسا **جلال آ**یا جھے دیکھ کرتمام دربار بھاگ گیا۔ رف وزیراوروہ ایکی رہ گئے ۔ وزیر کو حکم ہوا کہ جواب لکھ! اُس نے اِرادہ لکھنے کا کیا مگر رُعب شاہی اِس قدر غالب تھا کہ ہاتھ تھر تھرانے لگا اور قلم نہ چلا۔ پھر فر مایا "لا مجھ دے۔"اور يول لكھا: '' بیخط ہے خداکے بندے امیر المؤمنین ہارون رشید کی طرف ہے روم کے کتے فلاں کو کہ او کا فرہ کے بنے ! جواب وہ نہیں جو تُو سنے جواب وہ ہے جو تو دیکھیے گا۔'' ا: خراج دوسم پر ہے(۱) خراج مقاممہ کہ پیداوار کا کوئی حصہ آ دھایا تہائی یا چوتھائی دغیر ہامقرر ہو جیے ورِاقدس ﷺ نے بہو دِخیر پرمقرر فرمایا تھا اور (۲) خراج مؤظف کدایک مقدار معیّن لازم کردی جائے خواہ روپے سالا ندورو پیر بیر بیا گھے۔ یا مجھاور جیسے فاروقِ اعظم رض الله تعالی منے مقرر فر مایا تھا۔(بہارٹریعت،حصد۵،ص ۲۹)..عِلْمِیه ع شطرنج کاایک مبره۔...عِلْمِیه س بیمی شطرنج کے



ا**ر شاد** : بیان بارہ لعینوں سے تھا جوسب کے سب نت**باہ و ہر با** وہو گئے ۔ کس کے بجل گری، کمی پر پھر برہے فرض طرح طرح کے عذابِ الٰہی (عَـزُوءَـدُ) ان خبرا ء (یعنی خبیۋں) پر نازل ہوئے ۔ایک مرتبہ عاص سفر کو گیا۔ تکان (یعن ٹھکن) کے باعث ایکہ درخت سے تکیدلگا کر بیٹے گیا۔ جبریل امین (علیه اللام) محکم رب العالمین (عَسروَ خِن تشریف لائے اوراس کا سر پکڑ کر درخت سے **نکرانا** شروع کیا۔وہ چلاتا تھا کہ''ارے کون میرے سرکودرخت ہے نگرار ہاہے؟'' اُس کے ساتھی کہتے تھے کہ'' ہمیں کو ئی نظر نہیں آتا۔''یہاں تک کہ جہنم واصل ہوا (یعنی مرکر جہنم پہنچا)۔ قیامت کے دن اِس جہنمی کی سب سے جدا حالت ہوگی: یہ اینے آپ کو مَـعَادَ اللَّه عزيز وكريم كها كرتا يعنى عزت والا وكرم والا _ داروغهُ دوزخ (يعني دوزخ ك گران فرشنے) کو تھم ہوگا کہ اس کے سر بر**گر ز^لم**اروجس کے لگتے ہی ایک بڑا خلاسر میر ہوجائے گااور جس کی وُسعت اتنی نہ ہوگی جتنی تم خیال کرتے ہو بلکہ جس کی ایک **داڑ ھ**کو **واُ** فد (بینی اُغد پہاڑ) کے برابر ہوگی اس کےسر <u>بھٹنے</u> ہے جوخلا ہوگا وہ کس قدر وسیع ہوگا! غرض اس خلامیں جہنم کا کھولتا ہوا یانی بھراجائے گا اور اس ہے کہا جائے گا ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ عِلَمَ وَتَوْعِزت وكرم واللهـ (ب٥٦، الدغان: ٩٤) ادر کا فرکو یمی یانی پلایا جائے گا کہ جب منہ کے قریب آئے گامنہ اس میں گل کر گر یڑے گا در جب پیٹ میں اُترے گا، آنتوں کے **کمڑے** کردے گا،ادراس یانی کواپیا الك بتهارجواور عول موناور نيے سے بالا ہوتا ہے۔.. علميه

ملفوظات اعلى حضرت (حصداؤل) پئیں گے جلسے تُونس (یعنی نہ بچھے والی بہاس) کے مارے اُونٹ ۔ بھوک ہے بیتا ب ہوا گے تو خار دارتھو ہالے کھولتا ہوا، جرخ دئے (یعنی کھلے) ہوئے تا نے کی طرح اُبلتا ہوا کھلائیں گے جو پیپ میں جا کر کھو لتے ہوئے پانی کی طرح جوش مارے گا اور بھوک کو کچھ فاکدہ نہ دے گا ۔انواع انواع (یعنی طرح طرح) کے عذاب ہوں گے ۔ ہرطرف ہے موت آئے گی اور مر مل گئے بھی نہیں ، نہ بھی ان کے عذاب میں تخفیف (یعن کی) ہوگی _ یہی حال تمام رافضیو ں، وہابیوں اور قادیانیوں ،نیچیر یوں تمام مرتدین کا ہے۔ جس نے کسی دوسر ہے کے برکانے ہے کفر کہاہوگاوہ ہارگاہ رٹ العزت (غزُو خلُ) میں عرض كرے گا: ''اس نے مجھے بهكایا،اس بردُوناعذاب كر۔''ربُّ العزت(غـــزُوخــلُ) فرہائے گا: سب مردونا ہے مگرتم جانبے نہیں اور ناریوں (یعنی دوز خیوں) کے جسم ایسے ا پے بوے بوے ہوں گے جنگی ایک ایک داڑ ھاٹس کو ہا اُفد کے۔ مَسُجِد مِیں کیڑے سینا کیسا؟ عوف : محدمیں کیڑاسینا جائز ہے پانہیں؟ ار شاد: اگر اُجرت برسیتا ہے قوٹا جا مزور نہ کوئی حرج نہیں۔ (الفتاوي الهندية، الفصل الثاني فيما يكره للصلاة و ما لا يكره، سنّت کے مطابق کھانا کھانے کا طریقہ ع ف : كهانا كهان كامسنون طريقه كياب؟ اد شاد : داہنایاؤں کھر اجواور بایاں بھااورروٹی بائیں ہاتھ میں لے کرواہے سے اے: ایک فاردارز ہریلا بوداجس کے بیتے سبزاور پھول رنگ برینگے ہوتے ہیں۔...

لمنوطات اعلى معزت (حداذل)

میاس لئے ارشاد ہوا کہ پہلی تمن آیتوں میں "مبلک یوم الدین" تک مولی عزر علی کی خالص جمد و تنا ہے اور تجیلی میں" افعد دنا" ہے آخر مورد تک اپ لئے وعا ہے اور جن کی آیت میں ذکر عبادت واستعانت (مین جو سیار میں افغانی

ہے۔ عبادت مولی تعالیٰ کے لئے ہے اوراستعانت (بین یہ طب کن) بندے کا نئی۔ وہا ہے کی بیعقلی کو کیا گئے کہ الیہ متبرک مورہ کے بیز ھنے ہے نئے کرتے ہیں۔

قر آن پاك كو 30 پاروں ميں كس نے تقسيم كيا؟

عرض : حضورز مان صحاب (میم اینون) میں مجمی قرآن عظیم کے پارے ہوگئے تھے؟ اور شاد : امام جلال الدین سیوطی نے کتاب" اُلا نے ان سیس جس لدرا حادیث

ورِدایات وا قوال قر آنِ عظیم کے ایسے اُمور کے متعلق میں جن فرماد کے میں - اس

ا بان رُكوع جارى ہوئ آئد مورس ہوئ مشائخ كرام نے السخمد شريف كے ابان رُكوع جارى ہوئ السخمد شريف كے ابتديا في سو

استايئىوىي شب ميں كەشپ قدر بے ختم ہو۔

<u>اَحزاب و اَعشار کا آغاز کب هوا؟</u>

عوض: بيافزاب وغيره كيے شروع بوت؟

ار شاد : احزاب واعشارز مانیرمبارک ہے ہیں۔**اعشا**ر دس آیتوں کے مجموعہ میں دور میں میں اور اس میں اور اس میں میں است

کانام تھا یعنی صحابۂ کرام (مبیم اینیون) ایک عشر حضور اقدش سلی اند تعالی ہے ہیم ہے مزیحتے اور اس کے متعلق مُگوم ومعارف جوان کے لاکتی ہوتے ان سب کو حاصل

تستنستنستن في الله منه العلمية (الرجاس) المستنستنستنستنستنستن

لمفوظات اعلیٰ حضرت (حصراوّل)

196

ظرف اشارہ کرکے فرماتے ہیں۔

" این بد بختان وقتِ مارا پریشان کرده اند "

(لینی ان بدبخوں نے میرے اوقات پریشان کررکھے ہیں۔ت)

وه واپس آئے اور قبل اس کے کہ عرض کریں، فرمایا: " آپ نے دیکھا۔"

کاکی کے معنٰی

عوف : حضور کا کی کیامعنی میں اور اس کی وجہ تسمید (یعنی اس نام کی وجہ کیا ہے؟

ار شساد : حضرت خواجه قطب الدين بختيار كاكر حمة الله تعالى عليه كا خدمت ميس چند

مسافرحاضر ہوئے ،حضور کے یہاں اس وقت بچھے سامانِ خورد ونوش (یعنی کھانے پینے کا سامان) موجود ندتھاغیب سے **کا ک** (روٹیاں) آئیں جوسکو کافی ووانی ہوگئیں جب

عان کو بورور ملاکا یہ ہے اور دویاں ہیں بو ب رون رون اور یں ب ہےآ کا کی مشہور ہوگئے۔

جلی هونی روثی اور کیڑے والا چھوھارا

(ای تذکرے میں فرمایا) کہ ایک مرتبہ مولا نافضل رسول صاحب جومیرے

ییر و مُورْشِد (بعنی شاہ آل رسول احمدی مار ہروی) مِنی الله تعالیٰ عنہ کے ساتھ حصرت مولا نا لُور

صاحب رو الله تنالى علي سے (جومولانا ، كرانطوم ملك الككمانا مك شاكرد منے) بر هن منے سے -والى ميں سنے ، جلس و ماہد ير ميں تشريف لے كے دوباں حاضرين بر كاك اور

چھوہارے برساکرتے تھے۔ چنانچ جب دستورآپ کے سامنے بھی بُوچھاڑ ہوئیا سریر سے مصرف سے کہا ہے۔

ایک کاک اورایک چھو ہارا آپ کوبھی ملا۔ آپ نے چھو ہارا تو ڑا تو اُس میں سے کیٹرا

مراس مجلس المدينة العلمية (ارعراس)

لمفوطات اعلى مغرت (حسراذل) نکلا اور **کاک** کا کنارا خلا ہوا۔ بید کھے کرتیسم کیا اور **باوا نے بلند** کہا:''صاحبوآج تک تو ہنا کرتے تھے کہ فرشتے بھولتے نہیں یہ کیسا بھول گئے کہ روٹی بھی جلادی اور سنتے تھے کہ جنت کا میوہ **سڑتا گاتا** نہیں ،تعجب ہے کہ چھو ہاروں میں کیڑے پڑ گئے ۔''اس پر بہت شوروغل ہوا۔ آپ کوغصہ آیا، پر دہ کو ہٹادیا جس کے پیچھے سے بیہ بارش ہور ہی تھی ديكھا تو اساعيل دہلوي كا ايك غلام جس كا نام عبداللطيف تھا ايك جھو لي ميں كاك اور ایک میں چھوہارے لئے بیٹھاہے۔ پردہ بٹتے ہی پردہ فاش ہوگیا۔ **اِس** کے بعد حضرت مولا نافضل رسول صاحب دہلی سے *لکھنو حضر*ت مولا نانور رمیہ السالی خدمت میں حاضر ہوئے۔ اندر سے خبر آئی کہ آنے کی ممانعت ہے۔آپ چوکھٹ پر بیٹھ گئے اور رونے لگے اور عرض کی کہ''میری کیا خطاہے معلوم ہو کہ وہ **قابلِ معافی** بھی ہے یانہیں؟''جب بہت دیرگز رگئی تو مولا نانور صاحب رحی الله تعالى عليه باہر تشریف لائے اور فر مایا: ' دختہمیں میں نے اس لئے پڑھایا تھا کہ وہا بیول كے جلسوں ميں جاؤ'' آپ نے عرض كى كدا تنا تو معلوم ہو گيا كه'' ميرى خطا قابلِ معانی ہے۔' اور پھرآپ نے ساراوا قعہ اساعیل دہلوی کے مکر دفریب کاعرض کیااور کہا میں اس کا صرف بردہ فاش کرنے کو گیا تھا کہ نہ معلوم کتنے بندگان خدا (عَزْدَ حَلَّ) اس کی اس عماری سے مراہ ہورے تھے۔آپ س کرخوش ہوئے اور راضی ہوگئے۔ خوفزده بلدشاه **یمی** مولا نا نور صاحب رحمة الله تعالی علیه ایک روز رائے میں تشریف لئے جارہے تھے، سامنے سے علی بخش وزیر بادشاہ اورھ، جو اُس کی ناک کا بال ہور ہاتھا، ہاتھی پر چلا آ رہاتھا۔اُس نے حضرت کود کیھیر اِ تنااد ب کیا کہ ہاتھی کو بٹھا دیا اوراُ تر ک

فریب حاضر ہوا اور **سلام عرض کیا۔ آپ نے اُس کی طرف سے منہ پھیر لی**ا اور س یا که وه رانضی تھا اور داڑھی مُنڈھی ہوئی تھی ۔ مجھا کہ شاید مجھے دیکھانہیں ۔ دوسر ک طرف جا کرسلام عرض کیا۔ آپ نے اُدھرہے منہ پھیرلیااورسلام قبول نیفر مایا۔ تیسر ک دفعہ پھرسلام کیا،آپ نے **جواب** نہ دیا۔اُس خبیث کوغصہ آیا اور ہاتھی یر چڑھ کر پہکہتا ہوا چلا گیا کہ فرنگی محل کے مردوں کی داڑھی اورعورتوں کا سر نہ منڈ وایا تو علی بخش نام نہیں _آپ جب مکان می*ں تشریف لئے گئے ت*و ایک طالب علم نے علی بخش کا و وفقرہ عرض کیا۔ آپ فوراْ ہاہرتشریف لائے آستانے پراس وقت میرے ہیرومرشد رحمۃ اللہ تعاني عليه اورمولا نافضل رسول صاحب رحمة الله تعالى عليه حاضر تتھے ۔عرض كيا: حضور كہاں كا قصد (بین اراده) فرماتے ہیں؟ فرمایا:'' بچونورا کی حماقعے تو ہے (آپ کی زبان پور لیکمی) رافضی آیا تھا، ملام کیا تھا، جواب دے دیا ہوتا ۔اب کسی کی داڑھی مونزے (ینی مونڑھے) ہے کسی کامونزمونڑے ہے۔نورا کی حماقتے تو ہے۔''اورآ پسیدھے بادشاہ کے کل کوتشریف لے چلے کہ اس سے پیشتر (لینی پہلے) بھی نہ گئے تھے، پیھیے بیھیے ہ دونوں حضرات بھی ہو لئے ۔اُس دن ٹو روز^ل کا دن تھا۔اُس کے محل میں چ<mark>شن</mark> ہور تھا۔شراب و کہاب اور گانے بجانے کے سامان موجود تھے۔ جب دربان نے پ کوتشریف لاتے دیکھا،گھبرا کر دوڑتا ہوا گیا ،اور باوشاہ کوخبردی۔ باوشاہ س کم لمهبرا گيااورتكم ديا كەنورا تمامئنېيات شرع (ليمنى شرعاً منوع چيزي مثلاً سازوآلات ادر شراب دفیرہ) اُٹھا دیجے جا کیں اورخود دروازے تک **اِمتقبال** کر کے حصرت کو اندر

لے گیا اور باعز از تمام بٹھایا علی بخش کھڑا ہوا ہد داقعہ دیکھ رہا ہے،'' کاٹو تو بدن میں خون نہیں۔ "سمجھرہا ہے کہ اب بیش کا بیت فرما کیں گے اور خدا جانے بادشاہ کیا کچھ کرے گا ، گریہ' وسیع ظرف' اِس'' ملکے قیاس' سے وَرا ہیں ۔ پیشکایت فرمانے تشریف نہ لے گئے بلکہاُ سے ایم عظ**مت** دکھانے کو کہ دہ ایذ ارسانی کے خیال سے باز ۔ ہے۔ بادشاہ نے عرض کی :''حضرت نے کیسی تکلیف فر مائی۔'' اِرشاد فر مایا:'' تیری ز مین میں رہت (یعن ہے) ہیں ہم نے کہا ہوآ کیں۔'' بادشاہ نے وہ شیرینی جوئو روز کے لئے آ کی تھی پیش کی ۔ فرمایا '' ہمارے دو بچے بھی باہر ہیں ۔'' چنانچے ان حضرات کو بھی بلالیا گیا۔تھوڑی دیرتشریف رکھ کرواپس **تشریف** لائے۔ مددونول حكايتيل مجهر سيحضرت مولا ناعبدالقادرصاحب رحمة الله تعالى علياني تھنؤ میں بیان فرما ئیں جب میں اوروہ <u>و سا</u>ھ میں کچھ کتا ہیں دیکھنے کھنو گئے تھے علم جَفَر **ؤلف:** ایک دوزنواب وزیراحمد خال صاحب ایک کتاب جس میں انہوں نے تعریفات اشیاء' ککھی تھیں۔اعلیٰ حضرت مظائو بغرضِ اصلاح بعدِ ظہر سنارہے تھے۔علم جَفَر لِ کی تعریف ساتے وقت حضور نے ارشادفر مایا: آپ نے علمِ زارجہ کی ل :اعلیٰ حضرت ملیدهمهٔ رب العزت لکھتے ہیں : جغر میشک نبایت نفیس جا نزفن ہے حضرات اہلبیت کرام رضوا امند تعالى عيم كاعلم ہے امير المؤمنين مو لی علی کرم املہ وجہ انکریم نے اپنے خواص پر اس کا اظہار فر مايا اور سيد نا اما بعفرصادق مِن اللهِ تعاني مندا ہے معرض كتابت ميں لائے ستطاب جغر جامع تصنيف فرما كي۔علامہ سي رریہ اندندان ایشرح مواقف میں فرماتے ہیں امام جعفرصادت نے جامع میں مکیا تک ن وُ کما یکگؤن مِفِر ماديا_(نآدى رضويه ج ٢٦، ص ١٩٤)... عِلْمِيه مركن مطس المدينة العلمية (راحاسال)

ر بنیب نہ میں۔ بیلم جفر ہی کا ایک شعبہ ہے ،اس میں جواب منظوم عر کی زبان ' طویل' کاور حرف ل کی روی ہے آتا ہے اور جب تک جواب بورانہیں ہوتا مقطع تا نہیں آتا جس کوصاحب علم کی اجازت نہیں ہوتی نہیں آتا ، میں نے اجازت حاصل کرنا جا ہی۔اس میں کچھ میڑ ھاجا تا ہے جس میں حضور الڈس ملی ہند تعالیٰ علیہ ہم خواب میں تشریف لاتے ہیں۔اگراجازت عطاہوئی تھمل گیا ورنشیس۔ میں نے تمین روز مزها، تیسرے روزخواب میں دیکھا کہ ایک وسیع میدان ہے اوراس میں ایک بڑا پختہ کنواں ہے ح**صورا قدس** ملی اللہ تعالی علیہ دیم تشریف فر ماہیں اور چند **صحابہ کرام** (مِنی الله تعالی منبم) بھی حاضر ہیں جن میں سے میں نے حضر ت ابو ہرمیرہ رہنی اللہ تعالی مذکو پیجانا۔ اس کنوکیں میں سے خود حضور اقدس ملی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم اور صحابۂ کرام (ملیم ار ضوان) یانی مجررہے ہیں۔اس میں ہے ایک برد اتنحة نکا که عرض (یعن چوڑ الی) میں ڈیڑھ گڑ اورطول (بینی لمبائی) میں دوگڑ ہوگا اور اس پر سبز کپڑ ایڑ ھا ہوا تھا جس کے وسط میں مفیدروش بہت جلی قلم ہے ا مد و ایشکل میں کھے ہوئے تھے جس سے میں نے پید مطلب نکالا کہ اس کا حاصل کرنا'' فریان'' فریایاجا تا ہے۔اس سے بقاعدہ جغ اذ ن نکل سکیا تھا۔ و کوبطور مدرمؤخر آخر ہیں رکھا۔ اس کے عددیانج ہیں اب وہ ایک پہلی جکہ ہے تر تن کر کے دوسرے مرتبہ میں آگئی اور پانچ کا دوسر امرتبہ پانچ دہائی ہے یعنی پیاس جس کا حرف نون ہے یوں اِذن سمجما تا مگر میں نے اس طرف اِلنّفات: لے : شعرکوں لئے کے لئے ہو پیانے مقرد کئے گئے ہیں انہیں بڑکہاجا تا ہے خیل بن احر نے شعر کے لے 15 وزن قرارد یے اور بروزن کا نام برر کھا،ان میں سے برطو لی بھی ایک وزن ہے جوالک مع يس دومرت فعولن مفاعيلن كوزن يرآن عيد (نن ثامرى درحمان البنديس ١٨/٩١). عِلْمِيه فرن اِتعبدے كا آخرى شعر جس مِن شاعر كاتھى آتا ہے۔... علم

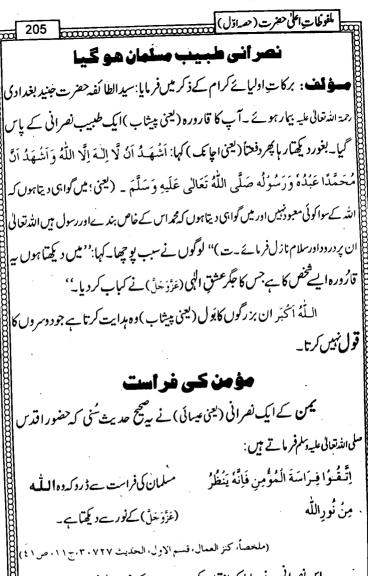
Marfat.com

ا : مزارات پرغورتول كى حاضرى كى نفيس تفصيل اعلى حضرت عليدرمة رب المزت كرساله مباركه "مُحمَّلُ النُّورِ فِي نَهِي البَّسَآءِ عَنْ زِيَارَةِ الْقُنُورِ" مِن بـــ... عِلْمِيه

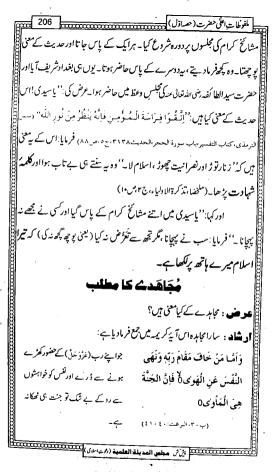
ملفوطات اعلیٰ حضرت (حصاوّل) اس میں رکھ دیا جور کھناتھا ، دوسرا اُٹھا تا تو اسے بھی مجرد ہے ۔' دُعا كِي قَبُولِيت عرض : دعا مروتت مقبول موتى بي؟ ارشاد : حديث شريف مين ب: "الله تعالى حيادالا، كرم والا باس عشر فر ما تا ہے کہ اس کا بندہ اس کی طرف باتھ اٹھائے اور انہیں خالی پھیردے۔'' اور فرمایا'' جودعانه مانگے الله تعالیٰ اس بِغَضَب فرما تا ہے۔'' صف اوّل میں نماز پڑھنے کا ثواب عوض : كياصف اول يس نمازير صنى كاثواب زياده ع؟ اد شاد: حدیث میں فرمایا اگر لوگوں کومعلوم ہوتا کہ صفّ اول میں نمازیر سے کا اس قدراتواب بي ضروراس يرقر عدائدازى كرتے - اصعب البعاري، كتاب الاذان، ماب الصع الاول العديث ١٧٢١ - ١٠ ص ٢٥٦) يعنى برايك صفِّ اول مين محرّ ابونا حيا بتا اور جگہ کی تنگی کے سبب قرنہ برداری (مین نام کی برجی فالنے) پر فیصلہ ہوتا۔ سب سے پہلے امام پر رحمت البي (غدوز خد) نازل بوتى ب پر صب اول يس جواس كے كاذى (يعن اس کی سیدھ میں) کھڑا ہو ، اس محاذ کی کے داکمیں جانب بھر باکمیں ای طرح ووسری صف میں بہلے عاذی کا امام پر پھروا ہے بھر با کمیں پر بول ہی آخر صفوف تک ۔ (دوالمعدار

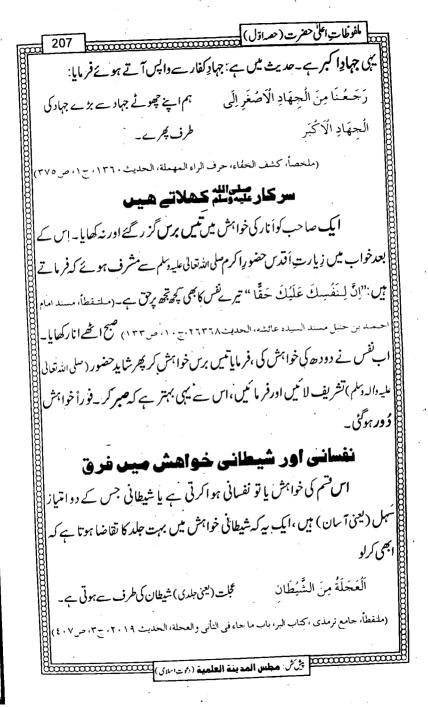
Marfat.com

عنى الدر المحتار، كتاب الصلاة، ماب الإمامة، مطلب في كواهة قيام الإمام، ج٢٠ ص ٢٧٢)



اس نفرانی نے چاہا کہ امتحان کرے ،ادھر کے نصاریٰ زُمَّار باندھتے ہیں ، اس نے زنارینچے چھپایا اور اوپر مسلمانی لباس پہنا ،عمامہ باندھا اور مسلمان بن کر





للفوظات اعلى حفزت (حصاؤل) اورنفس کوایی **جلدی نہیں** ہوتی ۔ دوسری پیرکنٹس این خواہش پر جمار ہتا ہے جب تک پوری نہ ہواُسے **بدلتا نہیں ۔ اُ**سے واقعی اُسی شے کی خواہش ہے ۔ اگر شیطانی ہے تو ا یک چیز کی خواہش ہوئی ،وہ نہ لی، دوسری چیز کی ہوگئی ، وہ نہ لی تیسری کی ہوگئی اس واسطے که اُس کا مقصد **گمراہ** کرنا ہے خواہ کسی طور پر ہو۔ مجھے شرم آتی ھے ایک صاحب ایک بزرگ (حضرت داؤد طائی علیہ جمة الله الباری) کے بیبال آئے دیکھا کہ بانی بینے کا گھڑادھوپ میں رکھا ہے۔انہوں نے کہا'''یانی دھوپ میں رکھا رہ گیا ،گرم ہوگیا ہوگا۔''فرمایا:'' صبح توسابیہ ہی تھا پھر دھوپ آ گئ ،مُیں نے الله (عَزُرَهَا) عِيْرِم كِي كَفْنِ كِي خَاطر قدم الْعَاوُلِ.' ثمنڈا یانی حصرت سرى تقطى رضي الله تعالى عنه كاروز وقعالة طاق (يعني ديوار مي بني بوني محراليا ون) میں یانی تھنڈا ہونے کے لئے آب خورہ (لینی بیائے) میں رکھ دیا تھا۔عصر کے مراتے میں تھے۔حوران بہتی (مین جنتی خوروں) نے کیے بعد دیگرے سامنے سے گزرما شروع کیا۔ جوسا سے آتی اس ہے دریافت فرماتے: ''ٹوکس کے لئے ہے؟''وواکیہ بندہ خدا کا نام لیتی۔ ایک آئی اُس سے بوچھا۔ اُس نے کہا: ''میں اُس کے لئے ہوں جوروزے میں یانی شعند اہونے کے لئے ندر کھے' فرمایا:''اگر تو بھ کہتی ہے قواس موزے کوگرادے ۔'' اُس نے گرادیا۔ اِس کی آوازے آ کھ کھل گی۔ دیکھا تو دہ آب

خوره او ٹاپڑاہے۔

(ملخصاً، روض الرياحين في حكايات الصالحين ، الحكاية العاشرة ، ص٥٦)

دُودھ کا پیالہ

دوفر شے آپس میں ملے ۔ُایک نے پوچھا:'' کہاں جاتے ہو؟'' دوسرے نے کہا:''فلال عابد کے ہاتھ میں دُودھ کا پیالہ ہے اوروہ پیا چاہتا ہے مجھے حکم ہے کہ جا کریَر ماروں اور گر ادوں اورتم کہاں جاتے ہو؟'' کہا:''ایک فاسق دیرے دریا میں

مچھی ڈالے بیٹھاہادرمجھلیاں نہیں بھنستیں مجھے حکم ہے جادک اور **بھانس** دوں۔''

(احياء علوم الدين، الحز الثالث بيان طريق الرياضة.....الخ، ٣٣، ص ١١٤ بتغيرًما)

بیماری بھی نعمت ھے

(ای تذکرے میں ارشاد فر ہایا) اگر چالیس (40) دن گز ر جا کیں کہ کوئی علّت (بیعنی بیاری یا تکلیف) یا قلّت (بیعن تنگی) یا ذلّت نہ ہوتو **خوف** کرے کہ کہیں چھوڑ نہ دیا س

دُعا قبول هونے میں تاخیر کا ایك سبب

صدیث میں ہے، جب کوئی مقبول بندہ ربّ اسٹر وَ حَسلُ کی طرف اپنی کسی حاجت کے لئے ہاتھ اٹھا تا ہے اور گڑ گڑا تا ہے، جبریل امین علیہ انسلاۃ والتسلیم کوارشاد موتا ہے: '' اے جبریل اس کی حاجت رہنے دے کہ مجھے اس کا گڑ گڑ انا اور میری طرف منداٹھا نا اچھا معلوم ہوتا ہے'' اور جب کوئی فاسق اپنی حاجت کے لئے ہاتھ اٹھا تا ہے ارشاد ہوتا ہے: '' اے جبریل اس کی حاجت جلدرَ وَ العِن یوری) کردے اٹھا تا ہے ارشاد ہوتا ہے: '' اے جبریل اس کی حاجت جلدرَ وَ العِن یوری) کردے

كه مجھے اپی طرف اس كائمند اٹھا نا **رچھانبيں معلوم ہوتا۔**''

لمعجم الاوسط ، من اسمه موسلي، الحديث ٨٤٤٢ - ٢٠ ص١٩٣)

سركار عينواله همارے حاجت روا هيں

اِس حدیث میں ایک بوافا کدہ میرجی ہے کہ جبریل بایہ استرۃ اسارۃ اسارۃ اسارۃ اسارۃ اسارۃ اسارۃ اسارہ حاجت روامیں ، پھر حضور القدس ملی امنہ تعالی علیہ رسم کو حاجت روا و مشکل کشا وواقع البلاء (مینی مصبتیں دور کرنے والا) مانے میں کس مسلمان کو تا کس ہوسکتا ہے! وہ تو جبریل کے بھی حاجت روا ہی میں امنہ تعالی علیہ وہلہ۔

امامت کبرای کا مُسْتَحِقٌ کون؟

🎞 🎞 🚾 مطس المدينة العلمية (١/ ټاسان)

سوائے اینے پیندیدہ رسولوں کے۔

رَّسُولِ (ب۲۹، الحنَّ:۲۷،۲۱)

ا مام قسطلا نی وغیرہ نے تصریح فر مائی کہ اس غیب سے مراد قیامت ہے جس کا او پرمت آ **یت عمر) و کرے – (ا**رشاد السادی شوح صحیح البحاری، کتاب التوحید، باب فول الله] تعالى غلِم الغيب الخرج ١٥ ص ٣٩٢) امام جلال الدين سيوطي رحمة الله تعالى عليه سے بسلے بعض علائے كرام نے بملاحظہ احادیث حساب لگایا کہ ہدا مت من **ہزار ابجری** ہے آ گے نہ ہز ھے گ_{ی -}امام ميوطى (عليرجة الشالتوى) في اس كا تكاريس رسال الكها "ألْكَشُف عَنُ تَحَاوُرَ هذِهِ الْأُمَّةِ الْأَلْفِ" الى مين ثابت كيا كه به أمت وواج بي ضروراً كم برهي كل - امام جلال الدین (سیوطی ملیہ رحمۃ اللہ القوی) کی وفات شریف <u>اوا جے</u> میں ہے ، اور ایخ حباب سے رہ خیال فرمایا کہ وہ اچ میں خاتمہ ہوگا۔ بسخت داللّٰہ نعالی اِسے بھی چیمیں برس گذر گئے اور ہنوز (یعنی ابھی تک) قیامت تو قیامت ، اُشراطِ کبریٰ (یعنی بری نٹانیوں) میں سے بچھے نہ آیا۔ **امام مہدی** کے بارے میں اُحادیث بکثرت اور متواتر ہں گر اِن میں کسی وقت کا تعین نہیں اور بعض علوم کے ذریعیہ سے مجھے ایسا خیال گذرتا ے کہ شاید سے ۱۸ ہے میں کوئی سلطنت اسلامی ہاتی ندر ہے اور • زواھے میں حضرت امام مبدى ظهور فرمائيں۔ **ھەڭك :** جبئىي مكەمىخلىمەھىزىتەمولا ناعبدالحق صاحب رمەة اللەتغانى <u>علىر</u>كى خدمت میں حاضر ہوا۔ قاضی رحمت اللہ و ہائی کو حاضر خدمت یا یا اور بیدہ ہوفت تھا کہ مولا نااس کوسند حدیث دے چکے تھے۔ مجھے بینہایت ہی گراں گز را۔مَیں نے مولا ناعبدالحق صاحب ہے عرض کیا کہ میں بھی آپ کی غلامی میں حاضر ہوا ہوں ،اور سی بھی آپ ہے

لمفوظات اعلى حفرت (حصاؤل) کماتمیں یہ کافی نہیں کہ تمہارا رت الَنْ يَكُفِيكُمُ أَنْ يُمِدُّكُمُ رَبُّكُمُ (عَزُوْخِلُ) تَمِن بْرارفر شِيّة ا تاركرتمباري بشَلثَةِ اللَّهِ مِّنَ الْسَلَبُكَةِ مددفر مائے۔ مُنْوَ لِيُونَ 0 (بِ٤، ال عمراد: ١٢٤) اس برحق سُبُحَانَهُ تَعَالَى فِي فِرشتون كااضافه فرماياكه: كيول نهيس الرتم صبر كروا درتقويت برربو بَـلِّي لإِنْ تَسصُبِرُوا وَتَتَّقُوا اور کافر ابھی کے ابھی تم برآ کمی تو تمبارا وَيَسَاتُو كُمُ مِّنُ فَوُرِهِمُ هَٰذَا ربّ (غَـرُوْخِلُ) یا نیج بزارنشان والے يُـمُدِدُكُمُ رَبُّكُمُ بِخَمُسَةِ الْفِ مِّنَ الْمَلَيْكَةِ مُسَوِّمِيْنَ0 فرشتوں ہے تمہاری مددفر مائے گا۔ (ب؛ ال عمران: ١٢٥) ع من :حضور نے جنر ہے معلوم فر مایا؟ ار شاد : بان! (اور بحر كمى قدرزبان دبا كرفر مايا) آم كھائے پیڑ ند گنے ، (بحرخود عی ارشاد فرمایا) که میں نے بید دونوں وقت (<u>۱۸۳۷ھ</u> میں سلطنت اسلامی کاختم ہونا ادر <mark>عن ا</mark>ھ میں [امام مبدی کاظہور فرمانا)سید المرکا شفین (بعنی اصحاب کشف کے سردار)حضرت شخ محی الدین این عرلی رضی الله تعالی مذیر کلام سے اخذ کتے ہیں ،اللَّ ما اکبر! کیساز بردست واضح کشف تھا کہ سلطنت ترکی کا ہانی اول عثمان یا شاحضرت کے مدتوں بعد پیدا ہوا گر حصرت شیخ اکبر میں اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے زمانے پہلے عثان یا شاہے لے کر قریب از ہانہ آخرتک جینے بادشاہ اسلامی اوران کے وزراء ہوں گےرموز (یعنی اشاروں کنایوں) ا میں سب کامختصر ذکر فر مایا ۔ ان کے زمانے کے عظیم وقائع (یعنی غیر معمولی واقعات) کی 🎚

لمفوظات ِاعلیٰ حضرت (حصراة ل) طرف بھی اشارے فر مادیئے کسی بادشاہ سے اپنی ا*س تحریر میں ب*ے زمی خطاب فر ماتے ہیں ادر کسی پر حالتِ غضب کا اظہار ہوتا ہے ، اس میں حتمِ سلطنتِ اسلامی کی نبیت إ لَفظ"ايفظ" فرمايا اورصاف تَصريح فرما فَى كه لَا أَفُولُ ايَفَظ الْهِ حُرِيَة بَلُ ايَفَظ نے اس' ایقظ جفری'' کا جوحساب کیا تو <u>۱۸۳۷ھ</u> آتے ہیں اور انہیں کے دوسر <u>_</u> کلام ے • واصطر وامام مهدی کے اخذ کئے ہیں۔ وہ فرماتے ہیں: رباعی إِذَا دَارَ السزَّمَسالُ عَلَى حُرُوفٍ بِيسُم السَّلِمِ فَسَالُمَهُ دِي قَسَامِها وَيَنحُرُجُ فِي الْحَطِيْمِ عَقِيْبَ صَوم آلَا فَسافُراهُ مِسْ عِنْدِي سَلَامِنا (یعنی: جب ز ماند بهم اللہ کے حروف پر گھو ہے گا تو امام مہدی ظہور فر مائیں گے اور خطیم کعیہ میر شام کے وقت تشریف لا کیں گے ،سنوانہیں میراسلام کہنا۔ت) خودایی قبرشریف کی نسبت بھی فرمادیا کهاتی مدت تک میری قبرلوگوں کی نظروں سے غائب رہے گی مگر " إِذَا دَخُلَ السِّيُن فِي الْشِّين ظَهَرَ قَبُرُ مُحُى اِلدِّيُن" جب شین میسین داخل ہوگا تو محی الدین کی قبر ظاہر ہوگی۔ سلطان سلیم جب شام میں داخل ہوئے تو ان کو بشارت دی کہ فلاں مقام پر ہماری قبر ہے۔سلطان نے وہاں ایک قبہ بنوادیا جوزیارت گاہِ عام ہے۔ (بھرفر مایا) چند جداول ۲۹_۲۸ خانوں کی آپ نے تحریر فرمادی ہیں جن میں ایک ایک خانہ ککھا اور باقی خالی چھوڑ دیے اب اس کا حماب لگاتے رہے کہ اس سے کیا مطلب ہے؟

هولی د یوالی کی مثمانی کمانا کیسا؟

🌉 🧰 : كافرجوبولي ^له ديوال^ئ ميں مثمانی وغير ه مانٹتے ہیں مسلمانوں کولينا حائزا

ا ہے پانہیں؟

ار شاد : أس روز ندلے بال! اگر دوم بے روز دی تو لے لے نہ سر بحو کر کدان ظَبَراْ ء کے تیوبار کی مٹھائی ہے بلکہ'' مال مُو ذی نصیب غازی'' سمجھے۔

نماز میں بلغم آجانے توکیا کرے؟

عرض : اگرنماز مين بلغم آجائة كياكرن؟

ار شاد: دامن ما آنجل میں کیرمَل دے۔

کافر سائل پر ترس کھانا

عبر هن : حضور ہرسائل پررحم کھانا جا ہئے خواہ وہ کا فر ہی کیوں نہ ہو کہ قر آ ^{ن عظی}م میں ترجمة كنز الايمان: اورمنكاكونه وَامَّا السَّآئِلَ فَلا تَنْهَوُ ٥

> جيز کو۔ (ب ۲۰ الضخي: ۱۰)

ار شاد: پھرسائل بھی تو ہو! بہٹرُ الرَّائِق وغیرہ میں تصریح ہے کہ کا فرحر لی (یعن وہ کا فرا جو نہ تو حکوست اسلامیہ کوئیکس دیتا ہواور نہ ہی کسی معاہرے کے تحت وہاں رہ رہا ہو) پر پچھے تَصَدُّ ق (لعنى صدقه) كرنا اصلاً (لعنى برگز) جائزنبيل-

(البحر الرائق شرح كنز الدفائق، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٢، ص٤٢٤)

ا : ہند و در کا ایک فدہی تہوار جو موسم بہار میں منایا جاتا ہے۔ اس میں وہ ایک ووسرے پر رنگ چېزك كرخوشيال مناتے بين عليده عن مندؤول كاليك فد بهي تبوار حس بيس وه (اپني دولت ك دیوی) تکشی کی بوجا کرتے اور خوب روشی کرتے اور بھو اکھیلتے ہیں۔... عِلْمِيدهِ .

دشمنان رسول سے نفرت کیجئے

برائے کا نئے ہے ایک ذرای آپ کو تکلیف ہوتی ہے۔ اگر کہیں اے ز مین پریزاد کیمیں کہاس کا ایک یاؤں پاپر برکار ہو گیا ہے اور اس میں طاقتِ پرواز نہیں ہےتو اس بررحم کیا جاتا ہے کہ پیر ہے مُسل دیتے ہیں تو خداور سول عز جالہ وسلی اللہ توہ کی علیہ وسلم کی شان میں گستا خیاں کریں اور اُن ہے وشنی وعداوت رکھیں وہ **قابل رحم** ہں؟عوام کی بیرحالت ہے کہ ذرا کسی کونٹا گھتاج دیکھا سمجھے کہ قابل رحم ہے،خواہ خداد رسول (غـــزْدَ ئــنا وصلى الله تعالى عليه داله وملم) كا وثمن ہى كيوں نه ہو۔حضرت سيد كى عبدالعزيز د بَاغ قدّ سِروْفر ماتے ہیں کہ ذرای إعانت (یعنی مدد) کا فرکی کرناحتی کہ اگروہ راستہ یو چھے اور کوئی مسلمان بتادے آئی بات الله تعالیٰ ہے اس کاعِلاقۂ مقبولیت قطع دلیعی الله تارك وتعالى بندے كى متبوليت كاتعلق فتم) كرويتى ب- (الابريز، الباب الاول، ج١ _{صر ۶۰۲)}باں ذمی^ت مستأ من ^{تع} کافروں کے لئے شرع میں رعایت کے **خاص اُ حکام** مِن، بداس لئے كه إسلام اين ذ مدكا يورا ب اورا ين عهد كاسجا-دریا کے یار اترنے والا

ملفوطات اعلیٰ حضرت (حصاق ل) المستسمسم ىردار) **جنيد بغدادى ر**ممة اللەتغالى علىيەنے" ي**الللە" فر**مايا ،اور دريام**ي**س أتركيح ، يورا واقعه **ار شاد** : غالبًا حدیقه ندیه یس بے که ایک مرتبه حضرت سیدی جنید بغدادی رحمه الله تعالی ملیه د جلہ پرتشریف لائے اور''ی**ا لیل**ٰہ'' کہتے ہوئے اس پرز مین کی مثل چلنے لگے_بعد کو ایک شخص آیا ،اسے بھی یار جانے کی ضرورت تھی ۔کوئی کشتی اس وقت موجود نہھی۔ جب اس نے حضرت کوجاتے دیکھا،عرض کی '' میں کس طرح آؤں؟ ''فرمایا : '**یا جُنید یا جُنید'**' کہتا چلا آ۔اس نے یہی کہا اور دریا پر زمین کی طرح <u>جلنے</u> لگا۔ جب چ در ياميں پہنچا شيطان تعين نے دل ميں وسوسه ڈالا كه حضرت خودتو ''يا الله'' كہير اور مجھے "یا جُنید' کہلواتے ہیں۔ میں بھی''یاالــــلّـــه'' کیوں نہ کہوں۔اُس نے' ي**الـله**'' كهااورساتهه بىغوطه كهايا- يكارا:''حضرت ميں چلا''فر مايا'' وہى كهه'' ياجُنيد ياجُند''جب كهادريات يار موارع ض كى " حضرت يدكيابات هي آپ الله كهيس تو یار ہوں اور میں کہوں تو غوطہ کھاؤں؟'' فرمایا ''ارے نادان ابھی تُو جنید تک تو پہنچا أبيس الله تكرّ ما كَي مَوْس م، الله أكبَر! له والحديقة الندية، مع كشف النور عن بور ، ج۲، ص ۲۰ وفيه ذكرسيدي محمد الحنفي الشاذلي) ل : فتيه لمت حفرت مفتى جلال الدين امجدى عليه رحمة الغي لكيمة بين الركو كي كيم كه "ميا جنيد، يا جنيد " كجاونه ۋ و بےاور''الله الله'' کہتو ڈوب جائے یہ کیے ہوسکتا ہے؟ تواپیا کہنے والے کوصوبہ مہارا شر پونہ جیج د جائے کہاُ می کے قریب حضرت قمرعلی درویش رحمۃ اندنعالی ملیے کا مزار مبارک ہے۔ وہاں ایک بڑا گول پچھ ہے جس کا وزن نوے (90) کلو بتایا جاتا ہے وہ'' قمر علی درویش'' کہنے پراٹگلیوں کے معمولی سہارا دیے ے أو پرافعتا ہے اور'' اللہ'' كہنے ہے نہيں افعتالہ ميں بذات خود إس كا تجربه كرچكا ہوں۔اس ميں كيارانہا إلله الله المام الماسيد (فأول فقيد المدام ا) ... عِلْمِيه

سے بہر حال میں سمبروری دویا پر یواور دو بھی ہو دو بر حار رہ یا کا بہار ہے ۔ فررار استہ دے دیا۔ اس نے پار تھن کران ہزرگ کی خدمت میں تھیر پیش کی۔ انہوں نے نوشِ جان فرمائی (مین کمائی) اور فرمایا: '' ہمار اسلام اپ آ قامے کہد دیا۔'' خادم نے عرض کی کہ سمام تو جمبی کہوں گا جب دریا ہے پار اُتر جادی نے رمایا: '' دریا پر جا کہ

کہ۔'' میں اس کے پاس ہے آتا ہوں جس نے تمیں برس ہے آئ تک پھوٹیں کھایا۔'' فادِم شش و ن (بین البحن) میں تھا۔ یہ بجیب بات ہے ابھی تا ہر سے سے کھیر تاقال فرمائی اور فرماتے میں اتنی مدت ہے کھیس کھایا تحر بلیاظ اور فرماتے میں آتی مدت ہے کھیس کھایا تحر بلی

دریا پرآ کر جیما فرمایا تھا کہد دیا۔ دریانے مجر داستہ: ، دیا، جب اپنے آ قا کی خدمت میں پہنچا تو اس سے ندر ہا حمیا اور عرض کی " حضور یہ کیا معالمہ تھا؟" فرمایا

" ہاراکوئی فعل اپنفس کے لئے نہیں ہوتا۔"

ي ب مجلس الهديبية العلمية (11 ج 19)

میں غلاظت کھیلائی اور تمام بستر وغیرہ خراب کردیا اور ضبح ہوتے ہی وہاں سے چل اور سے معلق المدینة العلمیة (درجاسان)

دیا۔ جب حضور (سلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم)حجرے شریف میں مہمان کی خیریت معلوم کرنے کی غرض ہے تشریف لائے تو یہ کیفیت ملاحظہ فرمائی ۔ آپ نے خودنجاست کو صاف کیا ۔ صحابہ کرام (ملیم ار مون) کو اُس (کافر) کی اِس نا شاکستہ حرکت بریخت غصه آیا۔ اتفا قانمجلَت (بینی جلدی) میں وہ اپنی تلوار بھول گیااور تلوار بہت انچھی تھی جس کے لئے اُسے مجبوراً پھرکوٹنا پڑا۔ یہاں آ کردیکھا ،حضور (سلی اللہ تعالی علیہ البویلم) اینے وسب اقدس سے بستر وھور ہے ہیں۔امیر المؤمنین فاروق اعظم رض اللہ تعالیٰ عنہ نے سز ادیے کا إرادہ کیا ۔حضوراقد س ملی اللہ تعالیٰ علیہ دہلم نے منع فر مایا کہ یہ میرامہمان ہے اوراُس بے فرمایا ''تم این ملوار بھول گئے تھے جہاں رکھی تھی وہاں ہےاُ ٹھالو۔'' (مثنوی تریف، دفتر پنجم م ۳٫۳٫۳) وہ حضور (ملی اللہ تعانی علیہ دالہ وہلم) کے اِس خُلقِ عظیم کو دیکھ کر فوراً مشرف باسلام موگیا تو حضور ااس روایت سے فلم موتا ہے کہ کفار بر بھی نظر عنایت کرنا جاميخ؟ اد **شیاد** : اس کے قریب روایت''مثنوی شریف'' (یعنی مثنوی مولا ناروم طیرحۃ القیوم **)** من خرکور ہے۔ حضور اقدس ملی اللہ تعالی علیہ وسلم اُن ہی سے خکل فرماتے جو گر جو سط اللہ ا والے ہوتے جیسا کہ اس روایت سے ظاہر ہے اور کفار ومرقدین کے ساتھ بیشہ تی | فرماتے ۔ اُن کی آتھوں میں نیل کی سلائیاں پھر وائیں ، ہاتھ کا نے یاوُل کا نے -یانی ما نگا تو یانی تک نددیا۔ بیسلوک س کے ساتھ تھے؟ وہ جوز جوع لانے والے نہ تھے۔ مستنسبين محس المدينة العلمية (الرجاس)

مملا) کہہ گیا ہے۔'مئیں نے عرض کی کہ میرا قلب گواہی دیتا ہے کہ بیسب تَقِیُّہ (یعنٰ 🏿

وَسَلَّمَ " مِن تَهارے کہنے ہے کہتا ہوں ملی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہیں نے اسے دفع کیا۔ اخیر فقرہ میرتھا کہ ہمارا'' رخصتا نہ (یعنی زخصتی کا انعام)' دو۔ میں نے شہر کے دوایک وہا ہیوں کا پیتہ بتا دیا کہ اُن کے پاس جایہاں تیرے لئے پھے نہیں ۔ بالآ تحروہ خائب وخاسر (یعنی ناکام دنامُ اد) دفع ہوا۔ میں نے اسنے دل کوشاباش دی کہ تُو نے ہی ٹھیک کہا تھا،

بے شک اس شیطان کیلئے قیام **ناجا ک**زتھا۔

اعلی حضرت اور ایك رافضی

ا یک دفعه کمگڑھ سے ایک شخص اپنا بیگ دغیرہ لئے آیا۔ اُس کی صورت د کھ کرمیرے قلب نے کہا: ''بدراقضی ہے۔' دریافت کرنے پرمعلوم ہوا کہ واقعی رافضی ہے۔کہا'''مَیں اپنے مکان کولکھنؤ جاتا تھا،راہتے میںصرف آپ کی زیارت کے لئے اُتر پڑا ہوں ، کیا آپ اہلِ سُنت میں اُسے ہی ہیں جیسے ہمارے یہاں مجتهدین؟ میں نے اِلتفات نہ کیا (مینی اُس پرتوجہ نہ دی)۔غرض وہ رافضی اپنی طرف مجھے نخاطب کرتا تھااور میں دوسری طرف منھ پھیر لیتا تھا۔ آخراً ٹھو کر چلا گیا۔ اُس کے جانے کے بعد ایک صاحب ثاکی (لینی شکایت گزار) بھی ہوئے کہ وہ اتنی میافت <u>طے کر کے آیا اور آپ نے قطعی اِلتفات نہ فرمایا۔ میں نے یہی روایت (امیرالمؤمنین</u> فاروقِ اعظم رضی الله تعالیٰ عنه کی که جس وقت آپ کومعلوم ہوا کہ بید بدند ہب ہے نور اُ کھا نا سامنے ے اُٹھوالیا اورا سے نِکلوا دیا) بیان کی کہ ہمار ہے ائمہ نے ان لوگوں کے ساتھ ہمیں بیہ تہذیب بتائی ہے۔اب بھلاوہ کیا کہہ سکتے تھے؟ غاموش ہو گئے۔

220

دُشمنِ احمد په شدّت کیجئے

سلمانو! ذراا دهرخدا درسول (غَنْ جَا" مِلى الله تعالى عليه داله وملم) كي **طر**فه ہوکرا بمان کے دِل ہر ہاتھ رکھ کر دیکھو۔اگر کچھ لوگ تمہارے ماں باپ کورات دن بلا وحيمف فحش مُغلِّظ (ليني كندي كندي) گالبال ديناايناشيو وكرليس بلكه اينادين همراليس. کیاتم ان سے **بکشادہ پیشانی م**لوگے؟ حاشا! **برگزنہیں** ۔اگرتم میں نام کوغیرت باقی ے،اگرتم میں إنسانیت باقی ہےاگرتم ماں کو ماں سجھتے ہو،اگرتم اپنے باپ ہے ہیدا ہو تو انہیں دکھ کر تہارے دل مجر جا ئیں گے بہاری آنکھوں میں جُو ن اُڑے گا بتم ان ى طرف نگاه اٹھانا گوارانه کرو گے۔ لِلْه انصاف!صديق ا کبروفاروق اعظم (مِن الله تعالى عبما) زاكد يا تمهارے باب؟ الم المؤمنين عائشه صديقه (رضى الله تعالى عنها) زاكد تمہاری ماں؟ ہم صدیق و فاروق (رضی اللہ تعالی عبا) کے اونی غلام ہیں اور اَلْے مُدُ لِلَّه کہا تُم المومنین (مِنی اللہ تعالیٰ عنها) کے میلئے کہلاتے ہیں ، اُن کو گالیاں دینے والوں ۔ اگریہ برتا و ندبرتنی جوتم اپنی مال بلکھاہے آپ کو گالیاں دیے والوں سے برتے ہو تو ہم نہایت نمک حرام غلام اور حد بھر کے بُرے ناخلف (یعن ناال) میٹے ہیں۔ایمان کا تقاضایہ ہے،آ گےتم جانواور تمہارا کام۔ نیچری تہذیب کے مدعیوں کو م نے دیکھا ہے کہ ذراکو کی کلمہ اُن کی شان کے خلاف کہا اُن کا تھوک اُڑنے لگتا ہے تحصيل لال ہو جاتی ہیں،گر دن کی رگیں پھول جاتی ہیں،اس وقت وہ مجنون تہذیر بھری پھرتی ہے۔وجہ کیا ہے کہ **اللّٰہ** ورسول ومعظمانِ دین (غـزُوْ حَلْ وسلی اللّٰبِعَالَی علیہ دار دسم رمنی امثانی منبم) سے اپنی **و قعت** دل میں زیادہ ہے۔ ایسی نایا ک تہذیب اُنہیر بارک، فرزندان اسلام اس پرلعنت تیصیحتے ہیں ۔خودحضور اقد س ملی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

ملفوظات اعلى حضرت (حدادل) في مسجد نبوى (على ماجها العلوة والسلام) سے بد فد بهول كونام لے لے كر أ تھاديا۔ ا یک مرتبه فاروق اعظم رض الله تعالی عنه کونما زِ جمعه میں دیر ہوگئی ، رائے میں ویکھا کہ چندلوگ مجد ہے کو ٹے ہوئے آ رہے تھے۔ آپ اس ندامت کی وجہ سے کہ ابھی میں نے نمازنہیں پڑھی ہے، جھیپ گئے اور وہ اس ذلت کی وجہ سے جو محد شریف ے نکال دینے میں ہوئی تھی ،الگ چُھپ کرنکل گئے۔ (تفسير طبري سورة التوبة تحت الأية ٢٠١٠، ج٦، ص٧٥٤) رئ العزت تبارك وتعالی ارشا دفر ما تاہے: يْاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ ترجمه كزالايمان: الغيب ك فرس وَالْمُنفِقِينَ وَاغُلُظُ عَلَيْهِمُ ویے والے (نی) جہاد فرماؤ کا فروں اور (ب١٠١٠ التوبة: ٧٣) منافقول يراوران يرخى كرو اورفرما تاج عَزْوَ حَلْ ؟ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ طَ وَالَّذِيْنَ ترجمة كنزالايمان: محداللدكرسول بن، مَعَهُ اَشِدًاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ اوران کے ساتھ والے کا فروں پر یخت ہیں اور بَيِنْهُمُ (پ٢٦، الفتح:٢٩) ، آپس میں زم دل ۔ اورفرما تاہے جل وعلا: وَلْيَجِدُوا فِيُكُمْ غِلْظَةً ط ترجمه كزالايمان: اورجاس كروهم (ب١١ النوبة: ١٢٣) مين حتى ياكي، تو ثابت ہوا کہ کا فرول پر حضور سلی اللہ تعالیٰ علیہ بلہ تحق فرماتے تھے۔ 🏧 📆 📆 : مجلس المدينة العلمية (٨ تراسال)

مستستستست عثران مجلس المدينة العلمية (١٠ جا الان

ا**د شاد**: میرامسلک بیہ کہوہ پزید کی طرح ہے ^{بل} اگر کوئی کا فر کیمنع نہ کری **گ** اورخودکہیں گےنہیں _البتہ غلام احمد (قادیانی)،سیداحمد (علی گڑھی) خلیل احمد (انبیٹھوی) رشیداحمد (محنگوی)،اشرف علی (تقانوی) کے کفر میں جوشک کرے وہ خود کا فر مَنُ شَكَّ فِي كُفُرهِ وَعَذَابِهِ فَقَدُ (جوان کے کفروعذاب میں شک کر ہے وہ خور کا فرے۔ت) لے :اساعیل وہلوی ہےمتعلق ایک شبر کا ازالہ: یہاں وہابیے خت دھوکا و بیتے ہیں کہ جب تنقیع وتوہین شان رسالت کفرے تواساعیل نے بھی کی ہے۔ وجہ کیا ہے کہا شرفعلی وغیر والیسے کا فر ہور کهان کے تفریش شک کرنے والا بھی کا فر ہوا درا ساعیل ایبانہ ہو؟ گرمسلمان ہوشیار ہوں یہ خُبُاً وکا سخت دھوکا ہے۔اصل یہ ہے کہا ساعیل اور حال کے دہا ہیہ کے اقوال میں فرق ہے۔ہم اہلِ سنت متکلمین کا ندہب ہیہ ہے کہ جب تک کی قول میں تاویل کی منجائش ہوگی تکفیر ہے زبان رو ک جائے گی کے ممکن ہے اس نے اس قول ہے یمی معنی مراد کئے ہوں۔ شرح فقیہ اکبر میں فر مایا ہار جب قول ایسا ہو کہ اس میں اصلا تا دیل کی مخوائش نہ ہوتو تحکیر کی جائے گی تو اس قول کے قائل کو جس میں ناویل کی مخبائش ہے اگر کوئی کا فر کہے تو ہم مع نہیں کرتے کہ وہ معنی فلاہر کے اعتبارے نمیکہ کہدر ہا ہے اور اس کی خود تحفیز نہیں کرتے کہ احتیاط اس میں ہے اور اس دوسری صورت کے قائل کی عفير ضرور ب كداس من جب اعملا تاويل نبين تو عفير به زبان روكنه كا حاصل خود كفر اور طغيان ب ان کے اس بیودہ اعتراض اور ذلیل دھو کے کا جواب آنا کانی ہے کہ ایک قول بر فتہا تکفی فرماتے ہیںاور شکلمین نہیں کرتے۔اب کہیں کیا کہتے ہیں، کیافتہا کے زد کیہ مشکلمین اس کی تلف يرك جس ك تخفيرنقهان ك بمعاد الله فقها ك زويك كافرنغهري مع، ياستكمين فقها كوكافر کہیں مےاس لئے کہانہوں نےمتعلمین کے ذویک جوکافرندہاس کی تیفیرک ۔ وَلاَ حَسُولُ وَلاَ أُودة إلا سالله العلى العظيم ال حماء كاتوال برزاز أبوال (يعني بياب عبر اقوال ا یسے بیں جن میں نام کو بھی تاویل کی مخبائش نہیں لبنداان کے لئے میکم ہے کہ جوان کے مقر میں شک وه خود كا فر- جوتفصيل جا ب وه رساله "المُسُوتُ الاحسر" مطالعد كرب ١٢ مولف

المدينة العلمية (ارجاس)) منجلس المدينة العلمية

كار دُيراسم جلالت لكھا گيا

اس پر **ار شاد**فر بایا:'' یا در کھو کہ میں مجھی تین چیزیں کارڈیز نہیں لکھتا: (1)اسم جلالت النُّه اور(2) محمداورا حمداور (3) نه كوئي آيت كريمه، مثلاً اگررسول الله ملي الله عليه ملم كلها بي تو يول كلهة الهول: " حضورا قدس ملياض العلوة والسام يا اسم جلالت كي جكه مولى

تعالى.''

عبو صن : میلاد**شریف میں جماڑ (ب**عن بخشاد مشعل)، فانوس ^{کا} ،فروش^ی وغیر و ہے

زیب درینت إسراف ہے انہیں؟

ارشاد: على فرمات من:

ال الكِ تَم كاشْع دان جس پر پنجرے كى شكل كابار يك كيٹر ايا كاغذ چر ها ہوتا ہے جو گھاتے يا ہوا كے زور پر گروژ نا ہے۔.. عِلْمِيه ي يفرش كا تح ہے۔ يعني جونے وغيروے زمن كي سطح بمواركرا ... عليمه

یعنی اسراف میں کوئی محلائی نہیں اور بھلائی کے کاموں میں خرچ کرنے میں کوئی اسراف نہیں۔ت إسْرَافَ فِي الْحَيْر جس شے تے تعظیم ذکر شریف مقصود ہو، ہر گر ممنوع نہیں ہو سکتی۔ الكاهزار شيعس **ا مام غز الی (علیدحمة الله الوابی) نے إحیا ءُ العلوم شریف میں سید ابوعلی رود باری** جمة الله تعالى عله بے نقل كيا ك**دا بك بندة صالح نے مجل**س ذكر ثر يف تر تب دى اوراس ميں ايك بزار شمعيں روثن كيں _ ايك شخص ظاہر بين بينچے اور يه كيفيت و كيوكروا پس حانے گئے۔ مانی مجلس نے ہاتھ پکڑااوراندر لے جا کرفر مایا کہ جوشم عمیں نے غیر خدا کے لئے روشن کی ہووہ جھاد بیچے کوششیں کی جاتی تھیں اورکوئی شع معندی نہوتی۔ وملحصاً، احداء عدم الدين الحر الثاني كتاب اداب الأكل فصل يحمع ادابا تَميَّةُ الْوُضو كَى فَضيلت عد ف : تحية الوضوكي كيا نضليت بي؟ **ار شاد** : ایک بارحضو **را قدس مل**ی الله تعالی علیه دملم نے حضرت بلال رضی الله تعالی عنہ سے ارشاد فرمایاً "اے بال! کیا سب ہے کہ میں جنت میں تشریف لے گیا تو تم کوآ مے آ مح حاتے دیکھا۔''عرض کی مارسول الله (غرو خل مِل الله تعالیٰ علیه وہلم) میں جب وصَّ کرتا ہوں **دور کعت نفل بڑھ لیتا ہوں فر مایا نی**ری س**بب** ہے! (سلید مصلفہ صحیح

رُکوع کے بعد پائنچے اوپر چڑھانے کا حکم

ع**ے ن** : حضور بعض لوگوں کی عادت ہوتی ہے کدرکوع کے بعد پاسٹیے او پر کو چڑھا

ليتے ہیں، پركيما ہے؟

ار شاد : مروه ب- رود المحتار على الدر المحتار، كتاب الصلاة، مطلب في الكراهة

السحريسية النع ٢٠٠ ص ٢٠١) اورا كردونول باته سے بوتو بعض علما كنزو يك مُفْرِيد

صلوة (يعنى نمازتو زنے والا) --

ایك خواب اور اُس کی تعبیر

خسواب: ایک مجدمعمولی و سعت کی ہاور نماز تیارہ، ایک شخص جس کومیں

جانتا ہوں عقائدِ وہابیہ کا پیرو، أذ ان کہتا ہے کیکن نامِ اقدس ملی اللہ علیہ وہلم تک پھرمکیر

تکبیر کہتا ہے وہ بھی نامِ نامی تک ۔ میں نے کہا یہ عجیب وہبڑوں نے دستور نکالا ہے۔

میں اندر مسجد کے اس وقت پہنچا جبکہ اِمام اپنی جگہ پر پہنچے گیا تھا اور چاہتا تھا کہ تکبیرِ

تحریمہ کے بمیں نے باواز بلند السلام عَلَيْكُم كها۔ جس سے امام نے چوتك كر

میری طرف رُخ کیااور پیچیے ہٹ آیا اور مُیں فوراً اُس کی جگہ کھڑا ہو کر اِما مت کرنے لگاجب سلام چھیرا فورا آئکھ کھل گئی و یکھا تو فجر کا وقت تھا۔

تعبير: إن شآء الله ومابيك دعوت بندموك اورابل سُنت كاتر في موك _

رکوع کا طریقہ

عوض : نوافل ميں ركوع كسطرح كرنا جائي، اگربير كريا هربائي؟

يُرُّكُن: مجلس المدينة العلمية (راحترالاي)

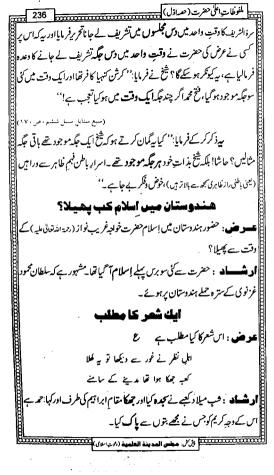
لمفوظات اعلیٰ حضرت (حصداذل) **ار شاد** : اتنا جھے ک*ے بر گھننے کے محاف* می (بعنی ست میں) ^{یا} آجائے ادرا کر کھڑ ہے ہوک یڑ ھے تو بیڈ لیاں مقوّس (بعنی کمان کی طرح خم کھائے ہوئے) نہ ہوں اور کف دست (یعنی ہتیلماں) مکننوں برقائم کر کے ہاتھوں کی اُٹھلیاں ایک دوسرے سے علیحدہ رہیں۔ ایك نَمازي كي اصلاح ا یک صاحب کو میں نے دیکھا کہ حالت رکوع میں پشت بالکل سدھی اور مُنھ اُٹھائے تھے جب وہ نماز سے فارغ ہوئے تو یو تھا گیا:'' بیآپ نے کیبا رکوع| کہا؟ تھم تو یہ ہے کہ گردن نہ اتن جھکا ؤجیے بھیٹر اور نہ اتن اٹھاؤ جیسے اونٹ ۔''وہا صاحب کئے لگے کہ منداس وجدے اٹھالیا تھا کہ سمتِ قبلہ سے نہ پھر جائے۔ میں نے کہاتو آ پسجیدہ بھی ٹھوڑی پر کرتے ہوں گے۔اُن کی تبجیر میں بات آ گئی اورآ ئندہ کے لئے اصلاح ہوگئی۔ عورت كاتنها حج كوجانا كيسا؟ عسو 🎃 : حضورایک نی نی ننها حج کرنا جا ہتی ہیں اور سفر خرج قلیل (یعنی تعوز ۱) اورخود علیل (یعنی بار) اس صورت میں کیا تھم ہے؟ اد شاد : عورت كويغير مرح كوجانا جائز نبيل _ (رد السعندار على ب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع ، ج ٣٠ ص ٥٣١) ل: صدرالشريعه بدرالطريقة مفتى مجدا بحد على إعظى بله دمة الفداني لكينته من '' بينه كرنمازيز جنه مين ركوم كا اُدِنَّىٰ ذَرْجِهِ بدے کہ پیشانی تھٹوں کی سمت میں آ جائے ۔''مزید لکھتے ہیں:'' بیال محاذات ہے مراد سمن ا الم مر ہونا ے کوا تناجمکنا کر بدشانی کی زمین سے بلندی تھنے کے بالا کی حصر کے برابر ہوجائے۔ (فآوى انجديه، ج اجم 29)... عِلْمِعه

Marfat.com

🚥 👊 🎢 مطس المدينة العلمية (التابيان)

ے متعلق ہو کرتصرف فرمائے گی تو ازروئے زُوح وحقیقت وہی ایک ذات ہر جگہ موجود ہے بیبھی فہم ظاہر میں ورنہ' 'سبع ساہل شریف'' میں حضرت سیدی فتح محمد مذہر

يُرُكُّ: مطس المدينة العلمية (واحراساي)



عوف : غوث كمراقب حالات منكشف (يعي ظاہر) موتے ہيں؟

ار شاد : نہیں! بلکه اُنہیں ہر حال یوں ہی مثل آئینہ **پیش نظر** ہے۔ (اس کے بعدار شاد

فرمایا) ہرغوث کے دووز ریموتے ہیں غوث کالقب''عبداللہ''ہوتا ہےاور وزیر دستِ

راست (یعنی دائیں طرف کا دزیر)''عبدالرَّ ب''اور وزیر دستِ چَپ (یعنی بائیں طرف کا

دزیے)''عبدالملک''۔ال سلطنت میں وزیر دستِ چَپ ،وزیر راست سے اعلیٰ ہوتا ہے

بخلاف سلطنتِ دنیااں لئے کہ میسلطنتِ قلب ہےاور دل جانبِ چَپ غِوثِ اکبر

وغوث بمرغوث حضور سيد عالم ملى الله تعالى عليه وسلم بين _ صديقِ اكبر (رضي الله تعالى عنه)

حضور (صلی الله تعالی علیه داله دملم) کے وزیر دستِ چَپ تھے اور فاروقِ اعظم (رض الله تعالیءنه) وزیر دست راست ۔ پھر اُمت میں سب سے پہلے درجہ عوشیت یر امیر المؤمنین

حضرت ابو بكرصديق رضى الله تعالى عندممتاز ہوئے اور وزارت امير المؤمنين فاروق اعظم

وعثانِ غنی رمنی الله تعالی عنها کو عطا ہوئی ،اس کے بعد امیر المؤمنین فاروقِ اعظم رمنی الله تعالی عنہ

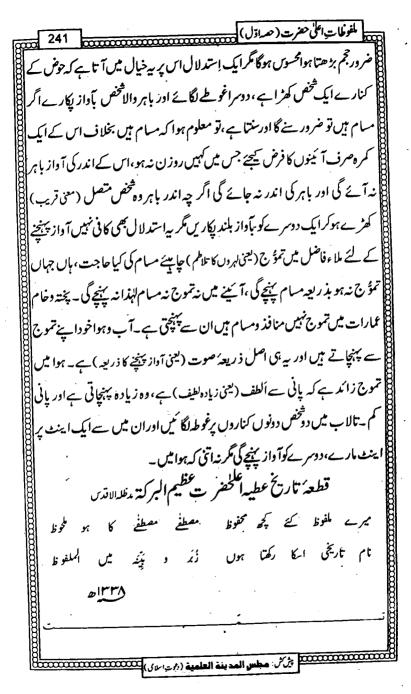
كوغوشيت مرحمت بهوكى اورعثمان غنى رمنى الله تعالى عنه ومولى على تُرْمَ الله تعالى وجهه الكريم وزير

موت مجرامير المؤمنين حضرت عثان غنى رض الله تعالى عنه كوغوشيت عنايت مهو كى اورمولى

🕬 🕉 تُن العلم المدينة العلم

ملفوظات اعلى حضرت (حصه اوّل) على سُرَّ مَ الله تعالى وجهه الكريم وامام حسن رض الله تعالى عنه وزير يهوئ بيمرمولى على (سَرَّ مُ الله تعالى ال _{و جیرا}نکریم) کواورا مامین محتر مین رمنی امند تعالی عنها وزیر بهویئے ، پھر حضرت ا مام^{حس}ن رمنی امنه تعالی [<mark>8</mark> ا اعمہ ہے درجہ بدرجہ امام حسن عسکری (رمنی اللہ تعالیٰ عنہ) تک بیرسب حضرات مستقل غوث ہوئے ۔امامحسن عسکری (رمنی اللہ تعالی عنہ) کے لبعد حضور غوث ِ اعظم منی اللہ تعالی عنہ تک جتنے حضرات ہوئے سبان کے نائب ہوئے۔ان کے بعدسیّذ ناغوثِ اعظم (مِنی الله تعالی عنه استقل غوث ،حضور تنهاغوهیت کبری کے درجہ پر فائز ہوئے ۔حضور''غوث اعظم' ، بھی ہیں اور''سیّد الافراد' ، بھی ،حضور کے بعد جتنے ہوئے اور جتنے اب ہول گے حصرت امام مبیدی (مِنی الله تعالی عنه) تک سب نائب حضورغو شِهِ اعظم مِنی الله تعالی عنہ مول کے پھرامام مبدی رض الله تعالى عد كوغوشيت كبرى عطاموگ -آف ادکون هیں؟ ع من : حضور ' أفرادُ ' كون اصحاب ہيں؟ **ار شاد** : أجلّه اوليائے كرام (رحم الله تعالى) ہے ہوتے ہيں۔ولايت كے دَرَجات ہیں،غوشیت کے بعد فردیت۔ حُضور غوث پاك كى شان ایک صاحب أحله (مین طیل القدر) أولیائے كرام (مهم الله تعالی) كى نے یو چھا: حضرت جھشر ملیاله ام زندہ ہیں؟ فرمایا ابھی ابھی مجھ سے ملاقات ہوئی تھی ۔ فرماتے تھے''میں نے جنگل میں نیلے برایک ؤورد یکھا جب میں قریب گیا تو معلوم عن أن مطس العمينة العلمية (مدياس)

ا الفوظات اعلى حضرت (حصراة ل) پکژ کر ہلای<u>ا</u> اور جگا کر کہا:'' اُٹھومشغول بخدا ہو۔'' کہا:'' آپ اپنے کام میں ^{می} ر ہیں مجھے میری حالت پر رہنے دیجئے''میں نے کہا:''میں مشہور کئے دیتا ہوں، یہولی الله ہے۔'' کہا: ''میں مشہور کردول گا کہ بیر جھرت خضر (علیہ السلام) ہیں۔''میں نے کہ لئے دعا کرو۔'' کہا:'' دعاتو آپ ہی کاحق ہے۔''میں نے کہا:''حتہیں وُعا كرنى موكى ـ "كها: " وَ فَهِ َ اللَّهُ حَظَّكَ مِنْهُ " اللَّه تعالى ا بي ذات مِن آپ كانفيبه (يعني حصہ) زائد کرےاور کہا: میں اگر غائب ہو جاؤں تو ملامت نہ فر مایئے گا اور فوراُ نظر ہے غائب ہوگئے حالاً نکہ کی ولی کی طاقت نہ تھی کہ میری نگاہ سے غائب ہوسکے۔ وہار ہے آ گے بڑھا ایک اور اِی طرح کا نورد یکھا کہ نگاہ کو خِیر ہ کرتا (یعنی آئکھ کو چندھیا تا) ے۔ قریب گیا تو دیکھا ٹیلے پرایک عورت کمبل اوڑ ھے سور ہی ہے۔ وہ اس کے کمبل کا نور ہے ۔ میں نے پاؤں ہلا کر ہوشیار کرنا حیاہا ۔غیب سے ندا آئی''اے خصر (ملیہ اللام)احتياط سيحيِّ ـ''أس بي بي نے آنکھ کھولی اور کہا: حضرت نہ رُکے يہاں تک کہ روکے گئے ۔ میں نے کہا:'' اٹھ مشغول بخدا ہو۔'' کہا: حضرت اپنے کا م میں مشغول ر ہیں، مجھےا بی حالت پر رہنے دیں۔ میں نے کہا:''تو میں مشہور کئے دیتا ہوں بیرولی اللہ ہے۔'' کہا:''میں مشہور کر دول گی کہ بید حضرت خضر (علیه اللام) ہیں۔''میں نے کہا لئے دعا کرو۔'' کہا '' دُعا تو آپ کاحق ہے۔''میں نے کہا '' مہمیں دُعا كرنى بهوگى ـ "كها: "وَفَرَ اللَّهُ حَظَّكَ مِنُهُ اللَّهُ تَعَالَى ا فِي ذات مِن آپ كانھيبـ زائد ـِ'' پھرکہا:'' اگر میں غائب ہوجاؤں تو ملام ت نەفر مائے گا۔''میں نے دیکھایہ

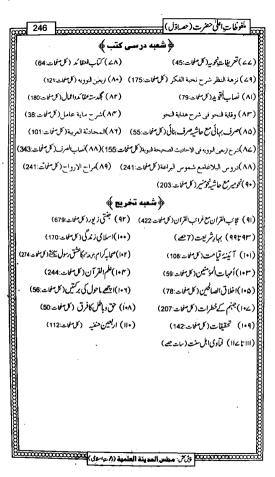


| la | 242 | • | . اعلیٰ حضرت (حصیاة ل) | المقاد |
|------------|---|--|--|---------|
| 18 | | ••••• | <u> </u> | - ka |
| 8 | | خذومراجع | مأ | |
| 8 | | | | |
| ğ | نسا والقران بلي كيشنزلا بور الترسيط كشير | کلام باری تعاقی ا | | (1) |
| Iži | مْياْ مالقران يبلى كيشنزلا بور اي | المجتز تناما احدرضا فالاستونى الهماه | كَنْزُالْإِيْمَانَ فِي ترحَمْ الْقُرَانَ | (r) |
| - 181 | وارالمنكر بيروت | المام ميدالرخمن جلال الدين السيوطى منوفى اا الاه | فلأ فنظر | (r) |
| 18 | واراهيا والتراث العربي بيروت | علارا يوافعنس شهاب الدين آلوي متوفى معاده | رُوْحُ النَّمَاتِي | (r) |
| 181 | دادالكتب المعنمية بيردت | ایبعفری بن چرمطری مشونی ۱۳۰۰ ۵ | تقبيير الطبرى | (a) |
| Iği | دارالكتب المعنميه بيروت | اساميل بن عمرا بن كثير منوفى ٢٤٤٠ | تفسير القران العظيم | (1) |
| Ø | خک | علاءالدين كل بن مجمد خازن منو في 470 ه | نفسير حازن | (2) |
| Iği | دارانکتب العنمیه بیروت ت | ابوقر حسين بن مسعود المينوك منوعي ١٦١ | تفسير بغوى | (A) |
| 181 | مكتب اعلام الاسلامي | جادات محودز مخشر كاستوقى ٥٩٨ مه | نغسير الكشاف | (1) |
| 181 | وارالكتب أعلمية بيروت | الماسجر بن اساعيل بخارى منوفّى ٢٥ ص | صجيخ ليعارى | (1-) |
| 8 | دامراین حزم بیروت دی | المامسلم بن كاح بن سلم المنشير ك منوفى الم ا | صحيح مسلم | (II) |
| B | وارالفكر بيروت | دام ايميني فرين مين الرفدي متوفى ١٨٩٥ | سُنْنَ الترمدُي | (ır) |
| B | واراحيا والتراث العرفي | ا مام اودا دُوسلمان بن احدث مسوفَّى ١٤٥٥ هـ | سننئ أبني ذاؤد | (IF) |
| Ø | . وادالكتبالعلمية بيروت | المما يعبدالعن احربن شعيب التسائل سنوقى ٣٠٠٠ | - بـ سنن النسائي | (11) |
| 8 | وارالفكر بيروت | المام الإعبدالله تحرين يزيدالقرو في سوخي ٢٥٣٠ | شُنْنُ ابن ماجة | (a) 8 |
| 181 | واراحيا والتراث العربي | المام سليمان بن احمط فرانى منوفى ٣٦٠ ٥ | أنتخم لكير | (n) 8 |
| 181 | وارالكتب المعلمية بيروت | امام سليمان بن احرطبرا في سنوفى ٢٠٠٠ | المتعدم الأوسط | (4) |
| B | واراتكتب العلمية جروت | ا مام احمد بن حسین بسیل سنوفی ۱۹۵۸ 🕳 | فَعِثْ الْإِنْسَانَ | (w) [8 |
| ğ | وارالكتب العضيه بيروت | ابوبكرعبدالرزاق بن حمامه نوخی اا ۳ سد | ولتعيثث للإمام غنيه الرواق | (10) |
| 181 | و وارالکتب اعلمیه بیروت | الام يحدين عبدالرحمن الخطيب لمتخر يزى سنومَى ٥٠٠٠ه | مشكاة المصابح | (r.) B |
| 181 | وارالكتب العلميه بيروت | وامراساميل بن محرا مجلو في الشافق مسوفي ١١٦٢ه | كشف الحفاء | (1) |
| 181 | دارالکتب العلمیه بیروت - | علامه علا والدين فل المثلي المعندي منوعي ٩٤٥ مد | كَنْرُ الْعُشَال | (m) 8 |
| B | وادافكر بيرات | مافقاشيره بدين شهردارد يلى منوغى ١٠٥٠ | فزدؤش الأخبار | (rr) 8 |
| X | وارالمعرف بيردت | الام بالكب بمن المبرمتوفَّى 9 عاد | موطا امام مالك | (1) |
| ΙğΙ | وارافتكر بيروت | المام احربن حبل سنوغى ٢٣٩٠ | قال بالانجام الجمداد حا | (1) (8) |
| 181 | وارالعرف يردت | ا م ابوعبدالله عجر بن عبدالله فينتا بوري سنونى ٥٠ مه | المستدرك عثى الصحيحين | (11) |
| ğ | دارالفكر <u>بحر</u> وت | ما فقاتورالدين على بن الويرهيعي منوفى ٨٠٧ه | مخمع الزوائد | (1/2) |
| ğ | باب المدين كرايى | ا مام عبدالله بن حيدالرحن ستوفَّى ٢٥٥ هـ | تعدم برزے ئے دائری | (m) 8 |
| 8 | وارالكت لعلم بيروت | محربن سعد بأثمي المعمر فيعنونني ١٦٨ه | مسيد مدوجي طبقات الكيران | (17) 8 |
| | ه مدينة الاوليا مالمان ثريف ال | ا مام بدرالدين الي ومحود بن احراضي متوفى ٨٥٥ | غندة ففارى | (r-) |
| В | وارالفكر بيروت | شهاب الدين احرتسالا فاستونى ٩٢٢ ه | ارشاد السارى | (r) 8 |
| I | وارالكتب المعلميه بيروت | وإم امر بن على صقلا في سنونى ٤٥٢ ه | فتح لباری | (rr) 8 |
| | وارانكت أعلميه جردت | ملار لما كلي قارق بسنونسي ١٩٠٠ه | مرفاة لمعاليح | (PP) 8 |
| <u>lon</u> | *************************************** | مطسرً المدينة العلمية (١/١٥/١٥) | | 101 |
| | | | | |

| ~~~ | 243 | | (| ت اعلیٰ حضرت (حصاوّل | ملفوطا |
|-------|-----------------|-------------------------------|--|---|-------------------|
| 8 | 4 | مممم کوئد | خُطَارِدهام ۲۹۵/۵۹۲ | فتاوى هنديه | (rr) |
| 8 | ردت | وارالمعرفدي | علا والدين محربن على صلقى متوفّى ٨٨٠ اه | در مختار | (rs) 8 |
| ğ | | وادالمعرفدي | سيدمحمرا مين ابن عابدين شامي منونني ١٢٥٢ ه | رد المحتار | (r1) (8 |
| ğl - | | 28 | زين الدين بن نجيم منوفِّي • ٩٤ ه | بحرالراثق | (rz) 🛭 |
| 8 | | پشاور | سيدمحرا ين ابن عابدين شامي منوفقي ١٢٥٢ ه | العقود الدرية | (m) 8 |
| ğ | لا بور | مركز الأوليا و | شخ ابراہیم کمیلی انھی متو فی ۷۵۲ ھ | الحلبي الكبير | (r4) 8 |
| ğ | | مركز الاولياء | امام ابراہیم اکلمی انھی متوفّی ۹۵۲ھ ما | غنبةالمتملى | ` (∾)[8 |
| 8 | كالاور | رضافادُ تِدُ ^{يِث} ُ | أعمحتر ستامام احراضامنونى وسهوا | فتاوى رضويه | (m) 8 |
| ğ | | پشاور | علامه عمدالغني نابلسي متوفّى ١١٣٣ه | الحديقة الندية | (m) 8 |
| ğ | لميه بيروت | دارالكتب الع | مانغامر بن على بن حجرالعنظل في منوفّى AArه | ٱلاَصابَةُ فِي تَمْبِيْزِ الصَّحَابَة | (rr) 8 |
| 8 | | | حافظ ابوبكراحمد بن على الخطيب البغد ادى متوغى ٦٣٣ | تاریخ بفداد | (mm) (R |
| 8 | | - | مام ابواحمد بن عبوالله بن عدى جرجا في متوفّى ٥٦٥ و | الكامِلُ فِي ضُعَفَاءِ الرِّخَالِ | (m) (8 |
| ğ | • - | دارالکتب المعا - | محر <i>بن محر</i> متوفّی ۱۳۰ ه | _ | (m) |
| ğ | | بابالمدينة | امام عبدالرحن جلال الدين السيوطي منوفني ٩١١ هـ | ثاريخ الخلفاء | (%) |
| 8 | ,- . | . دارالکتب العا | الم احربن على الشعرا ني منوفّى ١٤٧٣ ه. | اليواقيت والحواهر | (m) |
| 8 | _ | بابالمدينة | معدالدين التعتاز الي منوفى ٤٩١ | شرح عقائد نسفيه | (m) |
| XI | , | دارالکتب المعا سر | شهاب الدين احمر تسطلا في منوفي ٩٢٣ هـ | مواهب المدينة | (00) (00) |
| ğ | | دارالکتب المعا سر | الماع بدار حن جلال الدين السيوطي متوفى اا ٩ ص | حصائص الكبرى | (61) |
| 8 | | دارالکتبالمعا - | عبدالكريم بن حوازن التشير كاستوفى 1710ء | رسالة الفشيرية | (ar) |
| 8 | | مركز الاوليا وا | شاه عبدالحق محدث والوي استوفى ١٣٣٩ هـ | | (or) (or) |
| | | دارالكتب المعلم | شهاب الدين احمد بن محمد متوفّى ١٩٠١ هـ شو | نسيم الرياض | IC. |
| ğ | میہ بیروت | دارالكتب ألعل | ي زين الدين ابراهيم متونى ١٥٠٠ ه | الاشباء والنظائر | (00) |
| IЙ. | | | احدین مبادک متوفّی ۱۱۵۵ ه میر | | (ra) |
| lği - | | قادر به جامعه | سيدبگرام بيرعبدالواحد در | | (04) |
| 181 | | كمتبددضوبيلا | مُولًا ناظفرالدين منوفّى ١٣٨٢ هـ | | (۵۸) (۵۹) |
| | | مؤسسة الريا | الحافظ محمد بن عميد الرحمٰن المسخاوي متو فني ٩٠٧ هـ هجوز من من من من من | | (10) (10) |
| X | | اختثارات عخج | شخ فریدالدین عطارمتوفی ۲۰۲۰ ۱۲۲۰ هـ در در در شده در در در در در ۱۲۰۰ هـ | نَزْ كِرَةُ الْاَرْكِيَّاءِ مُحَدِّ اللهِ مِنْ | (11) |
| Iğl | | دارالکتب العلم سر | علامه عبدالله بن اسدمة و فنى ۲۷۵ ه. ۱۸ مر کورت میران میران | | (1r) |
| 181 | ركات دمنا تجرات | | شاەمبرالىقىمىرىڭ دېلوكىستونىيى ۵۲ • امە دادىمە يەسىمىدىدات ئ | _ | (1r) |
| 8 | 3 | وارصا وربيرور | المام <i>قد بن محرفز</i> الحاسنوني ه . ه مد | . چې انگلوم | ```' |
| Iğl | | | | | Ä |
| 181 | | | | | |
| 181 | | | | | [8 |
| | | | | | 8 |
| IXI | | | | | |
| 队 | ~~~~~ | | Y1 | مرين مط | ~~~~ ! |

محلس المُدينة العلمية كي طرف سے پیش كردہ قابل مطالعه ﴿ شَمِهِ كُتُبِ اعلَى حَصْرِت رَحِيةَ اللَّهِ عَلِيهِ ﴾ (1) راه ضداع وجل من خرج كرني ك فضال لازاد لف خيط و لوباء بدعوة المحيران ومُواساة المففراي (كل مخات 40) (٢) رعاء كفشاك (أخسرُ الوعاء لآذاب الدُّعاء مَعَهُ ذَيْلُ المُدُّعَا لأَحْسَنُ الوعَاي) (كل مُحَات 140) (٣) عيد من مل طلط الماكيا؟ (وشَاحُ الْحَدُدِ فِي تَحْلِيل مُعَانَفَةِ الْعِيْدِ) (كل مُحَات 55) (٤) كرنى أوث ك شركا وكامات (كفلُ الفينية الفاهم في أخكام في طلس المراهم) (كل صفات: 199) (٥) والدين، وجين اوراسا تذه كحقوق (المُحقُوق لِطَرْح الْعَقُوف) (كل منات 125) (٢) اعلى حضرت بروال جواب (إطّلقارُ الْحَقّ الْحَلِي) (كل منحات:100) (4) ولايت كا آسان راسته (ضور شخ) (ألَّياقُو نَهُ الْوَاسِطَةُ) (كُلُّ مُعَاتِ: 60) (٨) شريب وطريقت (مقال المُترَفاه باعزاز خرع وعُلَمَاه) (كل مخات: 57) (٩) معاثى ترتى كاراز (ماشية شرع قدير فلاح ونوات واصلاح X كل مخات 41) (١٠) ثبوت بلال كي طريق (طُرُق إِنْبَاتِ هلاَل) (كل مُفات: 63) (۱۱) ايمان كي بيجان (مانيرتبيدايان) (كل مغات: 74) عربي كتب ازامام اللسنت مجدودين وطمت مولا بااحدرضا خان عليدهمة الحن (١٢) كِفُلُ الْفَقِيْدِ الْفَاحِيمُ (كُلِ مَحَاتَ .74). (١٣) تُنْهِيَدُ ٱلْإِيْمَانِ . (كُل مَحَاتَ .77) (15) اَلاَ جَازَاتُ الْمَنِينَة (كُل مَعَات:62). (10) إِنَامَةُ الْفِيَامَةِ (كُل مَعَات:60) (17) ٱلْفَضُلُ الْمَوْهَبِي (كُلِ مَحَات:46) (١٧) أَجُلَى الْإِعْلَامِ (كُلِ مَحَات:70) (١٨) الدَّرُسَزَنَةُ الْسَفَسَرِيَّةِ (كُلِصِحَات:93) (١٩، ٢٠،٢١,٢١) جَسَدُّ الْسَمُنَسَادِ عَلَمْ رَدُالْمُحْتَار (المحلد الاول والثاني والثالث والرابع) (كل مفات:650،713،672،570) ﴿ شعبه اصلاحی کتب ﴾ (۳۴) انفرادی کوشش (کل مغانه: 200) (۲۳) خوف فدا مربل (کل مناه: 160) (۲۷) فكرمدينه (كل مخات: 164) (ra) تنگ دی کے اساب (کل مغان: 33) (۲۸) نماز میں اقر کے سائل (کل مفات 39) (١٤) امتحان كى تيارى كيي كرس؟ (كل مغات 32) (٣٠) كامياب استاذكون؟ (كل مغات:43) (۲۹) بنت كي دوجاييال (كل مخات: 152) (٣٢) كامياب طالب علم كون؟ (كل مغات: تقريا 63) (m) نصاب مدنى قافله (كل منوات: 196) (۳۴۷) مفتی دعوت اسلامی (کل مفات: 96) (mm) فيضان احياء العلوم (كل مؤات: 325)

لمفوظات اعلى حضرت (حصداذل) (۳۲)عطاری جن کاغسل متیت (کل مفات: 24) (۲۵) کی وی اور مُو وی (کل مِفایت: 30) (۲۸) توسکی روایات و حکامات (کل مفات: 124) (٣٤) طلاق کے آسان مسائل (کل مفات:30) (٣٩) قبركمل محي (كل مغاية: 48) (٤٠) أناسر فدكال المرابق (كل نواسة 275) (٤١) قبرستان کی ج مل (کل مغانه: 24) (٤٢)غوث ماك بندر كے حالات (كل مغانہ 106) (٤٣) تعارف اميرالسنت (كل مخات: 100) (٤٤) كربنمائے صول برائے مرنی قافلہ (كل سفات 255) (٤٦) وعد اسلاي كيدني بيارس (كل مفات 220) (٤٥) مدني كامول كيقسيم (كل مغات:68) (٤٨) آمات قرانی کے انوار (کل مغات:62) (٤٤) تربيت اولا د (كل مغات: 187) (٤٩) احادیث ممارکہ کے انوار (کل مغات:66) (۵۰) فيضان چېل احاديث (کل مغات:120) (۵۱) يرخماني (كل مخات 57) (۵۲) غافل درزی (کل مغات: 36) (۵۴) گونگامبلغ (كل مغات:55) (۵۳) بدنصیب دولها (کل منوات: 32) (۵۵) كرىچىن مىلمان بوكميا (كل مغات: 32) (۵۲) دوستاسلای کی جیل خاندهات عرب خدمات (کر منوب ۲۹۰ (۵۷) فيضان امير المسنّت (كل مغات: 101) (۵۸)40فرامن مصطفی پیند (کل مغات:87) (09) قوم رئات ادرام رابلسنت دف و كفئه فنية (كل مفات : 262) (٧٠) شرح تجره قادر د (كل مفات : 215) (٦٢) بيرونجي كي توبه (كل مفات: 32) (۱۱) ساس بهوهم ملح كاراز (كل مغات:32) ﴿ شعبه تراجم كتب ﴾ (١٣) جنت يم كواف والعاممال (المتنخر الرابع في تؤاب المتل المديع) (كل فات ٢٥٣) (٧٣) جبنم مس لے جانے والے اعمال جلداول (الزواحرعن اقتراف الكباتر) (كل مفات:853) (٢٥) عدلي آ كامل الفرة الدام كروش فيطر (الداري خد شف صل الله عنه وشفر الناجر والماجر X كل مؤات 112) (٧٧) تكيول كى جزاكي اوركنا بول كى مزاكي (فرة ألفيون ومُفرّع الفلب السَخرُون) (كل مفات 138) (٧٤) ما يروش كرك كوسط كا ... (ننهيدُ المَرْنِ فِي الْعِصَالِ الْمُوْجِدَةِ لِطِلْ الْمَرْنِي) (كل ما عند 8 2) (١٨) صن اطلاق رنك وم الأخلال (كل العات 74) (٢٩) من كولفيفت و أينا الولد) كل معات 64) (20) الدعوة الى الفكر (كل مخات: 148) (ا2) آنوؤلكا وريا (بَعْرُ اللَّمُوع) (كل مات 300) (2۲) راعِلُم (تَعَلِيْمُ الْمُتَعَلِّمَ طَرِيقَ التَّعَلُّمُ) (كل الحات: 102) (47) فيزة المبكابات (مرج) (كل الخات: 412) (44) مُعامِراً واوليا ورينها مُ العَارِفِينَ (كل معاد: 36) (40) دنیاے برغبتی اور امیدول کی کی (ارتفائه وَفَسْرُ الآمَل) (کل ملات 85) (٢٦) احياء العلوم كا فلاصه (لباب الاحياء) (كل مات 416)



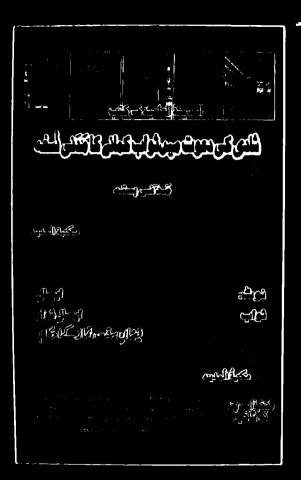
| α | ∞ 2 | 47 | | 000000000000000000000000000000000000000 | XXXXXX | ملفوطات اعلیٰ حضرت (حصاوّل) | _ |
|------------|----------------|--------|------------------|---|--------|---|----|
| 2000 | ضمنى فهرست | | | | | | |
| 8 | منخنبر | | وان | | صخنبر | عنوان | 18 |
| ğ | ·71 | | | گائے کی قربانی | | عقائد | I |
| 8 | 85 | | ىناكىسا؟ | جوتا بہن کرنماز پڑھ | 57 | ب ہے پہلے کس چز کو پیدا کیا گیا؟ | I |
| ğ | 86. | | ر پڑھنا کیسا؟ | ٹرین میں بیٹھ کرنماز | 69 | کیابرمکن چز بیدامو چی ہے؟ | I |
| 8 | 86 | | نح كاطريقه | ٹرین میں نماز پڑھے | 69 | جن ديري كالمسلمان مونا | |
| ğ | 88 | | _ | نمازول كاإعاده | 90 | كيا ني كريم ملياسوه والسلم كوعلم غيب تها؟ | |
| 8 | 88 | _ | | نماز میں مصلی نیڑھا | 112 | كالله عروسل اوراس كوبيب ي كالم برابرع؟ | I |
| g | 89 | كالحكم | مورت کی نماز | باريك كيژوں ميں | 135 | وحدث الؤبُو د کے معنی | |
| 8 | 97 | | • | ظهركاوفت كب تك | 137 | د يدار الني عزد حد كس طرح بوكا؟ | |
| ğ | 97 | اہے؟ | تحب وتت كونس | تربيول مين ظهر كامس | 121 | كياكى كوبرانبين كهناجا بنع ؟ (ايك علمي مُداكره) | K |
| 8 | 98 | احكم | | دومتل ہے پہلے نماز | 180 | عذاب روح پر ہوتا ہے یا جسم پر؟ | |
| 8 | 99 | | ۲ | اختلإفى مسائل كالحكم | | مبتِ رسول ﷺ باعثِ نجات ہے | |
| 8 | 100 | | | جعه شل ظهر ہے | 230 | الله ورسول كى محبت كيي حاصل كى جائع؟ | IK |
| 8 | 100 | | | زوال کے وقت جمع | 152 | ومابيه كى علامتين | IR |
| ğ | 103 | كيبا؟ | | کھانے پینے کے کے | 156 | تعظيم رسول نافظ | ıĸ |
| 8 | 144 | _ | | ستت قبليه كاقضابهو | 190 | گتاخ رسول کا انجام | K |
| ğ | 146 | | | نماز میں قران کالفذ | 218 | دشمنان رسول سے نفرت سیجئے | K |
| ğ | 147 | | | نماز میں بلندآ واز ہے | 170 | بدند بب كى نماز جنازه پڑھنے والے كاتھم | k |
| ğ | 147 | | | ايكه متجد كاسامان دوسر | 228 | اساعیل دہلومی کو کیسا تمجھنا جا ہے؟ | Į |
| ğ | 148 | | | متجد كا چنده كھا جانے | 161 | رْمُولوں اور ملا ئكە كواپسال تُو اب كرنا كيسا؟ | K |
| 3 | 148 | | | ا پی زندگی میں ہی ق | 172 | حجوثے مرعی نبوت ہے معجز ہ طلب کرنا کیہا؟ | Ŗ |
| 3 | 148 | | | فظے سے پہلے بسہ | 172 | ندہب جھوڑنے کی شرط پرمباحثہ کرنا کیما؟ | E |
| 3 | 149 | | . * | ملاے کے ساتھ نم | 176 | غیرمسلم کومسلمان کرنے کا طریقه | È |
| 3 | 114 | | | مدقے كاجانورذنك | 203 | رب تعالی کے لئے مؤنث کا میند ہو لنے کا تھم | E |
| 3 | 157 | کیسا؟ | | قربانی کی کھال مدا | 230 | کیا ہر کا فرملعون ہے؟ | Ø |
| 3 | 157 | | | حيله ُشرعى كاطريقة | 231 | الله "ميال" كهاكيرا؟ | 8 |
| 3 | 158 | ھے؟ | | دورانِ سفر قرا نِ بِا | 211 | تیامت کب آئے گی؟ | 8 |
| 3 | 158 | | • | عصر کا مکروه ونت ک | 106 | کفرکی دو قسمیں | 8 |
| 3 | 159 | | | نماز میں قراءت کا | | عبادات | g |
| ₹ | 160 | | | تضانمازي اداكر | 233 | زكوع كالمريقه | 8 |
| { L | 166 | القلا | السلام بربج فرحم | كياا نبياء يبم إمنوة و | 69 | ر کوع وجود میں تھبرنے کی مقدار | ఠ |
| 삸 | | | | | | | |

| ~ | ⊸ 2 | 48 | | 000000 | ملغوظات واعلى حضرت (حصياة ل) | <u></u> |
|----|------------|---------------------|--|--------|--|-----------|
| 8 | مؤنبر | | عنوان | مؤنبر | عنوان | |
| 8 | 119 | | ولیمدسنت ب | 169 | قصاص مم كل مونے والے كى تماز جناز و | B |
| 8 | 119 | | ثلاج ہے پہلے ولیرکر اکیا؟ | 170 | بدغد مب كى نماز جناز ويزهن والإيكاهم | |
| ğ | 120 | | رضا فی مسجی ے نکاح حرام ہے | 170 | منبرج موز كر خطبه برحميا خلاف سنت ب | ı, |
| 8 | 120 | | دخا مت کا ایک مسئل | 170 | نمازی کے سامنے ہے گزرنے کا طریقہ | 18 |
| ğ | 73 | ڊج. | ع بجونے کے سامنے جماع کیوں ممنوع | 175 | نماز کے بعد مصافی کرنا کیسا؟ | |
| 8 | 114 | | كإنانا الى وفير ومفقة كالوشت كماسحة | 177 | ، یا کے گئے نماز دروزِ و کا حکم | |
| ğ | 140 | | ملح كروان كاسعاو ضدليمانا جائز | 181 | ملو نے برمردے کی بٹریاں کیس او | i |
| 8 | 174 | | ملاقات سدوابس يرمصافحه كاعكم | 175 | ، س روضه انورکی طرف مندکرنے کا عظم | 18 |
| ğ | 174 | | معانقة كرنے كاطريقه | 190 | م مرقر باقبی | |
| 8 | 221 | | كياكفار يزى كرنى مايد؟ | 190 | ' پر مسنون ہے <u>ا</u> مستحب '' | I8 |
| ğ | | | تاريخ | 204 | `` قل مِن نماز پر من كاثراب | |
| ß | 150 | | خلفائ داشدين كذبازي بدنهب موج | 232 | ۹۲) وضوک نضیات | '8 |
| 8 | 64 | دل کيا؟ | ميدناصديق اكبرعصت كمعرعى اسلامة | 209 | عافبول ہونے میں اخبر کا ایک سب | 궠 |
| 8 | 64 | اذبب | تول املام ہے پہنے سیدا صدیق اکبرے کا | 216 | ِ ماز عن عَمِ آ جائے تو کیا کرے؟ | ιğ |
| 8 | 164 | | اہرام معرض نے بنائے؟ | 228 | كياسترو يكف بوضوجا تار بتابي | |
| 8 | 211 | | ظافت راشدہ کے کہتے ہیں؟ | 233 | ﴾ آ کے بعد پانچے اور جرهانے کاظم | |
| ğ | 74 | | تاریخ کی ابتداه دانتها کے طریقے | 233 | أستكالمريني | 8 |
| 8 | 143 | 1 | سلطنت بخارا كالذكره | 1 | عورت كا تنهاجي كومبانا كيها؟ | |
| ă | 167 | ?1 ₉ r.= | كياهم بدرسالت مس كواي سنعذ نا كافيور | | تجدے کی چارفسیس ن | IKD |
| 8 | 166 | | فعرش نوح مذالهام کاعمر | 1 | نازی سے پہلے ۱۱م پر دمت از ل موتی ہے | IDXI |
| ğ | 194 | 17. | قران پاک کو 30 پاروں میں کس نے تھے | | بماملات | IIXI |
| 18 | 194 | 1 | أحزاب واعشار كا آغاز كب بوا؟ مستدير | | زی ہے مجمانے کے فوائد | 102 |
| B | 210 | 1 | ماسب کر کا کاستی کون؟ | | اك عن 2 منية والمدورة عندها المستام كالم | ו אוו |
| B | 236 | 1 | مندوستان میں اسلام کب پھیلا؟ • | | فرص دبالين مراد من مراد م | IRAI |
| E | | | بياتِ اعلى حضرت | | عرم دمغرین نکاح کرنا کیسا؟ کریدر و | IINI |
| ľ | 224 | 1 4 | مل حصرت اورا یک نجدی کی ملاقات | | ريد کا کا ح | |
| Ì | 225 | 1 | لل حضرت اورا يك رافض | | وران عدّ ت نکاح کرنا کیما؟ | |
| ı | 13 | 1 | لى حضرت كا يوم ولا دت بفت ب | 115 | دران عذت نکاح پڑھانے والے کا تھم سکر عبر مالے میں منہ | |
| Ĭ | 15 | 1 | لى معرت كالبلافة ي | 116 | کیے میں رہنے والی فورت کا بان فقہ وران عدت نکاح کا تکم | |
| | 15 | ی | ں ان معنرت نے نوی نو کی کہاں ہے ع | 1 11/ | وران عدت اوان واح ماح کی وکالت کیتے وقت کواوقائم کرنا | |
| ľ | 19 | | ن معنزت کوزیارت سرکاری» | . 1 | ولها كاسرا | |
| 1 | 8 | | occorrond. | | 7 × × × × × × × × × × × × × × × × × × × | 쁆 |

| _ | <u></u> | 49 | ************************* | ****** | ملفوظات اعلى حفرت (حداوّل) | | |
|---|---------|--------------------|--|--------|---|--|--|
| 8 | مؤنبر | | عنوان | مؤنبر | عنوان | | |
| ğ | 208 | | مُندُايا تي | | حكايات | | |
| 8 | 209 | | دُوده کا پیال ہ | 1 | مىلمان برى كى حكايت | | |
| 8 | 218 | | دریاکے باراترنے والا | 70 | مرید ہونااس ہے سیکھو | | |
| ğ | 223 | | سامنے ہے کھانا اُنھوادیا | 82 | يل ك كوشت من كندهك كي | | |
| 8 | 223 | | : بانی داعظ کا برده حیاک هو کمیا | | و آگیں ہے۔ | | |
| ğ | 224 | ات ا | علیٰ حضرت اورا یک نحبری کی ملا قا | | ز تا كى اجازت ما تكنے والاقخص | | |
| 8 | 22 5 | ! 4 | على حضريت اورايك رافضى | 1 | ا ستاسودا | | |
| ğ | 232 | دا | یک ہزار ق سمیں | | و ورئز رگ کون تھے؟ | | |
| 8 | 234 | <u>~</u> | یک نمازی کی اصلاح | 1 | بخارے فکرانے می نوافل ادا کرنے دائے بزرگ | | |
| ğ | 23ª | , | ضورغوث بإك كى شان | 155 | نازى كاقل | | |
| ğ | | Υ, | بيتفرق مسائل | 162 | سونے کی بارش | | |
| ğ | 8 30 | \ { { { { { | عظیم وتو بین کا دار و مدار نمر ف پر | 162 | ا غربت وافلاس کی شکایت کرنے دالے پر انفرادی کوشش بیع | | |
| 8 | 3 3 | | إطبنى علم كاادني درجه | 1 | لنگرےادراندھے کی حکایت | | |
| ğ | | 1 | فیرِعالِم کووعظ کہنا حرام ہے | | فدمت علم ہے محردم ہو گئے | | |
| ğ | 61 | | مالم كون؟ | i | شاگردی عاجزی | | |
| 8 | 61 | | لیاعلم صرف کتابی برجے سے حاصل ہوتا | | اللِّ بيت كاارب | | |
| ğ | ا فارا | ر ہے ج | بَابَدے کے لئے کتنی مُذت در کا | | اُستاذ کے قدم وُ حلانے والا شاگر د | | |
| 8 | i∂83 | | ی خدمت جمی مجاہدہ ہے | | علم کی عزت | | |
| 3 | 63 | j . | نياوي فكرون كاقلب جارى براثر | | علمائے کرام کا احرام | | |
| ğ | 64 | | مفرکو نے دن کریا جاہے؟ | | عيما ئىيكا بيا | | |
| 8 | 141 | 1 | يثوت کوا پناخل قراردينا کيما؟ | | ا مانے والوں برلعت سرمین | | |
| ğ | 142 | 1 | سم کا کفارہ | . I | کاکی کے معنی | | |
| 8 | 172 | | تحريرى بات چيت کے فوائد | 1 | جلی موئی رونی اور کیڑے والاجیو ہارا | | |
| ğ | 67 | | مونی اور طوا کف کے ہاں کھا تا کھا تا | | خوفز ده بادشاه | | |
| 8 | 70 | | مرے وصال کے بعد کی اور سے بیعت ہوتا | | ماحب مزارک تاکید ک | | |
| ğ | 74 | اجا | کیا گاسے کا گوشت محت کے لئے نقصال دو | | ا نیامفن ا نیام | | |
| 8 | 81 | | لاعون كاسب ير | | ا زائد کفن داپس دے دیا ر | | |
| 8 | 84 | | بحول کے نام کیے ہونے جاہئیں | | ا بُرایِدِی | | |
| 8 | 111 | ر ا | مرِ کا رسل اندن ل عدد الدر عم کا نام اقد م | | نعرانی طبیب مسلمان ہوگیا میرو سر | | |
| 8 | 101 | | پالی اللہ تعالی کی معت ہے م | | ا مؤمن کی فراست میر هر میر | | |
| 8 | 133 | | تہت کی جگہ ہے بچئے | 208 | مجھے شرم آل ہے | | |
| 8 | { | | | | | | |
| ٠ | | | | | | | |

| _ | مانوفات اعلى حفرت (حساؤل) | | | | | | | |
|----|-----------------------------------|--|-------|---|--|--|--|--|
| 8 | م مغیبر | عنوان | مخنبر | 🛚 عنوان | | | | |
| 8 | 133 | احکام اضطرار اوراحکام اختیار می فرق ب | 142 | مم كاكفاره ك واجب بوگا؟ | | | | |
| ğ | 235 | لوك؛ الله كاايك وتت عن متحدد مكر موجود ووا | 144 | اہام کی تھلید ضروری ہے | | | | |
| 8 | 207 | جلدبازی شیطان کی طرف سے ہے | 145 | ا بائلِ کا کتب کے دوالے طلب کرنا کیرا؟ | | | | |
| 8 | 231 | میاں کے تمن معانی | 175 | 🛭 مناه کمیره اور مغیره می فرق | | | | |
| ğ | 193 | ایک ماتھ ہے دونی توڑ استکبرین کی عادت ہے | 181 | ہرایک کے ساتھ کٹنی روض ہوئی ہیں؟ | | | | |
| 8 | | دعا ووظائف | 182 | ا تؤی نولیمی کیے لیکتیمیں؟ | | | | |
| ä | 76 | معيبت ذووكود كيركر يزحى جاف والى ذعاك يركش | 192 | المجدمين كيزب بيناكيا؟ | | | | |
| Ιğ | 154 | زيارت مركار ييخ كاوفليفه | 207 | الفساني اورشيطاني خوابش من فرق | | | | |
| ğ | 177 | وسوسوب كاعلاج | 216 | ا ہولی دیوالی کی منھائی کھانا کیبا؟ | | | | |
| 8 | 163 | پریشانی دُورکرنے کاوظیفہ | 230 | يوسكارة برام جلالت"الله" لكمناكيا؟ | | | | |
| 8 | 163 | رزق میں برکت کا وظیفہ | 231 | الفظ شهر "مُس كماته بوليس؟ | | | | |
| 18 | | اشعار | 206 | ا بجابد ب كامطلب | | | | |
| ğ | 103 | ايك شعركي وضاحت ادراس كاشرى هم | 237 | الكاعوث برزمان عن موتاب؟ | | | | |
| 18 | 236 | ایک شعرکا مطلب | 237 | ا غوث كا كشف | | | | |
| 8 | l | يفت | | ا أفراد كون بين؟ | | | | |
| 18 | 166 | عُرُّ درادر عُرُّ در مِن فرق | 240 | ا یابی کے سام | | | | |
| Iğ | 235 | مِر كار مَنْ اللهُ كُولُداوهِ عرب كبنا كيما؟ | 199 | <u>ا م</u> الإ | | | | |
| Iğ | 235 | مجم ادر فرب کے معنی | 231 | ا جشن ولادت كالجراعال | | | | |
| 18 | 1 | فضائل وبركات | | ا پنی حالت کالحاظ رکھنا جاہے | | | | |
| 18 | 110 | مانظ كتينا الراد كي شفاعت كري كا؟ | 73 | المِمْ الْعِ كے كتة بن | | | | |
| lä | 179 | ايسال أواب كي بركتي | 74 | المجمحة كردمين | | | | |
| E | 178 | مورة مُلِك كَافعيات | 78 | تمن بهار يون كوكرونه جانو | | | | |
| Ę | 193 | فاتحكا ثواب | | طاعون زده شبيد ب | | | | |
| 18 | 179 | الك ي يزكودون ملاه ل كيميال وبركتك | | آگ ہے جل کرمرنے والاشہدے | | | | |
| ı | 201 | سزايفر جد برماضري كآداب | 89 | انسانی بیرانی تو بیشل بونے میں مضلحت | | | | |
| 1 | 84 | ام "فر"كِ فَعَالَ | 102 | عمده پانی کی تمن صفتیں | | | | |
| R | 207 | | | مراحت دلالت ربوتيت رمتي ہے | | | | |
| I | 102 | 1 - 14 - 14 | | اسال فواجل وال كاسترب جال كالروى ماضد ديد | | | | |
| ı | 154 | • | | مسلمان كاحال اجعائي رجمول كرناواجب | | | | |
| ı | 209 | T-00. | | خون ناحق کرنے والے پر عمین حق | | | | |
| ł | 210 | | • | وتت ماجت ، اظهار حققت تحديث نعت ب | | | | |
| ١ | ğ | نوابوں کی تعبیر ک | | مبت کا ظہار ثریت کے دائرے میں دوکری کیا جا مکا ہے حرص کی مدیر سے ک | | | | |
| ١ | 8 179 | | | | | | | |
| | 8 23: | | | وفات کے بعدروح کی قوت پڑھ جاتی ہے | | | | |
| | مركر مجس المدينة العلمية (مردراي) | | | | | | | |
| | | | | | | | | |

Marfat.com



Marfat.com